॥ ॐ ॥

॥ णमोसमणस्सभगवओमहावीरस्स ॥

भगवत सुधर्मस्वामीप्रणीता

श्रीमदुत्तराध्ययनसूत्रम्, श्रीदशवैकालिकसूत्रम्, नंदीसूत्रम,
सुखविपाकसूत्रम्, उववाइसूत्रम् (गाथा २२)
सूत्रकृतांगसूत्रे षष्ठाध्ययनम् एकादशाध्ययनम् च ॥
एतैर्मूलसूत्रैस्संयुक्ता—

॥ सिद्धान्त—स्वाध्यायमाला ॥

卐

—ः प्रकाशक ः—

जामनगरवास्तव्य पण्डित हीरालाल हंसराज

—ः मुद्रक ः—

श्रीजैनभास्करोदय मुद्रणालय-जामनगर.

सने १९३८ | मूल्यम् १-१-० | सम्वत् १९९५.

॥ स्वाध्यायमाला–विषयानुक्रम ॥

	पाना

नि वे द न

वाचकगण !

आ स्वाध्यायमाला नामना पुस्तकमा निरंतर स्वाध्याय थवा, भगवन् सुधर्मस्वामी गुंफित विषयानुक्रममा जणावेला ग्रंथोना कंठाग्र करवा लायक मूळ पाठो आपवामां आव्या छे अने छापेली प्रतोना आधारे छापेल छे. जुदी जुदी संस्थाओ तरफथी छपायेला ग्रंथोमा पाठांतर फेर आवता जेथी अमोए खास आगमोदय समितिवाळा ग्रंथोनो विशेष आधार राखी छापेल छे अने प्रेसदोष अथवा प्रुफ दोषथी रहेल भूलो माटे अंतमा शुद्धिपत्रक आपवामा आव्युं छे छतां काई विपरीत छपायु होय तो वाचकगण अवश्य करी सुधारीने वांचशे इति ॥

लि०,

प्रकाशक

॥ णमोऽत्थु ण तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

श्री जैन

॥ सिद्धान्त-स्वाध्यायमाला ॥

॥ सिरि-उत्तरज्झयण-सुत्तं ॥

विणयसुय पढम अज्झयण

सजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो। विणय पाउकरिस्सामि, आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
आणानिद्देसकरे, गुरूणमुववायकारए। इगियागारसपन्ने, से विणीए त्ति वुच्चई ॥ २ ॥
आणाऽनिद्देसकरे, गुरूणमणुववायकारए। पडिणीए असबुद्धे, अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥
जहा सुणी पूइकण्णी, निक्कसिज्जई सव्वसो। एवं दुस्सीलपडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जई ॥ ४ ॥
कणकुण्डग चइत्ताण, विट्ठ भुजइ सूयरे। एव सील चइत्ताण, दुस्सीले रमई मिए ॥ ५ ॥
सुणिया भाव साणस्स, सूयरस्स नरस्स य। विणए ठवेज्ज अप्पाणमिच्छन्तो हियमप्पणो ॥ ६ ॥
तम्हा विणयमेसिज्जा, सील पडिलभेज्जए। बुद्धपुत्त नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥
निसन्ते सियाऽमुहरी, बुद्धाण अन्तिए सया। अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए ॥ ८ ॥
अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खंतिं सेविज्ज पण्डिए। खुड्डेहिं सह ससग्गि, हास कीड च वज्जए ॥ ९ ॥
मा य चण्डालिय कासी, बहुय मा य आलवे। कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगगो ॥१०॥
आहच्च चण्डालिय कट्टु, न निण्हविज्ज कयाइ वि। कड कडे त्ति भासेज्जा, अकड नो कडे त्ति य ॥११॥
मा गलियस्सेव कस, वयणमिच्छे पुणो पुणो। कस व दट्ठुमाइण्णे, पावग परिवज्जए ॥१२॥

अणासवा थूलवया कुसीला, मिउपि चण्ड पकरिन्ति सीसा।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया, पसायए ते हु दुरासयपि ॥ ॥ १३ ॥

नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालिय वए। कोह असच्चं कुवेज्जा, धारेज्जा पियमप्पिय ॥ १४ ॥
अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो। अप्पा दन्तो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थ य ॥ १५ ॥
वर मे अप्पा दन्तो, सजमेण तवेण य। माह परेहि दम्मतो, बधणेहि वहेहि य ॥ १६ ॥
पडिणीय च बुद्धाण, वाया अदुव कम्मुणा। आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइ वि ॥ १७ ॥
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ। न जुजे ऊरुणा ऊरु, सयणे नो पडिस्सुणे ॥ १८ ॥
नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिण्ड च सजए। पाए पसारिए वावि, न चिट्ठ गुरुणन्तिए ॥ १९ ॥
आयरिएहि वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि। पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरु सया ॥ २० ॥

आलवन्ते लवन्ते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि। चइऊणमासण धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥ २१ ॥
आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कया। आगम्मुक्कुडुओ सन्तो, पुच्छिज्जा पञ्जलीउडो ॥ २२ ॥
एवं विणयजुत्तस्स, सुत्तं अत्थं च तदुभयं। पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुयं ॥ २३ ॥
मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणिं वए। भासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥ २४ ॥
न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं। अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्सन्तरेण वा ॥ २५ ॥
समरेसु अगारेसु, सन्धीसु य महापहे। एगो एगित्थिए सद्धिं, नेव चिट्ठे न संलवे ॥ २६ ॥
जं मे बुद्धाऽणुसासन्ति, सीएण फरुसेण वा। मम लाभो त्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ॥ २७ ॥
अणुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं। हियं तं मण्णई पण्णो, वेसं होइ असाहुणो ॥ २८ ॥
हियं विगयभया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासणं। वेसं तं होइ मूढाणं, खन्तिसोहिकरं पयं ॥ २९ ॥
आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चे अकुए थिरे। अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥ ३० ॥
कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे। अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥ ३१ ॥
परिवाडीए न चिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसणं चरे। पडिरूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ॥ ३२ ॥
नाइदूरमणासन्ने, नाऽन्नेसिं चक्खुफासओ। एगो चिट्ठेज भत्तट्ठा, लंघित्ता तं नाइक्कमे ॥ ३३ ॥
नाइउच्चे न नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ। फासुयं परकडं पिण्डं, पडिगाहेज्ज संजए ॥ ३४ ॥
अप्पपाणेऽप्पबीयम्मि, पटिच्छन्नम्मि संवुडे। समयं संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं ॥ ३५ ॥
सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे। सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥ ३६ ॥
रमए पण्डिए सासं, हयं भद्दं व वाहए। बालं सम्मइ सासन्तो, गलियस्सं व वाहए ॥ ३७ ॥
खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे। कल्लाणमणुसासन्तो, पावदिट्ठित्ति मन्नई ॥ ३८ ॥
पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नई। पावदिट्ठि उ अप्पाणं, सासं दासु त्ति मन्नई ॥ ३९ ॥
न कोवए आयरियं, अप्पाणंपि न कोवए। बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्तगवेसए ॥ ४० ॥
आयरियं कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए। विज्झवेज्ज पंजलीउडो, वएज्ज न पुणोत्ति य ॥ ४१ ॥
धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहायरियं सया। तमायरन्तो ववहारं, गरहं नाभिगच्छई ॥ ४२ ॥
मणोगयं वक्कगयं, जाणित्तायरियस्स उ। तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ४३ ॥
वित्ते अचोइए निच्चं, खिप्पं हवइ सुचोइए। जहोवइट्ठं सुकयं, किच्चाइं कुव्वई सया ॥ ४४ ॥
नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए। हवई किच्चाणं सरणं, भूयाणं जगई जहा ॥ ४५ ॥
पुज्जा जस्स पसीयन्ति, संबुद्धा पुव्वसंथुया। पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ॥ ४६ ॥

स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए, मणोरुई चिट्ठइ कम्मसंपया।
तवोसमायारिसमाहिसंवुडे, महज्जुई पंच वयाइं पालिया ॥ ॥ ४७ ॥

स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए, चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढीए ॥ ॥ ४८ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ विणयसुयं नाम पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह दुइअ परिसहज्झयण ॥

सुय मे आउस-तेण भगवया एवमक्खाय। इह खलु बावीस परीसहा समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया। जे भिक्खू सोचा नचा जिचा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो निण्हवेज्जा॥ कयरे ते खलु बावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोचा नचा जिचा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो निण्हवेज्जा?॥ इमे ते खलु बावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोचा नचा जिचा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो निण्हवेज्जा, तजहा-दिगिछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिणपरीसहे ४ दंसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६ अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९ निसीहियापरीसहे १० सेज्जापरीसहे ११ अकोसपरीसहे १२ वहपरीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तणफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८ सकारपुरकारपरीसहे १९ पन्नापरीसहे २० अन्नाणपरीसहे २१ दसणपरीसहे २२॥

परीसहाण पविभत्ती, कासवेण पवेइया। त भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे॥ १॥
दिगिछापरिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामव। न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए॥ २॥
कालीपव्वगसकासे, किसे धमणिसतए। मायन्ने असणपाणस्स, अदीणमणसो चरे॥ ३॥
तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुञ्छी लज्जसजए। सीओदग न सेविज्जा, वियडस्सेसण चरे॥ ४॥
छिन्नावाएसु पथेसु, आउरे सुपिवासिए। परिसुक्कमुहाऽदीणे, त तितिक्खे परीसह॥ ५॥
चरत विरय लूह, सीयं फुसइ एगया। नाइवेल मुणी गच्छे, सोचाण जिणसासण॥ ६॥
न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताण न विज्जई। अह तु अग्गि सेवामि, इइ भिक्खू न चितए॥ ७॥
उसिण परियावेण, परिदाहेण तज्जिए। घिसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए॥ ८॥
उण्हाहितत्ते मेहावी, सिणाण नो वि पत्थए। गाय नो परिसिंचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पय॥ ९॥
पुट्ठो य दसमसएहिं, समरे व महामुणी। नागो सगामसीसे वा, सूरो अभिहणे पर॥ १०॥
न सतसे न वारेज्जा, मण पि न पओसए। उवेहे न हणे पाणे, भुजंते मससोणिय॥ ११॥
परिजुण्णेहि वत्थेहि, होक्खामि त्ति अचेलए। अदुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खू न चिंतए॥ १२॥
एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया। एय धम्म हिय नच्चा, नाणी नो परिदेवए॥ १३॥
गामाणुगाम रीयत, अणगार अकिंचण। अरई अणुप्पवेसेज्जा, त तितिक्खे परीसह॥ १४॥
अरइ पिट्ठओ किच्चा, विरए आयरक्खिए। धम्मारामे निरारम्भे, उवसन्ते मुणी चरे॥ १५॥
सङ्गो एस मणूसाण, जाओ लोगम्मि इत्थिओ। जस्स एया परिन्नाया, सुकड तस्स सामण्ण॥ १६॥
एयमादाय मेहावी, पङ्कभूया उ इत्थिओ। नो ताहिं विणिहम्मेज्जा, चरेज्जत्तगवेसए॥ १७॥
एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे। गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए॥ १८॥
असमाणे चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिग्गह। असससे गिहत्थेहिं, अणिएओ परिव्वए॥ १९॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ। अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए पर॥ २०॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभिधारए । सकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्टित्ता अन्नमासण ॥ २१ ॥
उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामवं । नाइवेल विहम्मेज्जा, पावदिट्ठी विहम्मई ॥ २२ ॥
पइरिक्कुवस्सय लद्धु, कल्लाणमदुव पावय । किमेगराइ करिस्सइ, एव तत्थऽहियासए ॥ २३ ॥
अक्कोसेज्जा परे भिक्खु, न तेसि पडिसजले । सरिसो होइ बालाण, तम्हा भिक्खू न सजले ॥ २४ ॥
सोच्चाण फरुसा भासा, दारुणा गामकण्टगा । तुसिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥ २५ ॥
हओ न सजले भिक्खू, मणपि न पओसए । तितिक्ख परम नच्चा, भिक्खू धम्म समायरे ॥ २६ ॥
समण सजय दन्त, हणिज्जा कोइ कत्थई । नत्थि जीवस्स नासु त्ति, एव पेहेज्ज सजए ॥ २७ ॥
दुक्कर खलु भो निच्च, अणगारस्स भिक्खुणो । सव्व से जाइय होइ, नत्थि किंचि अजाइय ॥ २८ ॥
गोयरग्गपविट्ठस्स, पाणी नो सुप्पसारए । सेओ अगारवासु त्ति, इइ भिक्खू न चिन्तए ॥ २९ ॥
परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए । लद्धे पिण्डे अलद्धे वा, नाणुतप्पेज्ज पण्डिए ॥ ३० ॥
अज्जेवाह न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया । जो एव पडिसचिक्खे, अलाभो त न तज्जए ॥ ३१ ॥
नच्चा उप्पइय दुक्ख, वेयणाए दुहट्टिए । अदीणो थावए पन्न, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥ ३२ ॥
तेगिच्छ नाभिनन्देज्जा सचिक्खत्तगवेसए । एव खु तस्स सामण्ण, ज न कुज्जा न कारवे ॥ ३३ ॥
अचेलगस्स लूहस्स, सजयस्स तवस्सिणो । तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥ ३४ ॥
आयवस्स निवाएण, अउला हवइ वेयणा । एव नच्चा न सेवन्ति, तन्तुज तणतज्जिया ॥ ३५ ॥
किलिन्नगाए मेहावी, पकेण व रएण वा । घिंसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए ॥ ३६ ॥
वेएज्ज निज्जरापेही, आरिय धम्मणुत्तर । जाव सरीरभेउत्ति, जल्ल काएण धारए ॥ ३७ ॥
अभिवायणमब्भुट्ठाण, सामी कुज्जा निमतण । जे ताइ पडिसेवन्ति, न तेसि पीहए मुणी ॥ ३८ ॥
अणुक्कसाई अप्पिच्छे, अन्नाएसी अलोलुए । रसेसु नाणुगिज्झेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पन्नव ॥ ३९ ॥
से नूण मए पुव्व, कम्माऽणाणफला कडा । जेणाह नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४० ॥
अह पच्छा उइज्जन्ति, कम्माऽणाणफला कडा । एवमस्सासि अप्पाण, नच्चा कम्मविवागय ॥ ४१ ॥
निरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसवुडो । जो सक्ख नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावगं ॥ ४२ ॥
तवोवहाणमादाय, पडिम पडिवज्जओ । एव पि विहरओ मे, छउमं न नियट्टई ॥ ४३ ॥
नत्थि नूण परे लोए, इड्ढी वावि तवस्सिणो । अदुवा वचिओमित्ति, इइ भिक्खू न चिन्तए ॥ ४४ ॥
अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवावि भविस्सई । मुस ते एवमाहसु, इइ भिक्खू न चिन्तए ॥ ४५ ॥
एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया । जे भिक्खू न विहन्नेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४६ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ दुइअ परीसहज्झयण समत्त ॥ २ ॥

॥ अह तइअं चाउरंगिज्ज अज्झयण ॥

चत्तारि परमगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो। माणुसत्त सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरिय ॥ १ ॥
समावन्ना ण ससारे, नाणागोत्तासु जाइसु। कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्सभिया पया ॥ २ ॥
एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया। एगया आसुर काय, अहाकम्मेहिं गच्छई ॥ ३ ॥
एगया खत्तिओ होइ, तओ चण्डालवोक्कसो। तओकीडपयगो य, तओ कुन्थुपिवीलिया ॥ ४ ॥
एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्मकिब्बिसा। न निविज्जन्ति ससारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥ ५ ॥
कम्मसगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया बहुवेयणा। अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥ ६ ॥
कम्माण तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ। जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययति मणुस्सय ॥ ७ ॥
माणुस्स विग्गह लद्धु, सुई धम्मस्स दुल्लहा। ज सोच्चा पडिवज्जन्ति, तव खतिमहिंसय ॥ ८ ॥
आहच्च सवण लद्धु, सद्धा परमदुल्लहा। सोच्चा नेआउयं मग्ग, बहवे परिभस्सई ॥ ९ ॥
सुइ च लद्धु सद्ध च, वीरिय पुण दुल्लह। बहवे रोयमाणावि, नो य ण पडिवज्जए ॥ १० ॥
माणुसत्तमि आयाओ, जो धम्म सुच्च सद्दहे। तवस्सी वीरिय लद्धु, सवुडे निध्धुणे रय ॥ ११ ॥
सोही उज्जूय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई। निव्वाण परम जाइ, घयसित्तिव्व पावए ॥ १२ ॥
विगिंच कम्मुणो हेउ, जस सचिणु खंतिए। सरीर पाढव हिच्चा, उड्ढ पक्कमए दिस ॥ १३ ॥
विसालसेहि सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा। महासुक्का व दिप्पता, मन्नता अपुणच्चय ॥ १४ ॥
अप्पिया देवकामाण, कामरूवविउव्विणो। उड्ढ कप्पेसु चिट्ठति, पुव्वावाससया बहु ॥ १५ ॥
तत्थ ठिच्चा जहाठाण, जक्खा आउक्खये चुया। उवेंति माणुस जोणिं, से दसंगेभिजायए ॥ १६ ॥
खित्त वत्थु हिरण्ण च, पसवो दासपोरुस। चत्तारि कामखधाणि। तत्थ से उववज्जइ ॥ १७ ॥
मित्तव नाइव होइ, उच्चागोए य वण्णव। अप्पायके महापन्ने, अभिजाए जसो बले ॥ १८ ॥
भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउय। पुव्व विसुद्धसद्धम्मे, केवल बोहिबुज्झिया ॥ १९ ॥
चउरग दुल्लह नच्चा, सजम पडिवज्जिया। तवसा धुयकम्म से, सिद्धे हवइ सासए ॥ २० ॥

त्ति बेमि ॥ इअ तृतीय परिज्झयण समत्त ॥

॥ अह चतुर्थं असखय अज्झयणं ॥

असखय जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थि ताण।
एव वियाणाहि जणे पमत्ते कन्नु विहिंसा अजिया गिहिंति ॥ १ ॥
जे पावकम्मेहिं धण मणूसा, समाययती अमइ गहाय।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे, वेराणुबद्धा नरय उवेंति ॥ २ ॥
तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी।
एव पया पेच्च इह च लोए, कडाण कम्माण न मुक्खु अत्थि ॥ ३ ॥

ससारमावन्न परस्स अट्ठा, साहारण ज च करेइ कम्म ।
कम्मस्स ते तस्स उवेयकाले, न बधवा बधवय उर्विति ॥ ४ ॥
वित्तेण ताण न लभे पमत्ते, इमंमि लोए अदुवा परत्थ ।
दीवप्पणट्टेव अणंतमोहे, नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ५ ॥
सुत्तेसुआवी पडिबुद्धजीवी, न वीससे पंडिय आसुपण्णे ।
घोरा मुहुत्ता अबल सरीर, भारडपक्खीव चरऽप्पमत्तो ॥ ६ ॥
चरे पयाइ परिसकमाणो, ज किंचि पास इह मन्नमाणो ।
लाभतरे जीवियवूहइत्ता, पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥ ७ ॥
छदनिरोहेण उवेइ मोक्ख, आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मुक्ख ॥ ८ ॥
स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयाणं ।
विसीयई सिढिले आउयम्मि, कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥
खिप्प न सक्केइ विवेगमेउ, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोय समया महेसी, आयाणुरक्खी चरमप्पमत्ते ॥ १० ॥
मुहु मुहु मोहगुणे जयन्त, अणेगरूवा समण चरन्तं ।
फासा फुसन्ती असमजस च, न तेसि भिक्खू मणसा पउस्से ॥ ११ ॥
मन्दा य फासाबहुलोहणिज्जा, तहप्पगारेसु मण न कुज्जा ।
रक्खिज्ज कोह विणएज्ज माण, माय न सेवेज्ज पयहेज्ज लोह ॥ १२ ॥
जेऽसखया तुच्छपरप्पवाई, ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए अहम्मे त्ति दुगुछमाणो, कखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥ १३ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ असखय चउत्थ अज्झयणं समत्त ॥

॥ अह अकाममरणिज्ज पञ्चम अज्झयण ॥

अण्णवसि महोहसि, एगे तिण्णे दुरुत्तर । तत्थ एगे महापन्ने, इम पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥
सन्तिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणन्तिया । अकाममरण चेव, सकाममरण तहा ॥ २ ॥
बालाण तु अकाम तु, मरण असइ भवे । पण्डियाण सकाम तु, उक्कोसेण सइ भवे ॥ ३ ॥
तत्थिम पढम ठाण, महावीरेण देसिय । कामगिद्धे जहा बाले, भिस कूराइ कुव्वई ॥ ४ ॥
जे गिद्धे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छई । न मे दिट्ठे परे लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥ ५ ॥
हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया । को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥
जणेण सद्धिं होक्खामि इइ बाले पगब्भई । कामभोगाणुराएण, केस सपडिवज्जई ॥ ७ ॥
तओ से दण्ड समारभई, तसेसु थावरेसु य । अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगामं विहिंसई ॥ ८ ॥
हिंसे बाले मुसावाई, माइल्ले पिसुणे सढे । भुजमाणे सुर मस, सेयमेयं ति मन्नई ॥ ९ ॥

कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु। दुहओ मलं सचिणइ, सिसुणागु व्व मट्टियं ॥ १० ॥
तओ पुट्ठो आयंकेणं, गिलाणो परितप्पई । पभीओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥
सुया मे नरए ठाणा, असीलाण च जा गई । बालाण कूरकम्माण, पगाढा जत्थ वेयणा ॥ १२
तत्थोववाइय ठाणं, जहा मेयमणुस्सुय । आहाकम्मेहिं गच्छन्तो, सो पच्छा परितप्पई ॥ १३ ॥
जहा सागडिओ जाण, समं हिच्चा महापह । विसमं मग्गमोइण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥ १४ ॥
एव धम्मं विउक्कम्म, अहम्मं पडिवज्जिया । बाले मच्चुमुह पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई ॥ १५ ॥
तओ से मरणन्तम्मि, बाले सतसई भया । अकाममरण मरई, धुत्ते व कलिणा जिए ॥ १६ ॥
एय अकाममरण, बालाण तु पवेइय । एत्तो सकाममरण, पण्डियाण सुणेह मे ॥ १७ ॥
मरण पि सपुण्णाण, जहा मेयमणुस्सुय । विप्पसण्णमणाघाय, सजयाण वुसीमओ ॥ १८ ॥
न इम सव्वेसु भिक्खूसु, न इम सव्वेसु गारिसु। नाणासीला अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो॥ १९ ॥
सन्ति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था सजमुत्तरा । गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो सजमुत्तरा ॥ २० ॥
चीराजिण नगिणिण, जडी सघाडिमुण्डिण। एयाणि वि न तायन्ति, दुस्सील परियागय ॥ २१ ॥
पिंडोल एव्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चई। भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुव्वए कम्मई दिव ॥ २२ ॥
अगारिसामाइयगाणि, सड्ढी काएण फासए । पोसह दुहओ पक्ख, एगराय न हावए ॥ २३ ॥
एव सिक्खासमावन्ने, गिहिवासे वि सुव्वए । मुच्चई छविपव्वाओ, गच्छे जक्खसलोगय ॥ २४ ॥
अह जे सवुडे भिक्खू, दोण्ह अन्नयरे सिया। सव्व दुक्खपहीणे वा, देवे वावि महिड्ढीए ॥ २५ ॥
उत्तराइ विमोहाइ, जुईमन्ताणुपुव्वसो । समाइण्णाइ जक्खेहिं, आवासाइं जससिणो ॥ २६ ॥
दीहाउया इड्ढीमन्ता, समिद्धा कामरूविणो। अहुणोववन्नसकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥ २७ ॥

ताणि ठाणाणि गच्छन्ति, सिक्खित्ता सजम तव ।
भिक्खाए वा गिहित्थे वा, जे सन्ति पडिनिव्वुडा ॥ ॥ २८ ॥

तेसिं सोच्चा सपुज्जाण, सजयाण वुसीमओ । न सतसति मरणते, सीलवन्ता बहुस्सुया ॥ २९ ॥
तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खन्तिए । विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ॥ ३० ॥
तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमन्तिए। विणएज्ज लोमहरिस, भेयं देहस्स कखए ॥ ३१ ॥
अह कालम्मि सपत्ते, आघायाय समुस्सय । सकाममरण मरई, तिण्हमन्नयर मुणी ॥ ३२ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ अकाममरणिज्ज पचम अज्झयण समत्त ॥ ५ ॥

॥ अह खुड्डागनियण्ठिज्जं छट्ठ अज्झयण ॥

जावन्तविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसभवा । लुप्पन्ति बहुसो मूढा, ससारम्मि अणन्तए ॥ १ ॥
समिक्ख पण्डए तम्हा, पासजाई पहे बहू । अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मेत्तिं भूएसु कप्पए ॥ २ ॥
माया पियाण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा। नाल ते मम ताणाए, लुप्पतस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥
एयमट्ठ सपेहाए, पासे समियदसणे । छिन्द गेद्धिं सिणेह च, न कखे पुव्वसथुय ॥ ४ ॥
गवास मणिकुण्डलं, पसवो दासपोरुस । सव्वमेय चइत्ताण, कामरूवी भविस्ससि ॥

अज्झत्थ सव्वओ सव्व, दिस्स पाणे पियायए। न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥ ६ ॥
आदाण नरयं दिस्स, नायएज्ज तणामवि। दोगुञ्छी अप्पणो पाए, दिन्न भुंजेज्ज भोयणं ॥ ७ ॥
इहमेगे उ मन्नन्ति, अपच्चक्खाय पावगं। आयरियं विदित्ताणं, सव्वदुक्खाण मुच्चए ॥ ८ ॥
भणंता अकरेन्ता य, बन्धमोक्खपइण्णिणो। वायाविरियमेत्तेण, समासासेन्ति अप्पयं ॥ ९ ॥
न चित्ता तायए भासा, कओ विज्जाणुसासणं। विसन्ना पावकम्मेहिं, बाला पंडियमाणिणो ॥ १० ॥
जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो। मणसा कायवक्केणं, सव्वे ते दुक्खसम्भवा ॥ ११ ॥
आवन्ना दीहमद्धाणं, संसारम्मि अणन्तए। तम्हा सव्वदिसं पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए ॥ १२ ॥
बहिया उड्ढमादाय, नावकंखे कयाइ वि। पुव्वकम्मक्खयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे ॥ १३ ॥
विविच्च कम्मुणो हेउ, कालकंखी परिव्वए। मायं पिंडस्स पाणस्स, कडं लद्धूण भक्खए ॥ १४ ॥
सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, लेवमायाए संजए। पक्खीपत्तं समादाय, निरवेक्खो परिव्वए ॥ १५ ॥
एसणासमिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे। अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिण्डवायं गवेसए ॥ १६ ॥
एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए

इअ खुड्डागनियंठिज्ज छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

॥ अह एलयं सत्तमं अज्झयणं ॥

जहाएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं। ओयणं जवसं देज्जा, पोसेज्जावि सयङ्गणे ॥ १ ॥
तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोदरे। पीणिए विउले देहे, आएसं परिकंखए ॥ २ ॥
जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से दुही। अह पत्तम्मि आएसे, सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥ ३ ॥
जहा से खलु उरब्भे, आएसाए समीहिए। एवं बाले अहम्मिट्ठे, ईहई नरयाउयं ॥ ४ ॥
हिंसे बाले मुसावाई, अद्धाणम्मि विलोवए। अन्नदत्तहरे तेणे, माई कं नु हरे सढे ॥ ५ ॥
इत्थीविसयगिद्धे य, महारम्भपरिग्गहे। भुंजमाणे सुरं मंसं, परिवूढे परंदमे ॥ ६ ॥
अयकक्करभोई य, तुंदिल्ले चियलोहिए। आउयं नरए कंखे, जहाएसं व एलए ॥ ७ ॥
आसणं सयणं जाणं, वित्तं कामे य भुंजिया। दुस्साहडं धणं हिच्चा, बहुं संचिणिया रयं ॥ ८ ॥
तओ कम्मगुरू जन्तू, पच्चुप्पन्नपरायणे। अए व्व आगयाएसे, मरणन्तम्मि सोयई ॥ ९ ॥
तओ आउपरिक्खीणे, चुया देहा विहिंसगा। आसुरियं दिसं बाला, गच्छन्ति अवसा तमं ॥ १० ॥
जहा कागिणिए हेउं, सहस्सं हारए नरो। अपत्थं अम्बगं भोच्चा, राया रज्जं तु हारए ॥ ११ ॥
एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अन्तिए। सहस्सगुणिया भुज्जो, आउं कामा य दिव्विया ॥ १२ ॥
अणेगवासानउया, जा सा पन्नवओ ठिई। जाणि जीयन्ति दुम्मेहा, ऊणे वाससयाउए ॥ १३ ॥
जहा य तिन्नि वणिया, मूलं घेत्तूण निग्गया। एगोऽत्थ लहई लाभं, एगो मूलेण आगओ ॥ १४ ॥
एगो मूलं पि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ। ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ॥ १५ ॥
माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे। मूलच्छेएण जीवाणं, नरगतिरिक्खत्तणं धुवं ॥ १६ ॥
दुहओ गई बालस्स, आवई वहमूलिया। देवत्तं माणुसत्तं च, जं जिए लोलयासढे ॥ १७ ॥

तओ जिए सइ होइ, दुविह दोग्गइ गए। दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए सुइरादवि ॥ १८ ॥
एव जियं सपेहाए, तुलिया बालं च पण्डियं। मूलिय ते पवेसन्ति, माणुसिं जोणिमेन्ति जे ॥ १९ ॥
वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुव्वया। उवेन्ति माणुस जोणिं, कम्मसचा हु पाणिणो ॥ २० ॥
जेसिं तु विउला सिक्खा, मूलिय ते अइच्छिया। सीलवन्ता सवीसेसा, अदीणा जन्ति देवयं ॥ २१ ॥
एवमदीणवं भिक्खु, आगारिं च वियाणिया। कहण्णु जिच्चमेलिक्ख, जिच्चमाणे न सविदे ॥ २२ ॥
जहा कुसग्गे उदग, समुद्देण सम मिणे। एव माणुस्सगा कामा, देवकामाण अतिए ॥ २३ ॥
कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए। कस्स हेउ पुराकाउ, जोगक्खेम न सविदे ॥ २४ ॥
इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झई। सोच्चा नेयाउय मग्ग, ज भुज्जो परिभस्सई ॥ २५ ॥
इह कामणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई। पूइदेहनिरोहेण, भवे देवि त्ति मे सुय ॥ २६ ॥
इड्ढी जुई जसो वण्णो, आउ सुहमणुत्तर। भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जई ॥ २७ ॥
बालस्स पस्स बालत्त, अहम्म पडिवज्जिया। चिच्चा धम्म अहम्मिट्ठे, नरए उववज्जई ॥ २८ ॥
धीरस्स पस्स धीरत्त सव्वधम्माणुवत्तिणो। चिच्चा अधम्म धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जई ॥ २९ ॥
तुलियाण बालभाव, अबाल चेव पडिए। चइऊण बालभाव, अबाल सेवई मुणि ॥ ३० ॥

त्ति बेमि ॥ इअ एलय-ज्झयण समत्त ॥ ७ ॥

॥ अह काविलिय अट्ठम अज्झयण ॥

अधुवे असासयम्मि, ससारम्मि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज त कम्मय, जेणाह दोग्गइ न गच्छेज्जा ॥ १ ॥
विजहित्तु पुव्वसजोय, न सिणेह कहिंचि कुव्वेज्जा।
असिणेहसिणेहकरेहिं, दोसपओसेहि मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥
तो नाणदसणसमग्गो, हियनिस्सेसाय सव्वजीवाण।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥ ३ ॥
सव्व गथ कलह च, विप्पजहे तहाविह भिक्खू।
सव्वेसु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥
भोगामिसदोसविसन्ने, हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे।
बाले य मन्दिए मूढे, बज्झई मच्छिया व खेलम्मि ॥ ५ ॥
दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।
अह सन्ति सुव्वया साहू, जे तरन्ति अतर वणिया वा ॥ ६ ॥
समणामु एगे वयमाणा, पाणवह मिया अयाणन्ता।
मन्दा निरय गच्छन्ति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥
न हु पाणवह अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं।
एवारिएहिं अक्खाय, जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥ ८ ॥

पाणे य नाइवाएज्जा, से समीइ त्ति वुच्चई ताई।
तओ से पावयं कम्मं, निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥ ९ ॥
जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव ॥ १० ॥
सुद्धेसणाओ नच्चाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥ ११ ॥
पन्ताणि चेव सेवेज्जा, सीयपिंडं पुराणकुम्मासं।
अदु वुक्कसं पुलागं वा, जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ॥ १२ ॥
जे लक्खणं च सुविणं, अङ्गविज्जं च जे पउञ्जन्ति।
न हु ते समणा वुच्चन्ति, एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥ १३ ॥
इहजीवियं अणियमेत्ता, पब्भट्ठा समाहिजोएहिं।
ते कामभोगरसगिद्धा, उववज्जन्ति आसुरे काए ॥ १४ ॥
तत्तो वि य उव्वट्टित्ता, संसारं बहुं अणुपरियडन्ति।
बहुकम्मलेवलित्ताणं, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥ १५ ॥
कसिणंपि जो इमं लोयं, पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स।
तेणावि से न संतुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ॥ १६ ॥
जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई।
दोमासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं ॥ १७ ॥
नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा, गंडवच्छासु णेगचित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता, खेल्लन्ति जहा व दासेहिं ॥ १८ ॥
नारीसु नोवगिज्झेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणगारे।
धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥ १९ ॥
इअ एस धम्मे अक्खाए कविलेण च विसुद्धपन्नेण।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति, तेहिं आराहिया दुवे लोग ॥ २० ॥
त्ति बेमि ॥ इअ काविलीयं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

॥ अह नमिपव्वज्जा अज्झयणं ॥

चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि। उवसन्तमोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं ॥ १ ॥
जाइं सरित्तु भयवं, सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे। पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया ॥ २ ॥
से देवलोगसरिसे, अन्तेउरवरगओ वरे भोए। भुञ्जित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥ ३ ॥
मिहिलं सपुरजणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं। चिच्चा अभिनिक्खन्तो एगन्तमहिट्ठिओ भयवं ॥ ४ ॥
कोलाहलगभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयन्तम्मि। तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमन्तम्मि।

अब्भुट्ठिय रायरिसिं, पव्वज्जाठाणमुत्तमं । सक्को माहणरूवेण, इम वयणमब्बवी ॥ ६ ॥
किण्णु भो अज्ज मिहिला, कोलाहलगसकुला। सुव्वन्ति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ८ ॥
मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे । पत्तपुप्फफलोवेए, बहूण बहुगुणे सया ॥ ९ ॥
वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे। दुहिया असरणा अत्ता, एए कन्दन्ति भो खगा ॥ १० ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ११ ॥
एस अग्गी य वाऊ य, एय डज्झइ मन्दिर। भयव अन्तेउर तेण, कीस ण नावपेक्खह ॥ १२ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ १३ ॥
सुह वसामो जीवामो, जेसि मो नत्थि किंचण। मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचण ॥ १४ ॥
चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो। पिय न विज्जई किंचि, अप्पिय पि न विज्जई ॥ १५ ॥
बहु खु मुणिणो भद्द, अणगारस्स भिक्खुणो । सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगन्तमणुपस्सओ ॥ १६ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ १७ ॥
पागार कारइत्ताण, गोपुरट्टालगाणि च । उस्सूलगसयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ १८ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ १९ ॥
सद्ध नगर किच्चा, तवसवरमग्गल । खन्ति निउणपागार, तीगुत्त दुप्पधसय ॥ २० ॥
धणु परक्कम किच्चा, जीव च इरिय सया । धिइ च केयण किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥ २१ ॥
तवनारायजुत्तेण, भित्तूण कम्मकचुय । मुणी विजयसगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥ २२ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २३ ॥
पासाए कारइत्ताण, वद्धमाणगिहाणि य । बालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २४ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २५ ॥
ससय खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घर। जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥ २६ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २७ ॥
आमोसे लोमहारे य, गठिभेए य तक्करे । नगरस्स खेम काऊण, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २८ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २९ ॥
असइ तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पजुञ्जई। अकारिणोऽत्थ वज्झन्ति, मुच्चई कारओ जणो ॥ ३० ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३१ ॥
जे केइ पत्थिवा तुज्झ, नानमन्ति नराहिवा। वसे ते ठावइत्ताण, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ३२ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदो इणमब्बवी ॥ ३३ ॥
जो सहस्स सहस्साण, सगामे दुज्जए जिणे। एग जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ ॥ ३४ ॥
अप्पणामेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ। अप्पणामेवमप्पाण, जइत्ता सुहमेहए ॥ ३५ ॥
पचिन्दियाणि कोह, माण माय तहेव लोह च। दुज्जय चेव अप्पाण, सव्व अप्पे जिए जिय ॥ ३६ ॥
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥
जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समणमाहणे। दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ३८ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३९ ॥
जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए । तस्स वि संजमो सेओ, अदिन्तस्स वि किंचण ॥ ४० ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४१ ॥
घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं । इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ॥ ४२ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४३ ॥
मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेण तु भुंजए । न सो सक्खायधम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥ ४४ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ, तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥ ४५ ॥
हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं । कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ४६ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥ ४७ ॥

सुवण्णरुप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि, इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥ ॥ ४८ ॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह । पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥ ४९ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ५० ॥
अच्छेरयमब्भुए, भोए चयसि पत्थिवा । असन्ते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि ॥ ५१ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥
सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा । कामे पत्थेमाणा, अकामा जन्ति दोग्गइं ॥ ५३ ॥
अहे वयन्ति कोहेणं, माणेणं अहमा गई । माया गईपडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं ॥ ५४ ॥
अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउव्विऊण इन्दत्तं । वन्दइ अभित्थुणन्तो, इमाहि महुराहि वग्गूहि ॥ ५५ ॥
अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ । अहो निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ॥ ५६ ॥
अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं । अहो ते उत्तमा खन्ती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥ ५७ ॥
इहं सि उत्तमो भन्ते, पच्छा होहिसि उत्तमो । लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥ ५८ ॥
एवं अभित्थुणन्तो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए । पयाहिणं करेन्तो, पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥ ५९ ॥
तो वन्दिऊण पाए, चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स । आगासेणुप्पइओ, ललियचवलकुण्डलतिरीडी ॥ ६० ॥
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ । चइऊण गेहं च वेदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ६१ ॥
एवं करेन्ति संबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा । विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥ ६२ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ नमिपव्वज्जा समत्ता ॥

॥ अह दुमपत्तयं दसम अज्झयण ॥

दुमपत्तए पंडुयए जहा, निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम मा पमायए॥ १॥
कुसग्गे जह ओसबिन्दुए, थोव चिट्ठइ लम्बमाणए।
एव मणुयाण जीविय, समयं गोयम मा पमायए॥ २॥
इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहुपच्चवायए।
विहुणाहि रय पुरे कडं, समय गोयम मा पमायए॥ ३॥
दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकाले वि सव्वपाणिण।
गाढा य विवाग कम्मुणो, समय गोयम मा पमायए॥ ४॥
पुढविक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखाईय, समय गोयम मा पमायए॥ ५॥
आउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखाईयं, समय गोयम मा पमायए॥ ६॥
तेउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो य संवसे।
काल संखाईय समय गोयम मा पमायए॥ ७॥
वाउक्काइयमइगओ, उक्कोस जीवो य संवसे।
काल संखाईय, समय गोयम मा पमायए॥ ८॥
वणस्सइकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
कालमणन्तदुरन्तय समय गोयम मा पमायए॥ ९॥
बेइन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायए॥ १०॥
तेइन्दिकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायए॥ ११॥
चउरिन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायए॥ १२॥
पंचिन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
सत्तट्ठभवगहणे, समय गोयम मा पमायए॥ १३॥
देवे नेरइए यमइगओ उक्कोस जीवो उ संवसे।
इक्केक्कभवगहणे समय गोयम मा पमायए॥ १४॥
एव भवसंसारे, संसरइ सुहासुहेहि कम्मेहि।
जीवो पमायबहुलो, समय गोयम मा पमायए॥ १५॥

लद्धूण वि माणुसत्तणं, आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं ।
विगलिन्दियया हु दीसई, समयं गोयम मा पमायए ॥ १६ ॥
लद्धूण वि आयरित्तणं, अहीणपंचेन्दियया हु दुल्लहा ।
विगलिन्दियया हु दीसई, समयं गोयम मा पमायए ॥ १७ ॥
अहीणपंचेन्दियत्तं पि से लहे, उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।
कुतित्थिनिसेवए जणे, समयं गोयम मा पमायए ॥ १८ ॥
लद्धूण वि उत्तमं सुइं, सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
मिच्छत्तनिसेवए जणे, समयं गोयम मा पमायए ॥ १९ ॥
धम्मं पि हु सद्दहन्तया, दुल्लहया काएण फासया ।
इह कामगुणेहि मुच्छिया, समयं गोयम मा पमायए ॥ २० ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सोयबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २१ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से चक्खुबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २२ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाणबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २३ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिब्भबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २४ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फासबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २५ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सव्वबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २६ ॥
अरई गण्डं विसूइया, आयंका विविहा फुसन्ति ते ।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं, समयं गोयम मा पमायए ॥ २७ ॥
वोच्छिन्द सिणेहमप्पणो, कुमुयं सारइयं व पाणियं ।
से सव्वसिणेहवज्जिए, समयं गोयम मा पमायए ॥ २८ ॥
चिच्चाण धणं च भारियं, पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
मा वन्तं पुणो वि आविए, समयं गोयम मा पमायए ॥ २९ ॥
अवउज्झिय मित्तबन्धवं, विउलं चेव धणोहसंचयं ।
मा तं बिइयं गवेसए, समयं गोयम मा पमायए ॥ ३० ॥
न हु जिणे अज्ज दिस्सई, बहुमए दिस्सई मग्गदेसिए ।
संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम मा पमायए ॥ ३१ ॥
अवसोहिय कण्टगा पहं, ओइण्णो सि पहं महालयं ।

गच्छसि मग्गं विसोहिया, समय गोयम मा पमायए ॥ ३२ ॥
अबले जह भारवाहए, मा मग्गे विसमे वगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुतावए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३३ ॥
तिण्णो हु सि अण्णव मह, कि पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पार गमित्तए, समयं गोयम मा पमायए ॥ ३४ ॥
अकलेवरसेणिं उस्सिया, सिद्धिं गोयम लोय गच्छसि ।
खेमं च सिव अणुत्तर, समयं गोयम मा पमायए ॥ ३५ ॥
बुद्धे परिनिव्वुडे चरे, गामगए नगरे व सजए ।
सन्तीमग्ग च वूहए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३६ ॥
बुद्धस्स निसम्म भासियं, सुकहियमट्ठपओवसोहिय ।
राग दोस च छिन्दिया, सिद्धिगइ गए गोयमे ॥ ३७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ दुमपत्तय समत्त ॥ १० ॥

॥ अह बहुस्सुयपुज्ज एगारस अज्झयण ॥

सजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो । आयार पाउकरिस्सामि, आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे अभिक्खण उल्लवई, अविणीए अबहुस्सुए ॥ २ ॥
अह पचहिं ठाणेहिं, जेहि सिक्खा न लब्भई । थम्भा कोहा पमाएण, रोगेणालस्सएण य ॥ ३ ॥
अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलि त्ति वुच्चई । अहस्सिरे सया दन्ते, न य मम्ममुदाहरे ॥ ४ ॥
नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए । अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीलि त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥
अह चोइसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ सजए । अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाण च न गच्छइ ॥ ६ ॥
अभिक्खण कोही हवइ, पबन्ध च पकुव्वई । मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुय लद्धूणमज्जई ॥ ७ ॥
अवि पावपरिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पई । सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावय ॥ ८ ॥
पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे । असविभागी अवियत्ते, अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥
अह पन्नरसहिं ठाणेहिं, सुविणीए त्ति वुच्चई । नीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ॥ १० ॥
अप्प च अहिक्खिवई, पबन्ध च न कुव्वई । मेत्तिज्जमाणो भयई, सुय लद्धु न मज्जई ॥ ११ ॥
न य पावपरिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पई । अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई ॥ १२ ॥
कलहडमरवज्जिए बुद्धे अभिजाइए । हिरिम पडिसलीणे, सुविणीए त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥
वसे गुरुकुले निच्च, जोगव उवहाणव । पियकरे पियवाई, से सिक्ख लद्धुमरिहई ॥ १४ ॥
जहा सखम्मि पय, निहिय दुहओ वि विरायइ । एव बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुय ॥ १५ ॥
जहा से कम्बोयाण, आइण्णे कन्थए सिया । आसे जवेण' पवरे, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १६ ॥
जहाइण्णसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे । उभओ नन्दिघोसेण, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १७ ॥
जहा करेणुपरिकिण्णे, कुजरे सट्ठिहायणे । बलवन्ते अप्पडिहए, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १८ ॥

जहा से तिक्खसिंगे, जायखंधे विरायई। वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ १९ ॥
जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए। सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २० ॥
जहा से वासुदेवे, संखचक्कगयाधरे। अप्पडिहयबले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २१ ॥
जहा से चाउरंते, चक्कवट्टी महिड्ढिए। चोद्दसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २२ ॥
जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे। सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २३ ॥
जहा से तिमिरविद्धंसे, उत्तिट्ठंते दिवायरे। जलंते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २४ ॥
जहा से उडुवई चंदे, नक्खत्तपरिवारिए। पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २५ ॥
जहा से समाइयाणं, कोट्ठागारे सुरक्खिए। नाणाधन्नपडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २६ ॥
जहा सा दुमाण पवरा, जंबू नाम सुदंसणा। अणाढियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २७ ॥
जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा। सीया नीलवंतपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २८ ॥
जहा से नगाण पवरे, सुमहं मंदरे गिरी। नाणोसहिपज्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २९ ॥
जहा से सयंभुरमणे, उदही अक्खओदए। नाणारयणपडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ ३० ॥

समुद्दगंभीरसमा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसया।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो, खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥ ३१ ॥

तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए। जेणप्पाणं परं चेव, सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥ ३२ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ बहुस्सुयपुज्जं समत्तं ॥ ११ ॥

॥ अह हरिएसिज्जं बारह अज्झयणं ॥

सोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी, हरिएसबलो नाम, आसि भिक्खू जिइंदिओ ॥ १ ॥
इरिएसणभासाए, उच्चारसमिईसु य। जओ आयाणनिक्खेवे, संजओ सुसमाहिओ ॥ २ ॥
मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ। भिक्खट्ठा बंभइज्जम्मि, जन्नवाडे उवट्ठिओ ॥ ३ ॥
तं पासिऊणमेज्जंतं, तवेण परिसोसियं। पंतोवहिउवगरणं, उवहसंति अणारिया ॥ ४ ॥
जाईमयपडिथद्धा, हिंसगा अजिइंदिया। अबंभचारिणो बाला, इमं वयणमब्बवी ॥ ५ ॥

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे, काले विगराले फोक्कनासे।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए, संकरदूसं परिहरिय कंठे ॥ ६ ॥
कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे, काए व आसा इहमागओसि।
ओमचेलगा पंसुपिसायभूया, गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओसि ॥ ७ ॥
जक्खो तहिं तिंदुयरुक्खवासी, अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं, इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥ ८ ॥
समणो अहं संजओ बंभयारी, विरओ धणपयणपरिग्गहाओ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥ ९ ॥
वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई, अन्नं पभूयं भवयाणमेयं।

जाणेह मे जायणजीविणु त्ति, सेसावसेस लभऊ एवस्सी ॥ १० ॥
उवक्खड भोयण माहणाण, अत्तट्ठिय सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वय एरिसमन्नपाण, दाहामु तुज्झ किमिह ठिओ सि ॥ ११ ॥
थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा, तहेव निन्ने सु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झ, आराहए पुण्णमिण खु खित्त ॥ १२ ॥
खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
जे माहणा जाइविज्जोववेया, ताइ तु खेत्ताइ सुपेसलाइ ॥ १३ ॥
कोहो य माणो य वहो य जेसिं, मोस अदत्त च परिग्गह च ।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा, ताइ तु खेत्ताइ सुपावयाइ ॥ १४ ॥
तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराण, अट्ठ न जाणेह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइ मुणिणो चरन्ति, ताइ तु खेत्ताइ सुपेसलाइ ॥ १५ ॥
अज्झावयाण पडिकूलभासी, पभाससे कि तु सगासि अम्ह ।
अवि एय विणस्सउ अन्नपाण, न य ण दाहामु तुम नियण्ठा ॥ १६ ॥
समिईहि मज्झ सुसमाहियस्स, गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्ज, किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाह ॥ १७ ॥
के एत्थ खत्ता उवजोइया वा, अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
एय दण्डेण फलएण हन्ता, कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो ण ॥ १८ ॥
अज्झावयाण वयण सुणेत्ता, उद्धाइया तत्थ बहूकुमारा ।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव, समागया त इसि तालयन्ति ॥ १९ ॥
रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया, भद्द त्ति नामेण अणिन्दियगी ।
त पासिया सजय हम्ममाण, कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥ २० ॥
देवाभिओगेण निओइएण, दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया ।
नरिन्ददेविन्दभिवन्दिएण, जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥ २१ ॥
एसो हु सो उग्गतवो महप्पा, जितिन्दिओ सजओ बम्भयारी ।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं, पिउणा सय कोसलिएण रन्ना ॥ २२ ॥
महाजसो एस महाणुभागो, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एय हीलेह अहीलणिज्ज, मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥ २३ ॥
एयाइ तीसे वयणाइ सोच्चा, पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइ ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए, जक्खा कुमारे विणिवारयन्ति ॥ २४ ॥
ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खेऽसुरा तहिं त जण तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिर वमन्ते, पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥ २५ ॥
गिरिं नहेहिं खणह, अय दन्तेहिं खायह ।
जायतेय पाएहि हणह, जे भिक्खु अवमन्नह ॥ २६ ॥

एहा य ते कयरा सन्ति भिक्खू, कयरेण होमेण हुणासि जोइं ॥ ४३ ॥
तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंग ।
कम्मेहा संजमजोगसन्ती होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥ ४४ ॥
के ते हरए के य ते सन्तितित्थे, कहिं सिणाओ व रयं जहासि ।
आइक्ख णे संजय जक्खपूइआ, इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥ ४५ ॥
धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे, अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥ ४६ ॥
एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं, महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिं सिणाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्त ॥ ४७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ हरिएसिज्जं समत्तं ॥ १२ ॥

॥ अह चित्तसम्भूइज्जं तेरहमं अज्झयणं ॥

जाईपराजइओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि। चुलणीए बम्भदत्तो, उववन्नो पउमगुम्माओ ॥ १ ॥
कम्पिल्ले सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि। सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥ २ ॥
कम्पिल्लम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसम्भूया। सुहदुक्खफलविवागं, कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥ ३ ॥
चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बम्भदत्तो महायसो । भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी ॥ ४ ॥
आसीमु भायरो दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा । अन्नमन्नमणूरत्ता, अन्नमन्नहिएसिणो ॥ ५ ॥
दासा दसण्णे आसीमु, मिया कालिंजरे नगे । हंसा मयंगतीरे, सोवागा कासिभूमिए ॥ ६ ॥
देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढीया। इमा नो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥
कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय विचिन्तिया । तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥ ८ ॥
सच्चसोयप्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा । ते अज्ज परिभुंजामो, किं तु चित्तेवि से तहा ॥ ९ ॥

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं, आया ममं पुण्णफलोववेए ॥ १० ॥
जाणाहि सभूय महाणुभागं, महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं, इड्ढी जुई तस्स वि यप्पभूया ॥ ११ ॥
महत्थरूवा वयणप्पभूया, गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इह जयन्ते समणो मि जाओ ॥ १२ ॥
उच्चोयए महु कक्के य बम्भे, पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्त धणप्पभूयं, पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥ १३ ॥
नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं, नारीजणाहिं परिवारयन्तो ।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू, मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥ १४ ॥

तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं, नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही, चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥ १५ ॥
सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडम्बियं ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥ १६ ॥
बालाभिरामेसु दुहावहेसु, न तं सुहं कामगुणेसु राय ।
विरत्तकामाण तवोधणाणं, जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥ १७ ॥
नरिंद जाई अहमा नराणं, सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा, वसीय सोवागनिवेसणेसु ॥ १८ ॥
तीसे य जाईइ उ पावियाए, वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा, इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ॥ १९ ॥
सो दाणि सिं राय महाणुभागो, महिड्ढी पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइं असासयाइं, आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥ २० ॥
इह जीविए राय असासयम्मि, धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए, धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥ २१ ॥
जहेह सीहो व मियं गहाय, मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्मि तम्मंसहरा भवन्ति ॥ २२ ॥
न तस्स दुक्खं विभयन्ति, नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न बन्धवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥ २३ ॥
चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च, खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ, परं भवं सुन्दर पावगं वा ॥ २४ ॥
तं इक्कगं तुच्छसरीरगं से, चिईगयं दहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्ता वि य नायओ य, दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥ २५ ॥
उवणिज्जइ जीवियमप्पमायं वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ।
पंचालराया वयणं सुणाहि, मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥ २६ ॥
अहं पि जाणामि जहेह साहू, जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवन्ति, जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥ २७ ॥
हत्थिणपुरम्मि चित्ता, दट्ठूणं नरवइं महिड्ढियं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं, नियाणमसुहं कडं ॥ २८ ॥
तस्स मे अपडिकन्तस्स, इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ॥ २९ ॥
नागो जहा पंकजलावसन्नो, दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥ ३० ॥
अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।

उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति, दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥ ३१ ॥
जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी, तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥ ३२ ॥
न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी, गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावु, गच्छामि राय आमन्तिओ सि ॥ ३३ ॥
पंचालराया वि य बम्भदत्तो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे, अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥ ३४ ॥
चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो, उदग्गचारित्ततवो महेसी ।
अणुत्तरं संजमं पालइत्ता, अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥ ३५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ चित्तसम्भूइज्जं समत्तं ॥

॥ अह उसुयारिज्जं चोद्दहमं अज्झयणं ॥

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी, केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे, खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥ १ ॥
सकम्मसेसेण पुराकएणं, कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय, जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना ॥ २ ॥
पुमत्तमागम्म कुमार दो वी, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो, रायत्थ देवी कमलावई य ॥ ३ ॥
जाईजरामच्चुभयाभिभूया, बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा, दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥
पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स, सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं, तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥
ते कामभोगेसु असज्जमाणा, माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा, तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥
असासयं दट्ठु इमं विहारं, बहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो, आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥ ७ ॥
अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं, तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयन्ति, जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं, आरण्णगा होह मुणी पसत्था ॥ ९ ॥
सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं, मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
संतत्तभावं परितप्पमाणं, लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥ १० ॥

नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा ॥ ३ ॥ नो इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गन्थे । तं कहमिति चे आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोएज्ज निज्झाएज्जा ॥ ४ ॥ नो इत्थीण कुड्डन्तरसि वा दूसन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्द वा विलवियसद्दं वा सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थीण कुड्डन्तरसि व दूसन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयसद्द वा रुइयसद्द वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्द वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंक हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं कुड्डन्तरसि वा दूसन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्द वा थणियसद्द वा कन्दियसद्द वा विलवियसद्द वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥ ५ ॥ नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलिय अणुसरित्ता हवइ से निग्गन्थे त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गण्थे पुव्वरयं पुव्वकीलिय अणुसरेज्जा ॥ ६ ॥ नो पणीय आहार आहरित्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु पणीय आहार आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीय आहार आहारेज्जा ॥ ७ ॥ नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाण भोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयण आहारेज्जा ॥ ८ ॥ नो विभूसाणुवादी हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे आयरियाह । विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ तओ ण इत्थिजणेण अभिलसिज्जमाणस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे [illegible]
॥ ९ ॥ नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवादी हवइ से [illegible] ति चे । [illegible]
न्थस्स खलु सद्दरूवरसगन्धफासाणुवादिस्स बम्भयारिस्स [illegible] वा कंखा [illegible]
[illegible], भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा,

लिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवादी भवेज्जा से निग्गन्थे। दसमे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ ॥ १० ॥ भवन्ति इत्थ सिलोगा तंजहा—

जं विवित्तमणाइण्णं, रहियं इत्थि जणेण य बम्भचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निवेसए ॥ १ ॥
मणपल्हायजणणी, कामरागविवड्ढणी। बम्भचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥
समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं। बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥
अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लवियपेहियं। बम्भचेररओ थीणं, चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥ ४ ॥
कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणियकन्दियं। बम्भचेररओ थीणं, सोयगेज्झं विवज्जए ॥ ५ ॥
हासं किड्डं रइं दप्पं, सहसावित्तासियाणि य। बम्भचेररओ थीणं, नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥ ६ ॥
पणीयं भत्तपाणं तु, खिप्पं मयविवड्ढणं। बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥
धम्मलद्धं मियं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं। नाइमत्तं तु भुंजेज्जा, बम्भचेररओ सया ॥ ८ ॥
विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीरपरिमण्डणं। बम्भचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥
सद्दे रूवे य गन्धे य, रसे फासे तहेव य। पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥
आलओ थीजणाइण्णो, थीकहा य मणोरमा। संथवो चेव नारीणं, तासिं इन्दियदरिसणं ॥ ११ ॥
कूइयं रुइयं गीयं, हासभुत्तासियाणि य। पणीयं भत्तपाणं च, अइमायं पाणभोयणं ॥ १२ ॥
गत्तभूसणमिट्ठं च, कामभोगा य दुज्जया। नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥ १३ ॥
दुज्जए कामभोगे य, निच्चसो परिवज्जए। संकाथाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥ १४ ॥
धम्मारामरते चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही। धम्मारामरते दन्ते, बम्भचेरसमाहिए ॥ १५ ॥
देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा। बम्भयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करन्ति तं ॥ १६ ॥
एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए। सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण, सिज्झिस्सन्ति तहावरे ॥ १७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ बम्भचेरसमाहिठाणा समत्ता ॥ १६ ॥

॥ अह पावसमणिज्जं सत्तदहं अज्झयणं ॥

जे केइ उ पव्वइए नियण्ठे, धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं, विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥
सेज्जा दढा पाउरणम्मि अत्थि, उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं।
जाणामि जं वट्टई आउसु त्ति, किं नाम काहामि सुएण भन्ते ॥ २ ॥

जे केई पव्वइए, निद्दासीले पगामसो। भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥
आयरियउवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए। ते चेव खिंसई बाले, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ४ ॥
आयरियउवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पइ। अप्पडिपूयए थद्धे, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥
सम्मद्दमाणो पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य। असंजए संजयमन्नमाणो, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ६ ॥
संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकम्बलं। अप्पमज्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ७ ॥
दवदवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं। उल्लंघणे य चण्डे य, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ८ ॥

पडिलेहेइ पमत्ते, पउज्झइ पायकम्बल । पडिलेहा अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥
पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया । गुरुपरिभावए निच्च, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १० ॥
बहुमाई पमुहरे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे। असविभागी अचियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ११ ॥
विवाद च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा । वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १२ ॥
अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयई । आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥
ससरक्खपाए सुवई, सेज्ज न पडिलेहइ । सथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १४ ॥
दुद्धदहीविगईओ, आहारेइ अभिक्खण । अरए य तवोकम्मे, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १५ ॥
अत्थन्तम्मि य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खण। चोइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १६ ॥
आयरियपरिच्चाई, परपासण्डसेवए । गाणगणिए दुब्भूए, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १७ ॥
सय गेह परिचज्ज, परगेहसि वावरे । निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १८ ॥
सन्नाइ पिण्ड जेमेइ, नेच्छई सामुदाणिय । गिहिनिसेज्ज च वाहेइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १९ ॥

एयारिसे पचकुसीलसवुडे, रूवधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
अयसि लोए विसमेव गरहिए, न से इह नेव परत्थ लोए ॥ २० ॥
जे वज्जए एए सया उ दोसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयसि लोए अमय व पूइए, आराहए लोगमिण तहा पर ॥ २१ ॥

॥ त्ति बेमि ॥ इअ पावसमणिज्ज समत्त ॥ १७ ॥

॥ अह संजइज्ज अढारहम अज्झयण ॥

कम्पिल्ले नयरे राया, उदिण्णबलवाहणे । नामेण सजए नाम, मिगव्व उवणिग्गए ॥ १ ॥
हयाणीए गयाणीए, रथाणीए तहेव य । पायताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥
मिए छुहित्ता हयगओ, कम्पिल्लुज्जाण केसरे । भीए सन्ते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥ ३ ॥
अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे । सज्झायज्झाणसजुत्ते, धम्मज्झाण झियायइ ॥ ४ ॥
अप्फोवमण्डवम्मि, झायइ क्खवियासवे । तस्सागए मिग पास, वहेइ से नराहिवे ॥ ५ ॥
अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं। हए मिए उ पासित्ता, अणगार तत्थ पासई ॥ ६ ॥
अह राया तत्थ सम्भन्तो, अणगारो मणा हओ । मए उ मन्दपुण्णेण, रसगिद्धेण घन्तुणा ॥ ७ ॥
आस विसज्जइत्ताण, अणगारस्स सो निवो । विणएण वन्दए पाए भगव एत्थ मे खमे । ८ ॥
अह मोणेण सो भगव, अणगारे झाणमस्सिए । रायाण न पडिमन्तेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥ ९ ॥
सजओ अहमम्मीति, भगव वाहराहि मे । कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥
अभओ पत्थिवा तुब्भ, अभयदाया भवाहि य । अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसी ॥ ११ ॥
जया सव्व परिच्चज्ज, गन्तव्वमवसस्स ते । अणिच्चेजीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसी ॥ १२ ॥
जीविय चेव रूव च, विज्जुसंपाय चचल । जत्थ तं मुज्झसी रायं पेचत्थं नावबुज्झसे ॥ १३ ॥
दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बन्धवा । जीवन्तमणुजीवन्ति, मयं नाणुव्वयन्ति य ॥ १४ ॥

नीहरन्ति मयं पुत्ता, पितरं परमदुक्खिया । पितरो वि तहा पुत्ते, बन्धू रायं तवं चरे ॥ १५ ॥
तओ तेणज्जिए दव्वे, दारे य परिरक्खिए । कीलन्तिऽन्ने नरा रायं, हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥ १६ ॥
तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं । कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥ १७ ॥
सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अन्तिए । महया संवेगनिव्वेदं, समावन्नो नराहिवो ॥ १८ ॥
संजओ चइउं रज्जं, निक्खन्तो जिणसासणे । गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अन्तिए ॥ १९ ॥
चिच्चा रट्ठं पव्वइए, खत्तिए परिभासइ । जहा ते दीसई रूवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥ २० ॥
किं नामे किं गोत्ते, कस्सट्ठाए व माहणे । कहं पडियरसी बुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसी ॥ २१ ॥
संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो । गद्दभाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥ २२ ॥
किरियं अकिरियं विणयं, अन्नाणं च महामुणी । एएहिं चउहि ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासई ॥ २३ ॥
इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए । विज्जाचरणसंपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥ २४ ॥
पडन्ति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो । दिव्वं च गइं गच्छन्ति, चरित्ता धम्ममारियं ॥ २५ ॥
मायावुइयमेयं तु, मुसाभासा निरत्थिया । संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥ २६ ॥
सव्वेए विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया । विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पगं ॥ २७ ॥
अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे । जा सा पालिमहापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥ २८ ॥
से चुए बम्भलोगाओ, माणुस्सं भवमागए । अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥ २९ ॥
नाणारुइं च छन्दं च, परिवज्जेज्ज संजए । अणट्ठा जे य सव्वत्था, इयविज्जामणुसंचरे ॥ ३० ॥
पडिक्कमामि पसिणाणं, परमन्तेहिं वा पुणो । अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥ ३१ ॥
जं च मे पुच्छसी काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा । ताइं पाउकरे बुद्धे तं नाणं जिणसासणे ॥ ३२ ॥
किरियं च रोयई धीरे, अकिरियं परिवज्जए । दिट्ठीए दिट्ठीसम्पन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं ॥ ३३ ॥
एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थधम्मोवसोहियं । भरहो वि भारहं वासं, चेच्चा कामाइ पव्वए ॥ ३४ ॥
सगरो वि सागरन्तं, भरहवासं नराहिवो । इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाइ परिनिव्वुडे ॥ ३५ ॥
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पव्वज्जमब्भुवगओ, मघवं नाम महाजसो ॥ ३६ ॥
सणकुमारो मणुस्सिन्दो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे ॥ ३७ ॥
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । सन्ती सन्तिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३८ ॥
इक्खागरायवसभो, कुन्थू नाम नरीसरो । विक्खायकित्ती भगवं पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३९ ॥
सागरन्तं चइत्ताणं, भरहं नरवरीसरो । अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४० ॥
चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बलवाहणं । चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे ॥ ४१ ॥
एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माणनिसूरणो । हरिसेणो मणुस्सिन्दो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४२ ॥
अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई, दमं चरे । जयनामो जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४३ ॥
दसण्णरज्जं मुदियं, चइत्ताण मुणी चरे । दसण्णभद्दो निक्खन्तो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ । चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ४५ ॥
करकण्डू कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो । नमी राया विदेहेसु, गन्धारेसु य नग्गई ॥ ४६ ॥
एए नरिन्दवसभा, निक्खन्ता जिणसासणे । पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥ ४७ ॥

सोवीररायवसभो, चइत्ताण मुणी चरे। उदायणो पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४८ ॥
तहेव कासीराया, सेओसच्चपरक्कमे। कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥ ४९ ॥
तहेव विजओ राया, अणट्ठाकित्ति पव्वए। रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥ ५० ॥
तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा। महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥ ५१ ॥
कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे। एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥ ५२ ॥
अच्चन्तनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई। अतरिंसु तरन्तेगे, तरिस्सन्ति अणागया ॥ ५३ ॥
कहिं धीरे अहेऊहिं अत्ताण परियावसे। सव्वसंगविनिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥ ५४ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ संजइज्जं समत्तं ॥ १८ ॥

॥ मियापुत्तीय एगूणवीसइम अज्झयणं ॥

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए। राया बलभद्दि त्ति, मिया तस्सग्गमाहिसी ॥ १ ॥
तेसिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते त्ति विस्सुए। अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥
नन्दणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं। देवोदोगुन्दगे चेव, निच्चं मुइयमाणसो ॥ ३ ॥
मणिरयणकोट्टिमतले, पासायालोयणट्ठिओ। आलोएइ नगरस्स, चउक्क त्तियचच्चरे ॥ ४ ॥
अह तत्थ अइच्छन्तं, पासई समणसंजयं। तवनियमसंजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥
तं देहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ। कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ६ ॥
साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे। मोहं गयस्स सन्तस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥
जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए। सरई पोराणियं जाइं, सामण्णं च पुरा कयं ॥ ८ ॥
विसएहि अरज्जन्तो, रज्जन्तो संजमम्मि य। अम्मापियरमुवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥ ९ ॥
सुयाणि मे पंच महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु।
निव्विण्णकामो मि महण्णवाउ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ॥ १० ॥
अम्म ताय मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा। पच्छा कडुयविवागा, अणुबन्धदुहावहा ॥ ११ ॥
इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं। असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं ॥ १२ ॥
असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामहं। पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ॥ १३ ॥
माणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाण आलए। जरामरणघत्थम्मि, खणंपि न रमामहं ॥ १४ ॥
जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य। अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसन्ति जन्तवो ॥ १५ ॥
खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बन्धवा। चइत्ताण इमं देहं, गन्तव्वमवसस्स मे ॥ १६ ॥
जह किम्पागफलाणं, परिणामो न सुन्दरो। एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुन्दरो ॥ १७ ॥
अद्धाणं जो महन्तं तु, अप्पाहेओ पवज्जई। गच्छन्तो सो दुही होइ, छुहातण्हाए पीडिओ ॥ १८ ॥
एवं धम्मं अकाऊण, जो गच्छइ परं भवं। गच्छन्तो सो दुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥ १९ ॥
अद्धाणं जो महन्तं तु, सपाहेओ पवज्जई। गच्छन्तो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥ २० ॥

एवं धम्म पि काऊण, जो गच्छइ पर भव। गच्छन्तो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ॥ २१ ॥
जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू। सारभण्डाणि नीणेइ, असार अवउज्झइ ॥ २२ ॥
एव लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य। अप्पाण तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥ २३ ॥
त बिन्तम्मापियरो, सामण्ण पुत्त दुच्चर। गुणाण तु सहस्साइ, धारेयव्वाइ भिक्खुणा ॥ २४ ॥
समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे। पाणाइवायविरई, जावज्जीवाए दुक्कर ॥ २५ ॥
निचकालप्पमत्तेण, मुसावायविवज्जण। भासियव्व हिय सच्च, निच्चाउत्तेण दुक्कर ॥ २६ ॥
दन्तसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जण। अणवज्जेसणिज्जस्स, गिहणा अवि दुक्कर ॥ २७ ॥
विरई अबम्भचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा। उग्ग महव्वय बम्भ, धारेयव्व सुदुक्कर ॥ २८ ॥
धणधन्नपेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जण। सव्वारम्भपरिच्चाओ, निम्ममत्त सुदुक्कर ॥ २९ ॥
चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा। सन्निहीसचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्कर ॥ ३० ॥
छुहा तण्हा य सीउण्ह दसमसगवेयणा। अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जलमेव य ॥ ३१ ॥
तालणा तज्जणा चेव, वहबधपरीसहा। दुक्ख भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥ ३२ ॥
कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो। दुक्ख धम्मव्वय घोर, धारेउ य महप्पणो ॥ ३३ ॥
सुहोइओ तुम पुत्ता, सुकुमालो सुमज्जिओ। न हु सी पभू तुम पुत्ता, सामण्णमणुपालिया ॥ ३४ ॥
जावज्जीवमविस्सामो, गुणाण तु महब्भरो। गुरु उ लोहभारुव्व, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥ ३५ ॥
आगासे गगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो। बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥ ३६ ॥
वालुया कवलो चेव, निरस्साए उ सजमे। असिधारागमण चेव, दुक्कर चरिउ तवो ॥ ३७ ॥
अही वेगन्तदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त दुक्कर। जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्कर ॥ ३८ ॥
जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउ होइ सुदुक्करा। तहा दुक्कर करेउ जे, तारुण्णे समणत्तण ॥ ३९ ॥
जहा दुक्खं भरेउ जे, होइ वायस्स कोत्थलो। तहा दुक्खं करेउ जे, कीवेण समणत्तण ॥ ४० ॥
जहा तुलाए तोलेउ, दुक्करो मन्दरो गिरी। तहा निहुयनीसक, दुक्कर समणत्तण ॥ ४१ ॥
जहा भुयाहिं तरिउ, दुक्कर रयणायरो। तहा अणुवसन्तेण, दुक्कर दमसागरो ॥ ४२ ॥
भुज माणुस्सए भोगे, पचलक्खणए तुम। भुत्तभोगी तओ जाया, पच्छा धम्म चरिस्ससि ॥ ४३ ॥
सो बेइ अम्मापियरो, एवमेय जहा फुड। इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचि वि दुक्कर ॥ ४४ ॥
सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अनन्तसो। मए सोढाओ भीमाओ, असइ दुक्खभयाणि य ॥ ४५ ॥
जरामरणकन्तारे, चाउरन्ते भयागरे। मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥ ४६ ॥
जहा इह अगणी उण्हो, एत्तोऽणन्तगुणे तहिं। नरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए ॥ ४७ ॥
जहा इह सीय, एत्तोऽणन्तगुणे तहिं। नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ॥ ४८ ॥
कन्दन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो। हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥ ४९ ॥
महादवग्गिसकासे, मरुम्मि वइरवालुए। कदम्बवालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥ ५० ॥
रसन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्ढ बद्धो अबन्धवो। करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥ ५१ ॥
अइतिक्खकण्टगाइण्णे, तुगे सिम्बलिपायवे। खेविय पासबद्धेण, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्कर ॥ ५२
महाजन्तेसु उच्छू वा, आरसन्तो सुभेरव। पीडिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणन्तसो ॥ ५३ ॥

कूवन्तो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य। फाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरन्तो अणेगसो ॥ ५४ ॥
असीहि अयसिवण्णाहि, भल्लेहिं पट्टिसेहि य। छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, ओइण्णो पावकम्मुणा ॥ ५५ ॥
अवसो लोहरहे जुत्तो, जलन्ते समिलाजुए। चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥ ५६ ॥
हुयासणे जलन्तम्मि, चियासु महिसो विव। दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविओ ॥ ५७ ॥
बला संडासतुण्डेहिं, लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं। विलुत्तो विलवन्तो हं, ढंकगिद्धेहिऽणन्तसो ॥ ५८ ॥
तण्हाकिलन्तो धावन्तो, पत्तो वेयरणिं नदिं। जलं पाहिं ति चिन्तन्तो, खुरधाराहिं विवाइओ ॥ ५९ ॥
उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं। असिपत्तेहिं पडन्तेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥ ६० ॥
मुग्गरेहिं मुसढीहिं, सूलेहिं मुसलेहिं य। गया संभग्गगत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥ ६१ ॥
खुरेहिं तिक्खधारेहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य। कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ॥ ६२ ॥
पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं। वाहिओ बद्धरुद्धो वा, बहू चेव विवाइओ ॥ ६३ ॥
गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं। उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणन्तसो ॥ ६४ ॥
वीदंसएहि जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव। गहिओ लग्गो बद्धो य, मारिओ य अणन्तसो ॥ ६५ ॥
कुहाडफरसुमाईहिं, वड्ढईहिं दुमो विव। कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणन्तसो ॥ ६६ ॥
चवेडमुट्ठिमाईहिं, कुमारेहिं अयं पिव। ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणन्तसो ॥ ६७ ॥
तत्ताइं तम्बलोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य। पाइओ कलकलन्ताइं, आरसन्तो सुभेरवं ॥ ६८ ॥
तुहं पियाइं मंसाइं, खण्डाइं सोल्लगाणि य। खाविओ मिममंसाइं, अग्गिवण्णाइऽणेगसो ॥ ६९ ॥
तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य। पाइओ मि जलन्तीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥ ७० ॥
निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य। परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेदिता मए ॥ ७१ ॥
तिव्वचण्डप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा। महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेदिता मए ॥ ७२ ॥
जारिसा माणुसे लोए, ताया दीसन्ति वेयणा। एत्तो अणन्तगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥ ७३ ॥
सव्वभवेसु अस्साया, वेयणा वेदिता मए। निमेसन्तरमित्तं पि, जं साता नत्थि वेयणा ॥ ७४ ॥
तं बिन्तम्मापियरो, छन्देणं पुत्त पव्वया। नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥ ७५ ॥
सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं। पडिकम्मं को कुणई, अरण्णे मियपक्खिणं ॥ ७६ ॥
एगब्भूए अरण्णे व, जहा उ चरई मिगे। एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥ ७७ ॥
जया मिगस्स आयंको, महारण्णम्मि जायई। अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छई ॥ ७८ ॥
को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छई सुहं। को से भत्तं च पाणं वा, आहरित्तु पणामए ॥ ७९ ॥
जया से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं। भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ॥ ८० ॥
खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य। मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छई मिगचारियं ॥ ८१ ॥
एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए। मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिसं ॥ ८२ ॥

जहा मिगे एगे अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोयरे य।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥ ॥ ८३ ॥

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं। अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तहा ॥ ८४ ॥
मियचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं। तुब्भेहिं अब्भणुन्नाओ, गच्छ पुत्त जहासुहं ॥ ८५ ॥

एव सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविह । ममत्त छिन्दई ताहे, महानागो व कचुय ॥ ८६ ॥
इड्ढी वि च मित्ते य, पुत्तदार च नायओ । रेणुय व पडे लग्ग, निध्धुत्ताण निग्गओ ॥ ८७ ॥
पचमहव्वयजुत्तो, पंचहि समिओ तिगुत्तिगुत्तो य । सब्भिन्तरबाहिरओ, तवोकम्मसि उज्जुओ ॥ ८८ ॥
निम्ममो निरहकारो, निस्सगो चत्तगारवो । समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥ ८९ ॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा । समो निन्दापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥ ९० ॥
गारवेसु कसाएसु, दण्डसल्लभएसु य । नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबन्धणो ॥ ९१ ॥
अणिस्सिओ इह लोए, परलोए अणिस्सिओ । वासीचन्दणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥ ९२ ॥
अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवे । अज्झप्पज्झाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणे ॥ ९३ ॥
एव नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य । भावणाहि य सुद्धाहिं, सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥ ९४ ॥
बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया । मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तर ॥ ९५ ॥
एव करन्ति संबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा । विणिअट्टन्ति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥ ९६ ॥

महापभावस्स महाजसस्स, मियापुत्तस्स निसम्म भासिय ।
तवप्पहाण चरियं च उत्तमं, गइप्पहाण च तिलोगविस्सुतं ॥ ॥ ९७ ॥
वियाणिया दुक्खविवद्धण धण, ममत्तबन्ध च महाभयावह ।
सुहावह धम्मधुर अणुत्तर, धारेज्ज निव्वाणगुणावहं मह ॥ ॥ ९८ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ मियापुत्तीयं समत्त ॥ १९ ॥

॥ अह महानियण्ठिज्जं वीसइमं अज्झयणं ॥

सिद्धाण नमो किच्चा, सजयाण च भावओ । अत्थधम्मगई तच्च अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥
पभूयरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो । विहारजत्त निज्जाओ, मण्डिकुच्छिंसि चेइए ॥ २ ॥
नाणादुमलयाइण्णं, नाणापक्खिनिसेवियं । नाणाकुसुमसछन्न, उज्जाण नन्दणोवम ॥ ३ ॥
तत्थ सो पासई साहुं, सजयं सुसमाहिय । निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमाल सुहोइयं ॥ ४ ॥
तस्स रूव तु पासित्ता, राइणो तम्मि सजए । अच्चन्तपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥
अहो वण्णो अहो रूव, अहो अज्जस्स सोमया । अहो खन्ती अहो मुत्ती, अहो भोगे असगया ॥ ६ ॥
तस्स पाए उ वन्दित्ता, काऊण य पयाहिण । नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छई ॥ ७ ॥
तरुणो सि अज्जो पव्वइओ, भोगकालम्मि सजया । उवट्ठिओ सि सामण्णे, एयमट्ठ सुणेमि ता ॥ ८ ॥
अणाहोमि महाराय, नाहो मज्झ न विज्जई । अणुकम्पग सुहिं वावि, कचि नाभिसमेमहं ॥ ९ ॥
तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो । एव ते इड्ढिमन्तस्स, कहं नाहो न विज्जई ॥ १० ॥
होमि नाहो भयताणं, भोगे भुजाहि सजया । मित्तनाईपरिवुडो, माणुस्स खु सुदुल्लहं ॥ ११ ॥
अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया मगहाहिवा । अप्पणा अणाहो सन्तो, कस्स नाहो भविस्ससि ॥ १२ ॥
एवं वुत्तो नरिन्दो सो, सुसभन्तो सुविम्हिओ । वयण अस्सुयपुव्व, साहुणा विम्हयन्निओ ॥ १३ ॥
अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुर अन्तेउर च मे । भुजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरियं च मे ॥ १४

एरिसे सम्पयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए । कहं अणाहो भवइ, मा हु भन्ते मुसं वए ॥ १५ ॥
न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा। जहा अणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा ॥ १६ ॥
सुणेह मे महाराय, अव्वक्खित्तेण चेयसा । जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥ १७ ॥
कोसम्बी नाम नयरी, पुराण पुरभेयणी । तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसचओ ॥ १८ ॥
पढमे वए महाराय, अउला मे अच्छिवेयणा । अहोत्था विउलो डाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥ १९ ॥
सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरन्तरे । आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥ २० ॥
तियं मे अन्तरिच्छं च, उत्तमगं च पीडई । इन्दासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥ २१ ॥
उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जामन्ततिगिच्छया । अधीया सत्थकुसला, मन्तमूलविसारया ॥ २२ ॥
ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति, चाउप्पायं जहाहियं । न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥ २३ ॥
पिया मे सव्वसारंपि, दिज्जाहि मम कारणा । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ २४ ॥
माया य मे महाराय, पुत्तसोगदुहट्टिया । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ २५ ॥
भायरो मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा। न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥ २६ ॥
भइणीओ मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा। न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया । २७ ॥
भारिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुव्वया । अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिचई ॥ २८ ॥
अन्नं च पाणं ण्हाणं च, गन्धमल्लविलेवणं । मए नायमणायं वा, सा बाला नेव भुंजई ॥ २९ ॥
खणं पि मे महाराय, पासाओ मे न फिट्टई । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ ३० ॥
तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो । वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणन्तए ॥ ३१ ॥
सइं च जइ मुच्चेज्जा, वेयणा विउला इओ । खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वए अणगारियं ॥ ३२ ॥
एवं च चिन्तइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा । परियत्तन्तीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥
तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बन्धवे । खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वइओऽणगारियं ॥ ३४ ॥
तो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य । सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाण थावराण य ॥ ३५ ॥
अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली । अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नन्दणं वणं ॥ ३६ ॥
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुक्खाण य सुहाण य। अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥ ३७ ॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
नियण्ठधम्मं लहीयाण वी जहा, सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥ ३८ ॥
जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्मं च नो फासयई पमाया ।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ बन्धणं से ॥ ३९ ॥
आउत्तया जस्स न अत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए ।
आयाणनिक्खेवदुगंछणाए, न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥ ४० ॥
चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे ।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए ॥ ४१ ॥
पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे, अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥ ४२ ॥

कुसीललिंग इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
असजए संजयलप्पमाणे, विणिग्घायमागच्छइ से चिरपि ॥ ४३ ॥
विस तु पीयं जह कालकूड, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
एसो वि धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥ ४४ ॥
जे लक्खण सुविण पउंजमाणे, निमित्तकोऊहलसपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी, न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥ ४५ ॥
तमं तमेणेव उ से असीले, सया दुही विप्परियामुवेइ ।
सधावई नरगतिरिक्खजोणिं, मोण विराहेत्तु असाहुरूवे ॥ ४६ ॥
उद्देसिय कीयगडं नियाग, न मुचई किं च अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पाव ॥ ४७ ॥
न त अरी कठछेत्ता करेइ, ज से करे अप्पणिया दुरप्पया ।
से नाहइ मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥
निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तमट्ठ विवज्जासमेइ ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए, दुहओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ॥ ४९ ॥
एमेव हा छन्दकुसीलरूवे, मग्ग विराहेत्तु जिणुत्तमाण ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा, निरट्ठसोया परियावमेइ ॥ ५० ॥
सोचाण मेहावि सुभासियं इमं, अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महानियण्ठाण वए पहेण ॥ ५१ ॥
चरित्तमायारगुणन्निए तओ, अणुत्तरं संजम पालियाण ।
निरासवे संखवियाण कम्मं, उवेइ ठाण विउलुत्तमं धुवं ॥ ५२ ॥
एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे, महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं, से कहेई महया वित्थरेण ॥ ५३ ॥
तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहत्त जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥ ५४ ॥
तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्स जम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य, जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाण ॥ ५५ ॥
तं सि नाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण संजया ।
खामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिउं ॥ ५६ ॥
पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घाओ जो कओ ।
निमन्तिया य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ॥ ५७ ॥
एवं थुणित्ताण स रायसीहो, अणगारसीहं परमाइ भत्तीए ।
सओरोहो सपरियणो सबन्धवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥ ५८ ॥
ऊससियरोमकूवो, काऊण य पयाहिणं ।

अभिवन्दिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो ॥ ५९ ॥
इयरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥ ६० ॥
त्ति बेमि ॥ इअ महानियण्ठिज्जं समत्तं ॥

॥ अह समुद्दपालीयं एगवीसइमं अज्झयणं ॥

चम्पाए पालिए नाम, सावए आसि वाणिए। महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥ १ ॥
निग्गन्थे पावयणे, सावए से वि कोविए। पोएण ववहरन्ते, पिहुण्डं नगरमागए ॥ २ ॥
पिहुण्डे ववहरन्तस्स, वाणिओ देइ धूयरं। तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥
अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्मि पसवई। अह बालए तहिं जाए, समुद्दपालि त्ति नामए ॥ ४ ॥
खेमेण आगए चम्पं, सावए वाणिए घरं। संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥ ५ ॥
बावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइकोविए। जोव्वणेण य संपन्ने, सुरूवे पियदंसणे ॥ ६ ॥
तस्स रूववइं भज्जं, पिया आणेइ रूविणिं। पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुन्दओ जहा ॥ ७ ॥
अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ। वज्झमण्डणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥
तं पासिऊण संवेगं, समुद्दपालो इणमब्बवी। अहोऽसुभाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ॥ ९ ॥
संबुद्धो सो तहिं भगवं, परमसंवेगमागओ। आपुच्छऽम्मापियरो, पव्वए अणगारियं ॥ १० ॥

जहित्तु सग्गन्थमहाकिलेसं, महन्तमोहं कसिणं भयावहं ।
परियायधम्मं चभिरोयएज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥ ११ ॥
अहिंससच्चं च अतेणगं च, तत्तो य बम्भं अपरिग्गहं च ।
पडिवज्जिया पञ्च महव्वयाणि, चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विदू ॥ १२ ॥
सव्वेहि भूएहिं दयाणुकम्पी, खन्तिक्खमे संजयबम्भयारी ।
सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो, चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥ १३ ॥
कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिय अप्पणो य ।
सीहो व सद्देण न सन्तसेज्जा, वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥ १४ ॥
उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा, न यावि पूयं गरहं च संजए ॥ १५ ॥
अणेगछन्दामिह माणवेहिं, जे भावओ संपगरेइ भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥
परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, संगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥
सीओसिणा दंसमसा य फासा, आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा, रयाइं खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥ १८ ॥

पहाय राग च तहेव दोस, मोह च भिक्खू सतत वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥ १९ ॥
अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पूय गरह च सजए ।
स उज्जभाव पडिवज्ज, सजए, निव्वाणमग्ग विरए उवेइ ॥ २० ॥
अरइरइसहे पहीणसथवे, विरए आयहिए पहाणव ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥
विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई, निरोवलेवाइ असथडाइ ।
इसीहि चिण्णाइ महायसेहिं, काएण फासेज्ज परीसहाइ ॥ २२ ॥
सन्नाणनाणोवगए महेसी, अणुत्तर चरिउ धम्मसचय ।
अणुत्तरे नाणधरे जससी, ओभासई सूरिए वन्तलिक्खे ॥ २३ ॥
दुविह खवेऊण य पुण्णपाव, निरगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्द व महाभवोघ, समुद्दपाले अपुणागम गए ॥ २४ ॥
त्ति वेमि ॥ इअ समुद्दपालीयं समत्त ॥

॥ अह रहनेमिज्जं बावीसइम अज्झयणं ॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए । वसुदेवु त्ति नामेण, रायलक्खणसजुए ॥ १ ॥
तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा । तासिं दोण्ह दुवे पुत्ता, इट्ठा रामकेसवा ॥ २ ॥
सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए । समुद्दविजए नाम, रायलक्खणसजुए ॥ ३ ॥
तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो । भगव अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥
सो ऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खणस्सरसजुओ । अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥
वज्जरिसहसघयणो, समचउरसो झसोयरो । तस्स रायमईकन्न, भज्ज जायइ केसवो ॥ ६ ॥
अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी । सव्वलक्खणसपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पभा ॥ ७ ॥
अहाह जणओ तीसे, वासुदेव महिड्ढिय । इहागच्छउकुमारो, जा से कन्न ददामि हं ॥ ८ ॥
सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कयकोउयमगलो । दिव्वजुयलपरिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥
मत्त च गन्धहत्थिं, वासुदेवस्स जेट्ठगं । आरूढो सोहए अहिय, सिरे चूडामणि जहा ॥ १० ॥
अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिए । दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥ ११ ॥
चउरगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कम । तुरियाण सन्निनाएण, दिव्वेण गगण फुसे ॥ १२ ॥
एयारिसाए इड्ढीए, जुत्तीए उत्तमाइ य । नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुगवो ॥ १३ ॥
अह सो तत्थ निज्जन्तो, दिस्स पाणे भयद्दुए । वाडेहिं पजरेहिं च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥
जीवियन्तं तु सम्पत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए । पासेत्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी ॥ १५ ॥
कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो । वाडेहिं पजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छहिं ॥ १६ ॥
अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो । तुज्झं विवाहकज्जम्मि, भोयावेउ बहु जण ॥ १

सोऊण तस्स वयण, बहुपाणिविणासणं। चिन्तेइ से महापन्नो, साणुक्कोसे जिए हिउ ॥ १८ ॥
जइ मज्झ कारणा एए, हम्मन्ति सुबहू जिया। न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई ॥ १९ ॥
सो कुण्डलाण जुयल, सुत्तग च महायसो। आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥ २० ॥
मणपरिणामे य कए, देवा य जहोइयं समोइण्णा। सव्वड्ढीइ सपरिसा, निक्खमण तस्स काउ जे ॥ २१ ॥
देवमणुस्सपरिवुडो सीयारयण तओ समारूढो, निक्खमिय वारगाओ, रेवयम्मि ट्ठिओ भगव ॥ २२ ॥
उज्जाणं सपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ। साहस्सीए परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥ २३ ॥
अह से सुगन्धगन्धीए, तुरियं मउकुंचिए। सयमेव लुचई केसे, पचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥ २४ ॥
वासुदेवो य ण भणइ लुत्तकेस जिइन्दिय। इच्छियमणोरहं तुरियं, पावसू त दमीसरा ॥ २५ ॥
नाणेणं दसणेण च, चरित्तेण तहेव य। खन्तीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ॥ २६ ॥
एव ते रामकेसवा, दसारा य बहू जणा। अरिट्ठणेमिं वन्दित्ता, अभिगया बारगापुरिं ॥ २७ ॥
सोऊण रायकन्ना, पव्वज्ज सा जिणस्स उ। नीहासा य निराणन्दा, सोगेण उ समुत्थिया ॥ २८ ॥
राईमई विचिन्तेइ, धिरत्थु मम जीविय। जा ह तेण परिच्चत्ता, सेय पव्वइउ मम ॥ २९ ॥
अह सा भमरसन्निभे, कुच्चफणगसाहिए। सयमेव लुचई केसे, धिइमन्ता ववस्सिया ॥ ३० ॥
वासुदेवो य ण भणइ, लुत्तकेस जिइन्दिय। ससारसागर घोर, तर कन्ने लहुं लहु ॥ ३१ ॥
सा पव्वइया सन्ती, पव्वावेसी तहिं बहु सयण परियणं चेव, सीलवन्ता बहुस्सुया ॥ ३२ ॥
गिरिं रेवतय जन्ती, वासेणुल्ला उ अन्तरा। वासन्ते अन्धयारम्मि, अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥ ३३ ॥
चीवराइ विसारन्ती, जहा जाय त्ति पासिया। रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥ ३४ ॥
भीया य सा तहिं दट्ठु, एगन्ते सजय तय। बाहाहिं काउ सगोप्फ, वेवमाणी निसीयई ॥ ३५ ॥
अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयगओ। भीय पवेविय दट्ठु, इमं वक्क उदाहरे ॥ ३६ ॥
रहनेमी अहं भद्दे, सुरूवे चारुभासिणी। मम भयाहि सुयणु, न ते पीला भविस्सई ॥ ३७ ॥
एहि ता भुजिमो भोए, माणुस्स खु सुदुल्लह। भुत्तभोगी पुणो पच्छा, जिणमग्ग चरिस्समो ॥ ३८ ॥
दट्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुज्जोयपराजिय। राईमई असम्भन्ता, अप्पाण सवरे तहिं ॥ ३९ ॥
अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमव्वए। जाई कुल च सील च, रक्खमाणी तयं वए ॥ ४० ॥
जइ सि रूवेण वेसमणो, ललिएण नलकुबरो। तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्ख पुरदरो ॥ ४१ ॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो त जीवियकारणा। वन्त इच्छसि आवाउ, सेय ते मरण भवे ॥ ४२ ॥
अहं च भोगरायस्स, त च सि अन्धगवण्हिणो। मा कुले गन्धणा होमो, सजम निहुओ चर ॥ ४३ ॥
जइ त काहिसि भाव, जा जा दच्छसि नारिओ। वायाविद्धो व हढो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ४४ ॥
गोवालो भण्डवालो वा, जहा तद्दव्वणिस्सरो। एव अणिस्सरो त पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥ ४५ ॥
तीसे सो वयण सोच्चा, सजयाए सुभासिय। अकुसेण जहा नागो, धम्मे सपडिवाइओ ॥ ४६ ॥
मणगुत्तो वायगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिए। सामण्ण निच्चल फासे, जावज्जीव दढव्वओ ॥ ४७ ॥
उग्ग तव चरित्ताण, जाया दोण्णि वि केवली। सव्व कम्म खवित्ताण, सिद्धिं पत्ता अणुत्तर ॥ ४८ ॥
एव करेन्ति सबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा। विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥ ४९ ॥

त्ति बेमि ॥ रहनेमिज्ज समत्त ॥

॥ अह केसिगोयमिज्जं तेवीसइमं अज्झयण ॥

जिणे पासि त्ति नामेण, अरहा लोगपूइओ । संबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥ १ ॥
तस्स लोगपदीवस्स, आसि सीसे महायसे । केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥
ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीयन्ते, सावत्थिं पुरमागए ॥ ३ ॥
तिंदुयं नाम उज्जाणं, तम्मिं नगरमण्डले । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥
अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे । भगवं वद्धमाणि त्ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥ ५ ॥
तस्स लोगपदीवस्स आसि सीसे महायसे । भगवं गोयमे नामं, विज्जाचरणपारए ॥ ६ ॥
बारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीयन्ते, से वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥
कोट्ठगं नाम उज्जाणं, तम्मी नगरमण्डले । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ८ ॥
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे । उभओ वि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥ ९ ॥
उभओ सीससंघाणं, संजयाणं तवस्सिणं, । तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना, गुणवन्ताण ताइणं ॥ १० ॥
केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो । आयारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ॥ ११ ॥
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥ १२ ॥
अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो । एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ॥ १३ ॥
अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्कियं । समागमे कयमई, उभओ केसिगोयमा ॥ १४ ॥
गोयमे पडिरूवन्नू, सीससंघसमाउले । जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो, तिन्दुयं वणमागओ ॥ १५ ॥
केसी कुमारसमणे, गोयमं दिस्समागयं । पडिरूवं पडिवत्तिं सम्मं संपडिवज्जई ॥ १६ ॥
पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि य । गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥ १७ ॥
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे । उभओ निसण्णा सोहन्ति, चन्दसूरसमप्पभा ॥ १८ ॥
समागया बहू तत्थ, पासण्डा कोउगा मिया । गिहत्थाण अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥ १९ ॥
देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा । अदिस्साण च भूयाणं, आसी तत्थ समागमो ॥ २० ॥
पुच्छामि ते महाभाग, केसी गोयममब्बवी । तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ २१ ॥
पुच्छ भन्ते जहिच्छं ते, केसिं गोयममब्बवी । तओ केसी अणुन्नाए, गोयमं इणमब्बवी ॥ २२ ॥
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥ २३ ॥
एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं । धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ॥ २४ ॥
तओ केसिं बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी । पन्ना समिक्खए धम्मतत्तं तत्तविणिच्छियं ॥ २५ ॥
पुरिमा उज्जुजडा उ, वक्कजडा य पच्छिमा । मज्झिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥ २६ ॥
पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ । कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसोज्झो सुपालओ ॥ २७ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ २८ ॥
अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा ॥ २९ ॥
एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं । लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ॥ ३० ॥

केसिमेव वुवाण तु, गोयमो इणमब्ववी। विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥ ३१ ॥
पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं। जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपओयण ॥ ३२ ॥
अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसब्भूयसाहणा। नाण च दसण चेव, चरित्त चेव निच्छए ॥ ३३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे समओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ॥ ३४ ॥
अणेगाण सहस्साण, मज्झे चिट्ठसि गोयमा। ते य ते अहिगच्छन्ति, कह ते निज्जिया तुमे ॥ ३५ ॥
एगे जिए जिया पच, पच जिए जिया दस। दसहा उ जिणित्ताण, सव्वसत्तु जिणामह ॥ ३६ ॥
सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयम मब्ववी। तओ केसिं वुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥
एगप्पा अजिए सत्तु, कसाया इन्दियाणि य। ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अह मुणी ॥ ३८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे समओ इमो, अन्नो वि संसओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ३९ ॥
दीसन्ति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो। मुक्कपासो लहुब्भूओ, कह विहरसी मुणी ॥ ४० ॥
ते पासे सव्वसो छित्ता, निहन्तूण उवायओ। मुक्कपासो लहुब्भूओ, कह विहरामि अह मुणी ॥ ४१ ॥
पासा य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्ववी। केसिमेवं वुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ४२ ॥
रागद्दोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयकरा। ते छिन्दित्ता जहानाय, विहरामि जहक्कमं ॥ ४३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ॥ ४४ ॥
अन्तोहिययसभूया, लया चिट्ठइ गोयमा। फलेइ विसभक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं ॥ ४५ ॥
त लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं। विहरामि जहानाय, मुक्को मि विसभक्खणं ॥ ४६ ॥
लया य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव वुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ४७ ॥
भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया। तमुद्धिचा जहानाय, विहरामि जहासुहं ॥ ४८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो, मे समओ इमो। अन्नो वि समओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ४९ ॥
सपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा। जे डहन्ति सरीरत्थे, कहं विज्झाविया तुमे ॥ ५० ॥
महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तम। सिंचामि सययं देह, सित्ता नो व डहन्ति मे ॥ ५१ ॥
अग्गी य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव वुवतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥
कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुयसीलतवो जल। सुयधाराभिहया सन्ता, भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥ ५३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे समओ। अन्नो वि संसओ मज्झ, तं मे कहसु गोयमा ॥ ५४ ॥
अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई। जसि गोयममारूढो, कह तेण न हीरसि ॥ ५५ ॥
पधावन्त निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं। न मे गच्छइ उम्मग्ग, मग्ग च पडिवज्जई ॥ ५६ ॥
आसे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव वुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ५७ ॥
मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई। त सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कन्थगं ॥ ५८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे समओ इमो। अन्नो वि समओ मज्झ, तं मे कहसु गोयमा ॥ ५९ ॥
कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासन्ति जन्तुणो। अद्धाणे कह वट्टन्ते, त न नाससि गोयमा ॥ ६० ॥
जे य मग्गेण गच्छन्ति, जे य उम्मग्गपट्ठिया। ते सव्वे वेइया मज्झ, तो न नस्सामह मुणी ॥ ६१ ॥
मग्गे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव वुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ६२ ॥
कुप्पवयणपासण्डी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिया। सम्मग्ग तु जिणक्खाय, एस मग्गे हि उत्तमे ॥ ६३ ॥

साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, तं मे कहसु गोयमा ॥ ६४ ॥
महाउदगवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिण। सरण गई पइट्ठा य, दीव क मन्नसी मुणी ॥ ६५ ॥
अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ। महाउदगवेगस्स, गई तत्थ न विज्जई ॥ ६६ ॥
दीवे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव वुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ६७ ॥
जरामरणवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिण। धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तम ॥ ६८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ६९ ॥
अण्णवसि महोहसि, नाना विपरिधावई। जसि गोयममारूढो, कह पार गमिस्ससि ॥ ७० ॥
जा उ सस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी। जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥
नावा य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव वुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ७२ ॥
सरीरमाहु नाव त्ति, जीवे वुच्चइ नाविओ। ससारो अण्णवो वुत्तो, ज तरति महेसिणो ॥ ७३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ७४ ॥
अन्धयारे तमे घोरे, चिट्ठन्ति पाणिणो बहू। को करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥ ७५ ॥
उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयपभकरो। सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥ ७६ ॥
भाणू य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव वुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ७७ ॥
उग्गओ खीणससारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो। सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥ ७८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ७९ ॥
सारीरमाणसे दुक्खे, वज्झमाणाण पाणिण। खेम सिवमणाबाह, ठाण किं मन्नसी मुणी ॥ ८० ॥
अत्थि एग धुवं ठाण, लोगग्गम्मि दुरारुह। जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥ ८१ ॥
ठाणे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव वुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ८२ ॥
निव्वाण ति अबाह ति, सिद्धी लोगग्गमेव य। खेम सिव अणाबाह, ज चरति महेसिणो ॥ ८३ ॥
तं ठाण सासय वास, लोयग्गम्मि दुरारुह। ज सपत्ता न सोयन्ति, भवोहन्तकरा मुणी ॥ ८४ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। नमो ते ससयातीत, सव्वसुत्तमहोयही ॥ ८५ ॥
एव तु ससए छिन्ने, केसी घोरपरक्कमे। अभिवन्दित्ता सिरसा, गोयम तु महायस ॥ ८६ ॥
पचमहव्वयधम्म, पडिवज्जइ भावओ। पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥
केसीगोयमओ निच्च, तम्मि आसि समागमे। सुयसीलसमुक्कसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥ ८८ ॥
तोसिया परिसा सव्वा, सम्मग्ग समुवट्ठिया। सथुया ते पसीयन्तु भयव केसिगोयमे ॥ ८९ ॥

त्ति बेमि ॥ केसिगोयमिज्ज समत्त ॥ २३ ॥

॥ अह समिईओ चउवीसइम अज्झयण ॥

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य। पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तीउ आहीया ॥ १ ॥
इरियाभासेसणादाणे, उच्चारे समिई इय। मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती य अट्ठमा ॥ २ ॥
एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया। दुवालसग जिणक्खायं, माय जत्थ उ पवयण ॥ ३ ॥
आलम्बणेण कालेण, मग्गेण जयणाय य। चउकारणपरिसुद्ध, सजए इरियं रिए ॥ ४ ॥
तत्थ आलम्बण नाण दंसणं चरण तहा। काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥ ५ ॥
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा। जायणा चउव्विहा वुत्ता, त मे कित्तयओ सुण ॥ ६ ॥
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्त च खेत्तओ। कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥ ७ ॥
इन्दियत्थे विवज्जित्ता, सज्झाय चेव पञ्चहा। तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रिय रिए ॥ ८ ॥
कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया। हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य ॥ ९ ॥
एयाइ अट्ठ ठाणाइ, परिवज्जित्तु सजए। असावज्ज मिय काले, भास भासिज्ज पन्नव ॥ १० ॥
गवेसणाए गहणे य, परिभोगेसणाय य। आहारोवहिसेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए ॥ ११ ॥
उग्गमुप्पायण पढमे, बीए सोहेज्ज एसणं। परिभोयम्मि चउक्क, विसोहेज्ज जयं जई ॥ १२ ॥
ओहोवहोवग्गहिय, भण्डग दुविह मुणी। गिण्हन्तो निक्खिवन्तो वा, पउंजेज्ज इम विहिं ॥ १३ ॥
चक्खुसा पडिलेहित्त, पमज्जेज्ज जय जई। आइए निक्खिवेज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥ १४ ॥
उच्चार पासवण, खेल सिंघाणजल्लिय। आहार उवहिं देह, अन्न वावि तहाविह ॥ १५ ॥
अणावायमसलोए, अणावाए चेव होइ सलोए। आवायमसलोए, आवाए चेव सलोए ॥ १६ ॥
अणावायमसलोए, परस्सणुवघाइए। समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ॥ १७ ॥
विच्छिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने बिलवज्जिए। तसपाणबीयरहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ॥ १८ ॥
एयाओ पञ्च समिईओ, समासेण वियाहिया। एत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १९ ॥
सरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य। चउत्थी असच्चमोसा य, मणगुत्तीओ चउव्विहा ॥ २० ॥
सरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य। मणं पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २१ ॥
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चमोसा तहेव य। चउत्थी असच्चमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥ २२ ॥
सरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य। वयं पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय जई ॥ २३ ॥
ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे। उल्लघणपल्लघणे, इन्दियाण य जुजणे ॥ २४ ॥
संरम्भसमारम्भे, आरम्भम्मि तहेव य। काय पवत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय जई ॥ २५ ॥
एयाओ पञ्च समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे। गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥ २६ ॥
एसा पवयणमाया, जे सम्म आयरे मुणी। खिप्प सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥ २७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ समिईओ समत्ताओ

॥ अह जन्नइज्ज पञ्चवीसइम अज्झयणं ॥

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो। जायाई जमजन्नम्मि, जयघोसि त्ति नामओ ॥ १ ॥
इन्दियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी। गामाणुग्गाम रीयते, पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥ २ ॥
वाणारसीए बहिया, उज्जाणम्मि मणोरमे। फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥
अह तेणेव कालेण, पुरीए तत्थ माहणे। विजयघोसि त्ति नामेण, जन्न जयइ वेयवी ॥ ४ ॥
अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे। विजयघोसस्स जन्नम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥ ५ ॥
समुवट्ठिय तहिं सन्तं, जायगो पडिसेहिए। न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥ ६ ॥
जे य वेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया। जोइसगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥ ७ ॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य। तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू सव्वकामियं ॥ ८ ॥
सो तत्थ एव पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी। न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तिमट्ठगवेसओ ॥ ९ ॥
नन्नट्ठ पाणहेउं वा, नवि निव्वाहणाय वा। तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इणं वयणमब्बवी ॥ १० ॥
नवि जाणसि वेयमुहं, नवि जन्नाण जं मुहं। नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥ ११ ॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य। न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥
तस्सक्खेवपमोक्खं तु, अचयन्तो तहिं दिओ। सपरिसो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणिं ॥ १३ ॥
वेयाण च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं। नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ॥ १४ ॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य। एयं मे संसयं सव्वं, साहू कहसु पुच्छिओ ॥ १५ ॥
अग्गिहुत्तमुहा वेया, जन्नट्ठी वेयसा मुहं। नक्खत्ताण मुहं चन्दो, धम्माण कासवो मुहं ॥ १६ ॥
जहा चन्दं गहाईया, चिट्ठन्ती पंजलीउडा। वन्दमाणा नमंसन्ता, उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥
अजाणगा जन्नवाई, विज्जामाहणसंपया। गूढा सज्झायतवसा, भासच्छन्ना इवग्गिणो ॥ १८ ॥
जो लोए बम्भणो वुत्तो, अग्गीव महिओ जहा। सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥ १९ ॥
जो न सज्जइ आगन्तुं, पव्वयन्तो न सोयइ। रमइ अज्जवयणम्मि, तं वयं बूम माहणं ॥ २० ॥
जायरूवं जहामट्ठं, निद्धन्तमलपावगं। रागदोसभयाईयं, तं वयं बूम माहणं ॥ २१ ॥
तवस्सियं किसं दन्तं, अवचियमंससोणियं। सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २२ ॥
तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण य थावरे। जो न हिंसइ तिविहेणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २३ ॥
कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया। मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥ २४ ॥
चित्तमन्तमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं। न गिण्हाइ अदत्तं जे, तं वयं बूम माहणं ॥ २५ ॥
दिव्वमाणुसतेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं। मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २६ ॥
जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा। एवं अलित्तं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥ २७ ॥
अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं। असंसत्तं गिहत्थेसु तं वयं बूम माहणं ॥ २८ ॥
जहित्ता पुव्वसंजोगं नाइसंगे य बन्धवे। जो न सज्जइ भोगेसु, तं वयं बूम माहणं ॥ २९ ॥
पसुबन्धा सव्ववेया य, जट्ठं च पावकम्मुणा। न तं तायन्ति दुस्सीलं, कम्माणि बलवन्ति हि ॥ ३० ॥

न वि मुण्डिएण समणो, न ओंकारेण बम्भणो । न मुणी रण्णवासेण, कुसचीरेण तावसो ॥ ३१ ॥
समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो । नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥ ३२ ॥
कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ । वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥ ३३ ॥
एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ । सव्वकम्मविणिम्मुक्क, तं वयं बूम माहणं ॥ ३४ ॥
एवं गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा । ते समत्था उ उद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ॥ ३५ ॥
एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे । समुदाय तयं तं तु, जयघोसं महामुणिं ॥ ३६ ॥
तुट्ठे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली । माहणत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥ ३७ ॥
तुब्भे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ । जोइसंगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥ ३८ ॥
तुब्भे समत्था उद्धत्तु, परमप्पाणमेव य । तमणुग्गहं करेहम्हं भिक्खेण भिक्खु उत्तमा ॥ ३९ ॥
न कज्जं मज्झ भिक्खेण, खिप्पं निक्खमसू दिया । मा भमिहिसि भयावट्टे घोरे संसारसागरे ॥ ४० ॥
उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई । भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥ ४१ ॥
उल्लो सुक्खो य दो छूढा, गोलया मट्टियामया । दो वि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गई ॥ ४२ ॥
एवं लग्गन्ति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा । विरत्ता उ न लग्गन्ति, जहा से सुक्खगोलए ॥ ४३ ॥
एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अन्तिए । अणगारस्स निक्खन्तो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥ ४४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥ ४५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ जन्नइज्जं समत्तं ॥ २५ ॥

॥ अह सामायारी छव्वीसइमं अज्झयणं ॥

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं । जं चरित्ताण निग्गन्था, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥
पढमा आवस्सिया नाम, बिइया य निसीहिया । आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥
पचमी छन्दणा नाम, इच्छाकारो य छट्ठओ । सत्तमो मिच्छकारो य, तहक्कारो य अट्ठमो ॥ ३ ॥
अब्भुट्ठाणं च नवमं, दसमी उवसंपदा । एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥
गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं । आपुच्छणा सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणं ॥ ५ ॥
छन्दणा दव्वजाएणं, इच्छाकारो य सारणे । मिच्छाकारो य निन्दाए, तहक्कारो पडिस्सुए ॥ ६ ॥
अब्भुट्ठाणं गुरुपूया, अच्छणे उवसंपदा । एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥ ७ ॥
पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, आइच्चम्मि समुट्ठिए । भण्डयं पडिलेहित्ता, वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥ ८ ॥
पुच्छिज्ज पंजलीउडो, किं कायव्वं मए इह । इच्छं निओइउं भन्ते, वेयावच्चे व सज्झाए ॥ ९ ॥
वेयावच्चे निउत्तेण, कायव्वं अगिलायओ । सज्झाए वा निउत्तेण, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥
दिवसस्स चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो । तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥ ११ ॥
पढमं पोरिसिं सज्झायं, बीयं झाणं झियायई । तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं ॥ १२ ॥
आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया । चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥
अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेण च दुरंगुलं । वड्ढए हायए वावि, मासेण चउरंगुलं ॥ १४ ॥

आमादनहुलपक्खे, भद्दवए कत्तिए य पोसे य। फग्गुणवाइसाहेसु य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥ १५ ॥
जेट्ठामूले आसाढसावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा। अट्ठहिं बीयतम्मि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥ १६ ॥
रत्तिं पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो। तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥ १७ ॥
पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई। तइयाए निद्दमोक्खं तु चउत्थी भुजो वि सज्झायं ॥ १८ ॥
जं नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भाए। संपत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओसकालम्मि ॥ १९ ॥
तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउब्भागसावसेसम्मि। वेरत्तियंपि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥ २० ॥
पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भण्डयं। गुरुं वन्दित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥ २१ ॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं। अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥ २२ ॥
मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं। गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥ २३ ॥
उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे। तो बिइयं पप्फोडे, तइयं च पुणो पमज्जिज्ज ॥ २४ ॥
अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबन्धिममोसलिं चेव। छप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहणं ॥ २५ ॥
आरभडा सम्मद्दा, वज्जेयव्वा य मोसली तइया। पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥ २६ ॥
पसिढिलपलम्बलोला, एगा मोसा अणेगरूवधुणा। कुणइ पमाणिपमायं, संकियगणणोवगं कुज्जा ॥ २७ ॥
अणूणाइरित्तपडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य। पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥ २८ ॥
पडिलेहणं कुणन्तो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा। देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥ २९ ॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ-वणस्सइ-तसाणं। पडिलेहणापमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ॥ ३० ॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सइ-तसाणं। पडिलेहणाआउत्तो, छण्हं संरक्खओ होइ ॥ ३१ ॥
तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए। छण्हं अन्नयराए, कारणम्मि समुट्ठिए ॥ ३२ ॥
वेयण वेयावच्चे, इरियट्ठाए य संजमट्ठाए। तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥ ३३ ॥
निग्गन्थो धिइमन्तो, निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव। ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ॥ ३४ ॥
आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु। पाणिदया तवहेउं, सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥ ३५ ॥
अवसेसं भण्डगं गिज्झ, चक्खुसा पडिलेहए। परमद्धजोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ॥ ३६ ॥
चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताण भायणं। सज्झायं तओ कुज्जा, सव्वभावविभावणं ॥ ३७ ॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं। पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥ ३८ ॥
पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई। काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ३९ ॥
देवसियं च अईयारं, चिन्तिज्जा अणुपुव्वसो। नाणे य दंसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ॥ ४० ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं। देसियं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४१ ॥
पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरुं। काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४२ ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं। थुइमंगलं च काऊण, कालं संपडिलेहए ॥ ४३ ॥
पढमं पोरिसि सज्झायं, बितियं झाणं झियायई। तइयाए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ॥ ४४ ॥
पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिया। सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहेन्तो असंजए ॥ ४५ ॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दिऊण तओ गुरुं। पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥ ४६ ॥
आगए कायवोस्सग्गे, सव्वदुक्खविमोक्खणे। काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४७ ॥

राइय च अईयार, चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो । नाणंमि दसणमि य, चरित्तमि तवमि य ॥ ४८ ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरु । राइय तु अईयार, आलोएज्ज जहक्कम ॥ ४९ ॥
पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरु । काउस्सग्ग तओ कुज्जा, सव्वदुक्खण ॥ ५० ॥
किं तव पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचिन्तए । काउस्सग्ग तु पारित्ता, वन्दई य तओ गुरुं ॥ ५१ ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं । तव तु पडिवज्जेत्ता, कुज्जा सिद्धाण सथव ॥ ५२ ॥
एसा सामायारी, समासेण वियाहिया । ज चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा ससारसागर ॥ ५३ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ सामायारी समत्ता ॥ २६ ॥

॥ अह खलुंकिज्जं सत्तवीसइम अज्झयण ॥

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए । आइण्णे गणिभावम्मि, समाहिं पडिसधए ॥ १ ॥
वहणे वहमाणस्स कन्तार अइवत्तई । जोगे वहमाणस्स, ससारो अइवत्तई ॥ २ ॥
खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सई । असमाहिं च वेएइ, तोत्तओ से य भज्जई ॥ ३ ॥
एग डसइ पुच्छम्मि, एग विन्धइऽभिक्खणं । एगो भजइ समिल, एगो उप्पहपट्ठिओ ॥ ४ ॥
एगो पडइ पासेण, निवेसइ निवज्जई । उक्कुद्दइ उप्फिडइ, सढे बालगवी वए ॥ ५ ॥
माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं । मयलक्खेण चिट्ठई, वेगेण य पहावई ॥ ६ ॥
छिन्नाले छिन्दई सेल्लिं, दुद्दन्तो भजए जुग । सेवि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जहित्ता पलायए ॥ ७ ॥
खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा । जोइया धम्मजाणम्मि, भज्जन्ती धिइदुब्बला ॥ ८ ॥
इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे । सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥ ९ ॥
भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए । थद्धे एगे अणुसासम्मी, हेऊहिं कारणेहि य ॥ १० ॥
सो वि अन्तरभासिल्लो, दोसमेव पकुव्वई । आयरियाण तु वयण, पडिकूलेइऽभिक्खण ॥ ११ ॥
न सा मम वियाणाइ, न य सा मज्झ दाहिई । निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥ १२ ॥
पेसिया पलिउचन्ति, ते परियन्ति, समन्तओ । रायवेट्ठिं च मन्नन्ता, करेन्ति भिउडिं मुहे ॥ १३ ॥
वाइया सगहिया चेव, भत्तपाणेण पोसिया । जायपक्खा जहा हसा, पक्कमन्ति दिसो दिसिं ॥ १४ ॥
अह सारही विचिन्तेइ, खलुंकेहिं समागओ । किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीयई ॥ १५ ॥
जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलिगद्दहा । गलिगद्दहे जहित्ताण, दढ पगिण्हई तव ॥ १६ ॥
मिउमद्दवसपन्नो, गम्भीरो सुसमाहिओ । विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पण ॥ १७ ॥

त्ति बेमि ॥ खलुंकिज्ज समत्त ॥ २७ ॥

॥ अह मोक्खमग्गगई अट्ठावीसइमं अज्झयणं ॥

मोक्खमग्गगइ तच्च, सुणेह जिणभासियं । चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणं ॥ १ ॥
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । एस मग्गु त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ २ ॥
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । एयमग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥ ३ ॥
तत्थ पंचविहं नाणं, सुयं आभिनिबोहियं । ओहिनाणं तु तइयं, मणनाणं च केवलं ॥ ४ ॥
एयं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य । पज्जवाण य सव्वेसिं, नाणं नाणीहि दंसियं ॥ ५ ॥
गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा । लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे ॥ ६ ॥
धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गल जन्तवो । एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ ७ ॥
धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्कमाहियं । अणन्ताणि य दव्वाणि, कालो, पुग्गलजन्तवो ॥ ८ ॥
गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो । भायणं सव्वदव्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं ॥ ९ ॥
वत्तणालक्खणो कालो, जीवो उवओगलक्खणो । नाणेणं दंसणेणं च, सुहेण य दुहेण य ॥ १० ॥
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ॥ ११ ॥
सद्दन्धयार-उज्जोओ, पहा छाया तवे इ वा । वण्णरसगन्धफासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥ १२ ॥
एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाणमेव य । संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खणं ॥ १३ ॥
जीवाजीवा य बन्धो य, पुण्णं पावासवा तहा । संवरो निज्जरा मोक्खो, सन्तेए तहिया नव ॥ १४ ॥
तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं । भावेणं सद्दहन्तस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ॥ १५ ॥
निसग्गुवएसरुई, आणरुई सुत्त बीयरुइमेव । अभिगम वित्थाररुई, किरिया संखेव धम्मरुई ॥ १६ ॥
भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्णपावं च । सहसम्मुइयासवसंवरो य रोएइ उ निस्सग्गो ॥ १७ ॥
जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव । एमेव नन्नह त्ति य, स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥ १८ ॥
एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहई । छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥ १९ ॥
रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होइ । आणाए रोयन्तो, सो खलु आणारुई नाम ॥ २० ॥
जो सुत्तमहिज्जन्तो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं । अंगेण बाहिरेण व, सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥ २१ ॥
एगेण अणेगाइं, पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं । उदए व्व तेल्लबिन्दू, सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥ २२ ॥
सो होइ अभिगमरुई, सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं । एक्कारस अंगाइं, पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ॥ २३ ॥
दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा । सव्वाहि नयविहीहिं, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥ २४ ॥
दंसणनाणचरित्ते, तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु । जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥ २५ ॥
अणभिग्गहियकुदिट्ठी संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो। अविसारओ पवयणे,अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥ २६ ॥
जो अत्थिकायधम्मं,सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च। सद्दहइ जिणाभिहियं,सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥ २७ ॥
परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणं वा वि । वावन्नकुदंसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २८ ॥
नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं, दंसणे उ भइयव्वं । सम्मत्तचरित्ताइं, जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥ २९ ॥
नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥ ३० ॥

निस्संकिय-निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य । उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अट्ठ ॥ ३१ ॥
सामाइयत्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवे बीयं । परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥
अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा । एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ॥ ३३ ॥
तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥ ३४ ॥
नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे । चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई ॥ ३५ ॥
खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । सव्वदुक्खपहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥ ३६ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ मोक्खमग्गगई समत्ता ॥ २८ ॥

॥ अह सम्मत्तपरक्कम एगूणतीसइम अज्झयण ॥

सुयं मे आउसं—तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए, जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति । तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ, तंजहा—संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थवे ९ वन्दणे १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० पडियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपुण्णया ४४ वीयरागया ४५ खन्ती ४६ मुत्ती ४७ मद्दवे ४८ अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ॥ ७३ ॥

संवेगेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ अणन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ । कम्मं न बन्धइ । तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ । दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झई । सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १ ॥ निव्वेएणं

भन्ते जीवे किं जणयइ। निव्वेदेण दिव्वमाणुसतेरिच्छएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छेइ सव्वविसएसु विरज्जइ। सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरम्भपरिच्चायं करेइ। आरम्भपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिन्दइ, सिद्धिमग्गं पडिवन्ने य भवइ।२॥ धम्मसद्धाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। आगारधम्मं च णं चयइ। अणगारिए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयणसंजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ ॥ ३ ॥ गुरुसाहम्मिय-सुस्सूसणाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुम्भइ। वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवगईओ निबन्धइ, सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ। पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ ॥४। आलोयणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्गविग्घाणं अणंतसंसारबन्धणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं च न बन्धइ। पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ ॥ ५ ॥ निन्दणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। निन्दणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ। पच्छाणुतावेण विरज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ। करणगुणसेढीपडिवन्ने य णं अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ॥६॥ गरहणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। गरहणयाए अपुरेक्कारं जणयइ। अपुरेक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ। पसत्थजोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ७॥सामाइएणं भन्ते जीवे किं जणयइ। सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ॥८॥चउव्वीसत्थएणं भन्ते जीवे किं जणयइ। च० दंसणविसोहिं जणयइ॥९। वन्दणएणं भन्ते जीवे किं जणयइ। व०नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ सोहग्गं च णं अपडिहियं आणाफलं निव्वत्तेइ। दाहिणभावं च णं जणयइ ॥१०॥ पडिक्कमणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। प० वयछिद्दाणि पिहेइ। पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिइंदिए विहरइ ॥ ११ ॥ काउस्सग्गेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। का० तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभरुव्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुहं सुहेण विहरइ ॥ १२ ॥ पच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। प० आसवदाराइं निरुम्भइ। पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ। इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरइ ॥ १३ ॥ थवथुइमंगलेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। थ० नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ। नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ ॥ १४ ॥ कालपडिलेहणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। का० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १५ ॥ पायच्छित्तकरणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। पा० पावविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ ॥ १६ ॥ खमावणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। ख० पल्हायणभावं जणयइ। पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु-मेत्तीभावमुप्पाएइ। मेत्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ॥१७॥ सज्झाएणं भन्ते जीवे किं जणयइ। स० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १८ ॥ वायणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। वा० निज्जरं जणयइ सुयस्स य अणासायणाए

यट्टए । सुयस्सअणासायणाए यट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ । तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ १९ ॥ पडिपुच्छणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । प० सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ । कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ ॥२०॥ परियट्टणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । प० वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥२१॥ अणुप्पेहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । अ०आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालठिईयाओ पकरेइ । तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ । (बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ) आउयं च णं कम्मं सिया बन्धइ, सिया नो बन्धइ । असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ । अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ ॥२२॥ धम्मकहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । ध० निज्जरं जणयइ । धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ । पवयणपभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबन्धइ । २३ ॥ सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । सु० अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥ एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । ए० चित्तनिरोहं करेइ ॥ २५ ॥ संजमेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सं० अणण्हयत्तं जणयइ ॥ २६ ॥ तवेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ तवेणं वोदाणं जणयइ ॥ २७ ॥ वोदाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । वो० अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ २८ ॥ सुहसाएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सु० अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ २९ ॥ अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । अ० निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥ ३० ॥ विवित्तसयणासणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । वि० चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगंठिं निज्जरेइ ॥३१॥ विणियट्टणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । वि० पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ । पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ । तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइवयइ ॥ ३२ ॥ संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सं० आलम्बणाइं खवेइ । निरालम्बणस्स य आययट्ठिया योगा भवन्ति । सएणं लाभेणं संतुस्सइ, परलाभं नो आसाएइ, परलाभं नो तक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ । परलाभं अणस्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ ३३ ॥ उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । उ० अपलिमन्थं जणयइ । निरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सई ॥३४॥ आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । आ० जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दइ । जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥ कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । क० वीयरागभावं जणयइ । वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ॥ ३६ ॥ जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । जो० अजोगत्तं जणयइ अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं निज्जरेइ ॥ ३७ ॥ सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । स० सिद्धाइसयगुणकित्तणं निव्वत्तेइ सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ ॥ ३८ ॥

सहायपच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । स० एगीभावं जणयइ । एगीभावभूए वि य णं जीवे एगत्तं भावेमाणे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ॥ ३९ ॥ भत्तपच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । भ० अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ ॥४०॥ सब्भावपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ स० अनियट्टिं जणयइ । अनियट्टिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तंजहा-वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ४१ ॥ पडिरूवणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । प० लाघवियं जणयइ । लघुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइन्दिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ॥ ४२ ॥ वेयावच्चेण भन्ते जीवे किं जणयइ । वे० तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ ॥ ४३ ॥ सव्वगुणसंपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । स० अपुणरावत्तिं पत्तए य णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ॥ ४४ ॥ वीयरागयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । वी० नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि य वोच्छिन्दइ, मणुन्नामणुन्नेसु सद्दफरिसरूवरसगन्धेसु चेव विरज्जइ ॥ ४५ ॥ खन्तीए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ० ख० परीसहे जिणइ ॥ ४६ ॥ मुत्तीए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । मु० अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं अपत्थणिज्जो भवइ ॥ ४७ ॥ अज्जवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । अ० काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥ मद्दवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । म० अणुस्सियत्तं जणयइ । अणुस्सियत्तेणं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ ॥ ४९ ॥ भावसच्चेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । भा० भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ॥ ५० ॥ करणसच्चेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । क० करणसत्तिं जणयइ । करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहा वाई तहा कारी यावि भवइ ॥ ५१ ॥ जोगसच्चेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । जो० जोगं विसोहेइ ॥ ५२ ॥ मणगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ म० जीवे एगग्गं जणयइ । एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ॥ ५३ ॥ वयगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । व० निव्वियारं जणयइ । निव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि विहरइ ॥ ५४ ॥ कायगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । का० संवरं जणयइ । संवरेण कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥ ५५ ॥ मणसमाहारणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । म० एगग्गं जणयइ । एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ॥ ५६ ॥ वयसमाहारणयाए भन्ते जीवे किं जणयइ । व० वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ । वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ ॥ ५७ ॥ कायसमाहारणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । का० चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहित्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ५८ ॥ नाणसंपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । ना० जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ । नाणसंपन्ने जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणस्सइ ।

जहा सूई ससुत्ता न विणस्सइ तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ, नाणविणयतवचरित्तजोगे संपा उणइ, ससमयपरसमयविसारए य असंघायणिज्जे भवइ ॥ ५९ ॥ दंसणसंपन्नयाए णं भंते जीवे किं जणयइ । दं० भवमिच्छत्तछेयणं करेइ न विज्झायइ । परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥ ६० ॥ चरित्तसंपन्नयाए णं भंते जीवे किं जणयइ । च० सेलेसीभावं जणयइ । सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥ ६१ ॥ सोइन्दियनिग्गहेणं भंते जीवे किं जणयइ । सो० मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६२ ॥ चक्खिन्दियनिग्गहेणं भंते जीवे किं जणयइ । च० मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६३ ॥ घाणिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । घा० मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६४ ॥ जिब्भिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । जि० मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६५ ॥ फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । फा० मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६६ ॥ कोहविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । को० खन्तिं जणयइ कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६७ ॥ माणविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । मा० मद्दवं जणयइ, माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६८ ॥ मायाविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । मा० अज्जवं जणयइ, मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६९ ॥ लोभविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । लो० संतोसं जणयइ, लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ७० ॥ पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । पि० नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पञ्चविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अन्तराइयं, एए तिन्नि वि कम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ, ताव ईरियावहियं कम्मं निबन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं । तं पढमसमए बद्धं, बिइयसमए वेइयं, तइयसमए निज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मयाचं भवइ ॥ ७१ ॥ अह आउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुम्भइ वयजोगं निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइ, आणपाणुनिरोहं करेइ, ईसिं पंचरहस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नाम गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥ ७२ ॥ तओ ओरालियतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ ७३ ॥ एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए उवदंसिए ॥ ७४ ॥ त्ति बेमि ॥ इअ सम्मत्तपरक्कमे समत्ते ॥ २९ ॥

॥ अह तवमग्ग तीसइम अज्झयण ॥

जहा उ पावग कम्म, रागदोसर मज्जिय । खवेइ तवसा भिक्खु, तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥
पाणिवहमुसावाया।अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ । राईभोयणविरओ, जीवो भवइ अणासवो ॥ २ ॥
पचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइन्दिओ । अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥
एएसि तु विवच्चासे, रागदोससमज्जिय । खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ ४ ॥
जहा महातलायस्स, सन्निरुद्धे जलागमे । उस्सिचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥ ५ ॥
एव तु सजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे । भवकोडीसचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥
सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥ ७ ॥
अणसणमूणोयरिया,भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ। कायकिलेसो सलीणया य बज्झो तवो होइ ॥ ८ ॥
इत्तरिय मरणकाला य, अणसणा दुविहा भवे। इत्तरिय सावकखा, निरवकंखा उ विइज्जिया ॥ ९ ॥
जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो। सेढितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥ १० ॥
तत्तो य वग्गवग्गो, पचमो छट्ठओ पइण्णतवो। मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥ ११ ॥
जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वि वियाहिया। सवियारमवियारा, कायचिट्ठ पई भवे ॥ १२ ॥
अहवा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया । नीहारिमनीहारी, आहारच्छेओ दोसु वि ॥ १३ ॥
ओमोयरण पंचहा, समासेण वियाहिय । दव्वओ खेत्तकालेण, भावेणं पज्जवेहि य ॥ १४ ॥
जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओम तु जो करे । जहन्नेणेगसित्थाई, एव दव्वेण ऊ भवे ॥ १५ ॥
गामे नगरे तह रायहाणिनिगमे य आगरे पल्ली । खेडे कब्बडदोणमुहपट्टणमडम्बसंबाहे ॥ १६ ॥
आसमपए विहारे, सन्निवेसे समायघोसे य । थलिसेणाखन्धारे, सत्थे संवट्टकोट्टे य ॥ १७ ॥
वाडेसु व रच्छासु व, घरेसु वा एवमित्तिय खेत्त। कप्पई उ एवमाई, एव खेत्तेण ऊ भवे ॥ १८ ॥
पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्तिपयंगवीहिया चेव । सम्बुक्कावट्टाययगन्तुपच्चागया छट्ठा ॥ १९ ॥
दिवसस्स पोरुसीण, चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो। एव चरमाणो खलु कालोमाणं मुणेयव्व ॥ २० ॥
अहवा तइयाए पोरिसीए ऊणाइ घासमेसन्तो । चउभागूणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ॥ २१ ॥
इत्थी वा पुरिसो वा, अलकिओ वा नलकिओ वावि। अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेण ॥ २२ ॥
अन्नेण विसेसेण, वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ । एव चरमाणो खलु, भावोमाणं मुणेयव्वं ॥ २३ ॥
दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य आहिया उ जे भावा। एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥ २४ ॥
अट्ठविहगोयरग्ग तु, तहा सत्तेव एसणा । अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥
खीरदहिसप्पिमाई, पणीय पाणभोयण । परिवज्जण रसाणं तु, भणियं रसविवज्जण ॥ २६ ॥
ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा। उग्गा जहा धरिज्जन्ति, कायकिलेस तमाहिय ॥ २७ ॥
एगन्तमणावाए, इत्थीपसुविवज्जिए । सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासण ॥ २८ ॥
एसो बाहिरगतवो, समासेण वियाहिओ । अब्भिन्तर तव एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो । २९ ॥
पायच्छित्त विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ। झाण च विउस्सग्गो, एसो अब्भिन्तरो तवो ॥ ३० ॥

आलोयणारिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं । जं भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं ॥ ३१ ॥
अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं, तहेवासणदायणं । गुरुभत्तिभावसुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥ ३२ ॥
आयरियमाईए, वेयावच्चम्मि दसविहे । आसेवणं जहाथामं, वेयावच्चं तमाहियं ॥ ३३ ॥
वायणा पुच्छणा चेव, तहेव परियट्टणा । अणुप्पेहा धम्मकहा, अज्झाओ पञ्चहा भवे ॥ ३४ ॥
अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए । धम्मसुक्काइं झाणाइं, झाणं तं तु बुहा वए ॥ ३५ ॥
सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे । कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥ ३६ ॥
एयं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी । सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥ ३७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ तवमग्गं समत्तं ॥ ३० ॥

॥ अह चरणविही एगतीसइमं अज्झयणं ॥

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं । जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥
एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं । असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं ॥ २ ॥
रागदोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तणे । जे भिक्खू रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ३ ॥
दण्डाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं । जे भिक्खू चयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ४ ॥
दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छमाणुसे । जे भिक्खू सहई जयई, से न अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥
विगहाकसायसन्नाणं, झाणाणं च दुयं तहा । जे वज्जई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥
वएसु इन्दियत्थेसु, समिईसु किरियासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ७ ॥
लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ८ ॥
पिण्डोग्गहपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ९ ॥
मदेसु बम्भगुत्तीसु, भिक्खुधम्मम्मि दसविहे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १० ॥
उवासगाणं पडिमासु, भिक्खूणं पडिमासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ११ ॥
किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिएसु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १२ ॥
गाहासोलसएहिं, तहा असंजमम्मि य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १३ ॥
बम्भम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु य समाहिए । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १४ ॥
एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १५ ॥
तेवीसाइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १६ ॥
पणुवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १७ ॥
अणगारगुणेहिं च, पगप्पम्मि तहेव य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १८ ॥
पावसुयपसंगेसु, मोहठाणेसु चेव य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १९ ॥
सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ २० ॥
इय एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया । खिप्पं सो सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥ २१ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ चरणविही समत्ता ॥ ३१ ॥

॥ अह पमायट्ठाणं बत्तीसइमं अज्झयणं ॥

अच्चन्तकालस्स समूलगस्स सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगन्तहियं हियत्थं ॥ १ ॥
नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥ २ ॥
तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झायएगन्तनिसेवणा य, सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥ ३ ॥
आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥
न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥
जहा य अण्डप्पभवा बलागा, अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोहं च तण्हाययणं वयन्ति ॥ ६ ॥
रागो य दोसो वि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
कम्मं च जाइमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति ॥ ७ ॥
दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥
रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तु कामेण समूलजालं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा, ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥
रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्दवन्ति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥ १० ॥
जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो, न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥ ११ ॥
विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं, ओमासणाणं दमिइन्दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥ १२ ॥
जहा बिरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥ १३ ॥
न रूवलावण्णविलासहासं, न जंपियइंगियपेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥ १४ ॥
अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियझाणजुग्गं, हियं सया बम्भवए रयाणं ॥ १५ ॥

कामं तु देवीहि विभूसियाहि, न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा, विवित्तवासो मुणिण पसत्थो ॥ १६ ॥
मोक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥ १७ ॥
एए य संगे समइक्कमित्ता, सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गङ्गासमाणा ॥ १८ ॥
कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्सन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥ १९ ॥
जहा य किम्पागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
ते खुड्डए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥ २० ॥
जे इन्दियाणं विसया मणुन्ना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ २१ ॥
चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ २२ ॥
रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ २३ ॥
रूवेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे से जह वा पयंगे, आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥ २४ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसिक्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि रूवं अवरज्झई से ॥ २५ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि रूवे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ २६ ॥
रूवाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ २७ ॥
रूवाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसंनिओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ २८ ॥
रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ २९ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ३० ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ३१ ॥
रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ३२ ॥
एमेव रूवम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ३३ ॥
रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ३४ ॥
सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ३५ ॥
सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति, सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ३६ ॥
सद्देसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥ ३७ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि सद्दं अवरुज्झई से ॥ ३८ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥
सद्दाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ४० ॥
सद्दाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ४१ ॥
सद्दे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ४२ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ४३ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥
सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ४५ ॥
एमेव सद्दम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ४६ ॥
सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ४७ ॥
घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ४८ ॥

गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति, घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ४९ ॥
गन्धेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे ओसहगन्धगिद्धे, सप्पे बिलाओ विव निक्खमन्ते ॥ ५० ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि गन्धं अवरज्झई से ॥ ५१ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ५२ ॥
गन्धाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ५३ ॥
गन्धाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ५४ ॥
गन्धे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ५५ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ५६ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ५७ ॥
गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ५८ ॥
एमेव गन्धम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ५९ ॥
गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ६० ॥
जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ६१ ॥
रसस्स जिब्भं गहणं वयन्ति, जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ६२ ॥
रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए, मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥ ६३ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि रसं अवरज्झई से ॥ ६४ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि रसे, अतालिसे से कुणई पओसं

दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ६५ ॥
रसाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरेहिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ६६ ॥
रसाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए निओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ६७ ॥
रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ६८ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रसे अदत्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ६९ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ७० ॥
रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ७१ ॥
एमेव रसम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ७२ ॥
रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ७३ ॥
कायस्स फासं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ७४ ॥
फासस्स कायं गहणं वयन्ति, कायस्स फासं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ७५ ॥
फासेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीयजलावसन्ने, गाहग्गहीए महिसे विवन्ने ॥ ७६ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि फासं अवरुज्झई से ॥ ७७ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि फासे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥
फासाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ७९ ॥
फासाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ८० ॥
फासे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ८१ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ८२ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥
फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ८४ ॥
एमेव फासम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ८५ ॥
फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ८६ ॥
मणस्स भावं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ८७ ॥
भावस्स मणं गहणं वयन्ति, मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ८८ ॥
भावेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेणुमग्गावहिए गजे वा ॥ ८९ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि भावं अवरज्झई से ॥ ९० ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ९१ ॥
भावाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥
भावाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसंनिओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ९३ ॥
भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ९४ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ९५ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥
भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ९७ ॥
एमेव भावम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।

पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥ ९८ ॥
भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणी पलास ॥ ९९ ॥
एविन्दियत्था य मणस्स अत्था दुक्खस्स हेउ मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोव पि कयाइ दुक्ख, न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥ १०० ॥
न कामभोगा समय उवेन्ति, न यावि भोगा विगइ उवेन्ति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगइ उवेइ ॥ १०१ ॥
कोह च माण च तहेव माय, लोहं दुगुच्छ अरइ रइ च ।
हास भयं सोगपुमित्थिवेयं, नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥ १०२ ॥
आवज्जई एवमणेगरूवे, एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥ १०३ ॥
कप्प न इच्छिज्ज सहायलिच्छू, पच्छाणुतावे न तवप्पभाव ।
एव वियारे अमियप्पयारे, आवज्जई इन्दियचोरवस्से ॥ १०४ ॥
तओ से जायन्ति पओयणाइ, निमिज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा, तप्पच्चय उज्जमए य रागी ॥ १०५ ॥
विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था, सद्दाइया तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नय वा, निव्वत्तयन्ती अमणुन्नय वा ॥ १०६ ॥
एव समकप्पविकप्पणासु, सजायई समयमुवट्ठियस्स ।
अत्थे असकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥ १०७ ॥
स वीयरागो कयसव्वकिच्चो, खवेइ नाणावरण खणेण ।
तहेव ज दंसणमावरेइ, ज चन्तराय पकरेइ कम्म ॥ १०८ ॥
सव्व तओ जाणइ पासए य, अमोहणे होइ निरन्तराए ।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते, आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥ १०९ ॥
सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को, ज बाहई सययं जन्तुमेय ।
दीहामय विप्पमुक्को पसत्थो, तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥ ११० ॥
अणाइकालप्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता, कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥ १११ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ पमायट्ठाण समत्त ॥ ३२ ॥

॥ अह कम्मप्पयडी तेत्तीसइमं अज्झयण ॥

अट्ठ कम्माइ वोच्छामि, आणुपुव्वि जहक्कम । जेहि बद्धो अय जीवो, ससारे परिवट्टई ॥ १ ॥
नाणस्सावरणिज्ज, दसणावरण तहा । वेयणिज्जं तहा मोह, आउकम्म तहेव य ॥ २ ॥
नामकम्म च गोय च, अन्तराय तहेव य । एवमेयाइ कम्माइ, अट्ठेव उ समासओ ॥ ३ ॥
नाणावरण पञ्चविह, सुय आभिणिबोहिय । ओहिनाण च तइय, मणनाण च केवल ॥ ४ ॥
निद्दा तहेव पयला, निद्दानिद्दा पयलपयला य । तत्तो य थीणगिद्धी उ, पञ्चमा होइ नायव्वा ॥ ५ ॥
चक्खुमचक्खूओहिस्स, दसणे केवले य आवरणे । एवं तु नवविगप्प, नायव्व दसणावरणं ॥ ६ ॥
वेयणीयपि य दुविहं, सायमसायं च आहिय । सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥ ७ ॥
मोहणिज्जपि य दुविह, दसणे चरणे तहा । दसणे तिविह वुत्त, चरणे दुविह भवे ॥ ८ ॥
सम्मत्त चेव मिच्छत्त, सम्मामिच्छत्तमेव य । एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दसणे ॥ ९ ॥
चरित्तमोहण कम्मं, दुविह त वियाहिय कसायमोहणिज्ज तु, नोकसायं तहेव य ॥ १० ॥
सोलसविहभेएण, कम्म तु कसायज । सत्तविह नवविह वा, कम्म च नोकसायजं ॥ ११ ॥
नेरइयतिरिक्खाउ, मणुस्साउं तहेव य । देवाउय चउत्थ तु, आउ कम्म चउव्विहं ॥ १२ ॥
नाम कम्म तु दुविह, सुहमसुह च आहिय । सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥ १३ ॥
गोयं कम्मं दुविह, उच्चं नीय च आहिय । उच्च अट्ठविहं होइ, एव नीय पि आहिय ॥ १४ ॥
दाणे लाभे य भोगे य, उवभोगे वीरिए तहा । पञ्चविहमन्तरायं, समासेण वियाहिय ॥ १५ ॥
एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया । पएसग्गं खेत्तकाले य, भाव च उत्तरं सुण ॥ १६ ॥
सव्वेसिं चेव कम्माण, पएसग्गमणन्तग । गण्ठियसत्ताईय, अन्तो सिद्धाण आहिय ॥ १७ ॥
सव्वजीवाण कम्म तु, सगहे छद्दिसागयं । सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धग ॥ १८ ॥
उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडिओ । उक्कोसिय ठिई होइ, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९ ॥
आवरणिज्जाण दुण्हपि, वेयणिज्जे तहेव य । अन्तराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥ २० ॥
उदहीसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिकोडीओ । मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ २१ ॥
तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया । ठिई उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २२ ॥
उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ । नामगोत्ताण उक्कोसा, अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥ २३ ॥
सिद्धाणणन्तभागो य, अणुभागा हवन्ति उ । सव्वेसु वि पएसग्गं, सव्वजीवे अइच्छियं ॥ २४ ॥
तम्हा एएसि कम्माण, अणुभागा वियाणिया । एएसि सवरे चेव, खवणे य जए बुहो ॥ २५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ कम्मप्पयडी समत्ता ॥ ३३ ॥

॥ अह लेसज्झयणं चोत्तीसइमं अज्झयणं ॥

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्वि जहक्कमं । छण्हंपि कम्म लेसाणं, अणुभावे सुणेह मे ॥ १ ॥
नामाइं वण्णरसगन्धफासपरिणामलक्खणं । ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥ २ ॥
किण्हा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य । सुक्कलेसा य छट्ठा य, नामाइं तु जहक्कमं ॥ ३ ॥
जीमूयनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा । खंजणनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥ ४ ॥
नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पभा । वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥ ५ ॥
अयसीपुप्फसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा । पारेवयगीवनिभा, काउलेसा उ वण्णओ ॥ ६ ॥
हिंगुलधाउसंकासा, तरुणाइच्चसन्निभा । सुयतुण्डपईवनिभा, तेउलेसा उ वण्णओ ॥ ७ ॥
हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा । सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥ ८ ॥
संखंककुन्दसंकासा, खीरपूरसमप्पभा । रययहारसंकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥ ९ ॥

जह कडुयतुम्बगरसो, निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो य किण्हाए नायव्वो ॥ १० ॥
जह तिगडुयस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ नीलाए नायव्वो ॥ ११ ॥
जह परिणयम्बगरसो, तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ काऊए नायव्वो ॥ १२ ॥
जह परिणयम्बगरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ तेऊए नायव्वो ॥ १३ ॥
वरवारुणीए वा रसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
महुमेरयस्स व रसो, एत्तो पम्हाए परएणं ॥ १४ ॥

खज्जूरमुद्दियरसो, खीररसो खण्डसक्कररसो वा । एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥ १५ ॥
जह गोमडस्स गंधो सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स। एत्तो वि अणन्तगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥ १६ ॥
जह सुरहिकुसुमगंधो, गंधवासाण पिस्समाणाणं। एत्तो वि अणन्तगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥ १७ ॥
जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए य सागपत्ताणं। एत्तो वि अणन्तगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥ १८ ॥
जह बूरस्स व फासो, नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं। एत्तो वि अणन्तगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हंपि ॥ १९ ॥
तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा। दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥ २० ॥
पंचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य। तिव्वारम्भपरिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ॥ २१ ॥
निद्धन्धसपरिणामो, निस्संसो अजिइन्दिओ । एयजोगसमाउत्तो किण्हलेसं तु परिणमे ॥ २२ ॥
इस्सा अमरिस अतवो, अविज्जमाया अहीरिया । गेही पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुए ॥ २३ ॥
सायगवेसए य आरम्भाओ अविरओ, खुद्दो साहस्सिओ नरो। एयजोगसमाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे ॥ २४
वंके वंकसमायारे, नियडिल्ले अणुज्जुए । पलिउंचगओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥ २५ ॥
उप्फालगदुट्ठवाई य, तेणे यावि य मच्छरी । एयजोगसमाउत्तो, काऊलेसं तु परिणमे ॥ २६

नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले। विणीयविणए दन्ते, जोगवं उवहाणवं ॥ २७ ॥
पियधम्मे दढधम्मेऽवज्जभीरू हिएसए। एयजोगसमाउत्तो, तेउलेसं तु परिणमे ॥ २८ ॥
पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए। पसन्तचित्ते दन्तप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥ २९ ॥
तहा पयणुवाई य, उवसन्ते जिइन्दिए। एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥ ३० ॥
अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि झायए। पसन्तचित्ते दन्तप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥ ३१ ॥
सरागे वीयरागे वा, उवसन्ते जिइन्दिए। एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेसं तु परिणमे ॥ ३२ ॥
असंखिज्जाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया। संखाईया लोगा, लेसाण हवन्ति ठाणाइं ॥ ३३ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥ ३४ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥ ३७ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस होन्ति य सागरा मुहुत्तहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥ ३८ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ३९ ॥
एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ। चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥ ४० ॥
दस वाससहस्साइं, काऊए ठिई जहन्निया होइ। तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥ ४१ ॥
तिण्णुदही पलिओवमसंखभागो जहन्नेण नीलठिई। दस उदही पलिओवम असंखभागं च उक्कोसा ॥ ४२ ॥
दसउदही पलिओवमअसंखभागं जहन्निया होइ। तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥ ४३ ॥
एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ। तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥ ४४ ॥
अन्तोमुहुत्तमद्धं, लेसाण जहिं जहिं जा उ। तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं ॥ ४५ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ। नवहि वरिसेहि ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ४६ ॥

एसा तिरियनराणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिईउ देवाणं ॥ ४७ ॥
दस वाससहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ।
पलियमसंखिज्जइमो, उक्कोसो होइ किण्हाए ॥ ४८ ॥
जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं नीलाए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥ ४९ ॥
जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं काऊए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥ ५० ॥

तेण परं वोच्छामि, तेउलेसा जहा सुरगणाणं। भवणवइवाणमन्तरजोइसवेमाणियाणं च ॥ ५१ ॥
पलिओवमं जहन्नं, उक्कोसा सागरा उ दुन्नहिया। पलियमसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ॥ ५२ ॥
दस वाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निया होइ। दुन्नुदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥ ५३ ॥

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं पम्हाए, दस उ मुहुत्ताहियाइं उक्कोसा ॥ ५४ ॥

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया। जहन्नेण सुक्काए, तेत्तीस मुहुत्तमब्भहिया ॥ ५५ ॥
किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ। एयाहि तिहिवि जीवो, दुग्गइ उववज्जई ॥ ५६ ॥
तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्निवि एयाओ धम्मलेसाओ। एयाहि तिहिवि जीवो, सुग्गइ उववज्जई ॥ ५७ ॥
लेसाहिं सव्वाहिं, पढमे समयंमि परिणयाहिं तु। न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥ ५८ ॥
लेसाहिं सव्वाहिं, चरिमे समयंमि परिणयाहिं तु। न हु कस्सइ उववाओ परे भवे होइ जीवस्स ॥ ५९ ॥
अन्तमुहुत्तम्मि गए अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव। लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छन्ति परलोय ॥ ६० ॥
तम्हा एयासि लेसाण, आणुभावे वियाणिया। अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणि ॥ ६१ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ लेसज्झयण समत्त ॥ ३४ ॥

॥ अह अणगारज्झयण णाम पचतीसइम अज्झयण ॥

सुहेण मे एगग्गमणा, मग्ग बुद्धेहि दसिय। जमायरन्तो भिक्खू, दुक्खाणन्त करे भवे ॥ १ ॥
गिहवास परिच्चज्ज, पवज्जामस्सिए मुणी। इमे सगे वियाणिज्ज, जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥ २ ॥
तहेव हिंस अलिय, चोज्ज अबम्भसेवण। इच्छाकाम च लोभ च, सजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥
मणोहर चित्तघर, मल्लधूवेण वासिय। सकवाड पण्डुरुल्लोच, मणसावि न पत्थए ॥ ४ ॥
इन्दियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए। दुक्कराइ निवारेउ, कामरागविवड्ढणे ॥ ५ ॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व इक्कओ। पइरिक्के परकडे वा, वास तत्थाभिरोयए ॥ ६ ॥
फासुयम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए। तत्थ सकप्पए वास, भिक्खू परमसजए ॥ ७ ॥
न सयं गिहाइ कुविज्जा णेव अन्नेहिं कारए। गिहकम्मसमारम्भे भूयाण दिस्सए वहो ॥ ८ ॥
तसाण थावराण च, सुहुमाण बादराण य। तम्हा गिहसमारम्भ, सजओ परिवज्जए ॥ ९ ॥
तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य। पाणभूयदयट्ठाए न पए न पयावए ॥ १० ॥
जलधन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीकट्ठनिस्सिया। हमन्ति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खू न पयावए ॥ ११ ॥
विसप्पे सव्वओ धार, बहूपाणिविणासणे। नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइ न दीवए ॥ १२ ॥
हिरण्ण जायरूव च, मणसा वि न पत्थए। समलेट्ठुकञ्चणे भिक्खू, विरए कयविक्कए ॥ १३ ॥
किणन्तो कइओ होइ, विक्किणन्तो य वाणिओ। कयविक्कयम्मि वट्टन्तो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥ १४ ॥
भिक्खियव्वं न केयव्व, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा। कयविक्कओ महादोसो भिक्खावत्ती सुहावहा ॥ १५ ॥
समुयाण उञ्छमेसिज्जा, जहासुत्तमणिन्दिय। लाभालाभम्मि सतुट्ठे पिण्डवाय चरे मुणी ॥ १६ ॥
अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादन्ते अमुच्छिए। न रसट्ठाए भुजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥ १७ ॥
अच्चण रयण चेव, वन्दण पूयण तहा। इड्ढीसक्कारसम्माण, मणसा वि न पत्थए ॥ १८ ॥
सुक्कज्झाण झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे। वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥ १९ ॥
निज्जहिऊण आहार, कालधम्मे उवट्ठिए। जहिऊण माणुस बोन्दि, पहू दुक्खे विमुच्चई ॥ २० ॥
निम्ममे निरहकारे, वीयरागो अणासवो। सपत्तो केवल नाण, सासय परिनिव्वुए ॥ २१ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ अणगारज्झयण समत्त ॥ ३५ ॥

॥ अह जीवाजीवविभत्ती णाम छत्तीसइम अज्झयण ॥

जीवाजीवविभत्तिं, सुणेह मे एगमणा इओ । जं जाणिऊण भिक्खू , सम्मं जयइ संजमे ॥ १ ॥
जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए । अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥ २ ॥
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । परूवणा तेसि भवे, जीवाणमजीवाण य ॥ ३ ॥
रूविणो चेवरूवी य, अजीवा दुविहा भवे । अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा ॥ ४ ॥
धम्मत्थिकाए तद्देसे, तप्पएसे य आहिए । अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ॥ ५ ॥
आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए । अद्धासमए चेव, अरूवी दसहा भवे ॥ ६ ॥
धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया । लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥ ७ ॥
धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाइया । अपज्जवसिया चेव, सव्वद्धं तु वियाहिया ॥ ८ ॥
समएवि संतइं पप्प, एवमेव वियाहिए । आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ॥ ९ ॥
खन्धा य खन्धदेसा य, तप्पएसा तहेव य । परमाणुणो य बोधव्वा, रूविणो य चउव्विहा ॥ १० ॥
एगत्तेण पुहत्तेण, खन्धा य परमाणुणो । लोएगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥ ११ ॥
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ १२ ॥
संतइं पप्प तेऽणाई, अपज्जवसियावि य । ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १३ ॥
असंखकालमुक्कोसं, एक्को समओ जहन्नय । अजीवाण य रूवीणं, ठिई एसा वियाहिया ॥ १४ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, एक्को समओ जहन्नय । अजीवाण य रूवीणं, अन्तरेयं वियाहियं ॥ १५ ॥
वण्णओ गन्धओ चेव, रसओ फासओ तहा । संठाणओ य विन्नेओ, परिणामो तेसि पंचहा ॥ १६ ॥
वण्णओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया । किण्हा नीला य लोहिया, हालिद्दा सुक्किला तहा ॥ १७ ॥
गन्धओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया । सुब्भिगन्धपरिणामा, दुब्भिगन्धा तहेव य ॥ १८ ॥
रसओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया । तित्तकडुयकसाया, अम्बिला महुरा तहा ॥ १९ ॥
फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिया । कक्खडा मउया चेव, गरुया लहुया तहा ॥ २० ॥
सीया उण्हा य निद्धा य, तहा लुक्खा य आहिया । इय फासपरिणया एए, पुग्गला समुदाहिया ॥ २१ ॥
संठाणओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया । परिमण्डला य वट्टा य, तंसा चउरंसमायया ॥ २२ ॥
वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २३ ॥
वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २४ ॥
वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव भइए संठाणओवि य ॥ २५ ॥
वण्णओ पीयए जे उ, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २६ ॥
वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २७ ॥
गन्धओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २८ ॥
गन्धओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ २९ ॥
रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३० ॥

रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३१ ॥
रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३२ ॥
रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ। गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३३ ॥
रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३४ ॥
फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३५ ॥
फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३६ ॥
फासए गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३७ ॥
फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३८ ॥
फासए सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ३९ ॥
फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ४० ॥
फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ४१ ॥
फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥ ४२ ॥
परिमण्डलसंठाणे, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४३ ॥
संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४४ ॥
संठाणओ भवे तंसे, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४५ ॥
संठाणओ जे चउरंसे, भइए से उ वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४६ ॥
जे आययसंठाणे, भइए से वण्णओ। गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४७ ॥
एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया। इत्तो जीवविभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो। ४८ ॥
संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया। सिद्धाणेगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥ ४९ ॥
इत्थी पुरिससिद्धा य, तहेव य नपुंसगा। सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥ ५० ॥
उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य। उड्ढं अहे तिरियं च, समुद्दम्मि जलम्मि य ॥ ५१ ॥
दस य नपुंसएसु वीसं इत्थियासु य। पुरिसेसु य अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झई ॥ ५२ ॥
चत्तारि य गिहलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य। सलिंगेण अट्ठसयं, समएणेण सिज्झई ॥ ५३ ॥
उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झन्ते जुगवं दुवे। चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अट्ठुत्तरं सयं ॥ ५४ ॥

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे, तओ जले वीसमहे तहेव य।
सयं च अट्ठुत्तरं तिरियलोए, समएणेगेण सिज्झई धुवं ॥ ॥ ५५ ॥

कहिं पडिहया सिद्धा, कहिं सिद्धा पइट्ठिया। कहिं बोन्दिं चइत्ताणं, कत्थ गन्तूण सिज्झई ॥ ५६ ॥
अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया। इहं बोन्दिं चइत्ताणं, तत्थ गन्तूण सिज्झई ॥ ५७ ॥
बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे। ईसिपब्भारनामा, पुढवी छत्तसंठिया ॥ ५८ ॥
पणयालसयसहस्सा, जोयणाणं तु आयया। तावइयं चेव वित्थिण्णा, तिगुणो तस्सेव परिरओ ॥ ५९ ॥
अट्ठजोयणबाहुला, सा मज्झम्मि वियाहिया। परिहायन्ती चरिमन्ते, मच्छियपत्ताउ तणुयरी ॥ ६० ॥

अज्जुणसुवण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेण।
उत्ताणगछत्तसंठिया य, भणिया जिणवरेहिं ॥ ६१ ॥

दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥ ९३ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया। साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥ ९४ ॥
पत्तेगसरीराओऽणेगहा ते पकित्तिया। रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥ ९५ ॥
वलया पव्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तहा। हरियकाया बोधव्वा, पत्तेगाइ वियाहिया ॥ ९६ ॥
साहारणसरीराओऽणेगहा ते पकित्तिया। आलुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ॥ ९७ ॥
हरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई केयकन्दली। पलण्डुलसणकन्दे य, कन्दली य कुडुंबए ॥ ९८ ॥
लोहिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य। कन्दे य वज्जकन्दे य, कन्दे सूरणए तहा ॥ ९९ ॥
अस्सकण्णी य बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य। मुसुण्ढी य हलिद्दा, य णेगहा एवमायओ ॥ १०० ॥
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥ १०१ ॥
सतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १०२ ॥
दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया पणगाण। वणप्फईण आउं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १०३ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १०४ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अन्तरं ॥ १०५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १०६ ॥
इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया। इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १०७ ॥
तेऊ वाऊ य बोधव्वा, उराला य तसा तहा। इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १०८ ॥
दुविहा तेऊजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ १०९ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ताणेगहा ते वियाहिया। इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चिजाला तहेव य ॥ ११० ॥
उक्का विज्जू य बोधव्वा णेगहा एवमायओ। एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥ १११ ॥
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा। इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ ११२ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ ११३ ॥
तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई तेऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ ११४ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ ११५ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, तेऊजीवाण अन्तरं ॥ ११६ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ ११७ ॥
दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ११८ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, पञ्चहा ते पकित्तिया। उक्कलिया मण्डलिया, घणगुंजा सुद्धवाया य ॥ ११९ ॥
संवट्टगवाया यणेगहा एवमायओ। एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥ १२० ॥
सुहुमा सव्वलोगम्मि, एगदेसे य बायरा। इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ १२१ ॥
सन्तइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १२२ ॥
तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे। आउठिई वाऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १२३ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १२४ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, वाऊजीवाण अन्तरं ॥ १२५ ॥

पंकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा। इइ, नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥ १५८ ॥
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ वियाहिया। एत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १५९ ॥
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइ पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि य ॥ १६० ॥
सागरोवममेग तु, उक्कोसेण वियाहिया। पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥ १६१ ॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। दोच्चाणं जहन्नेण, एग तु सागरोवमं ॥ १६२ ॥
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। चउत्थीए जहन्नेण, तिण्णेव सागरोवमा ॥ १६३ ॥
दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। चउत्थीए जहन्नेण, सत्तेव सागरोवमा ॥ १६४ ॥
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। चउत्थीए जहन्नेण, सत्तेव सागरोवमा ॥ १६५ ॥
बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। छट्ठीए जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥ १६६ ॥
तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। सत्तमाए जहन्नेण, बावीस सागरोवमा ॥ १६७ ॥
जा चेव य आयठिई, नेरइयाण वियाहिया। सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥ १६८ ॥
अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, नेरइयाण अन्तर ॥ १६९ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १७० ॥

पचिन्दियतिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया।
समुच्छिमतिरिक्खाओ, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥ ॥ १७१ ॥

दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा। नहयरा य बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १७२ ॥
मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा। सुसुमारा य बोधव्वा, पचहा जलहराहिया ॥ १७३ ॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया। एत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १७४ ॥
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य। ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १७५ ॥
एगा य पुव्वकोडी, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई जलयराण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १७६ ॥
पुव्वकोडिपुहत्त तु, उक्कोसेण वियाहिया। कायट्ठिई जलयराणं, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥ १७७ ॥
अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, जलयराण अन्तर ॥ १७८ ॥
चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे। चउप्पया चउविहा, ते मे कित्तयओ सुण ॥ १७९ ॥
एगखुरा दुखुरा चेव, गण्डीपयसणप्पया। हयमाइगोणमाइगयमाइसीहमाइणो ॥ १८० ॥
भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे। गोहाई अहिमाई य, एक्केक्काणेगहा भवे ॥ १८१ ॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया। एत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १८२ ॥
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिई पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १८३ ॥
पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई थलयराण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १८४ ॥
पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्त जहन्निया। कायठिई थलयराण, अन्तर तेसिम भवे ॥ १८५ ॥
कालमणन्तमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय। विजढम्मि सए काए, थलयराण तु अन्तर ॥ १८६ ॥

चम्मे उ लोमपक्खी य, तइया समुग्गपक्खिया।
विययपक्खी य बोधव्वा, पक्खिणो य चउव्विहा ॥ ॥ १८७ ॥

लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया। इत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १८८ ॥

सन्तइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य । ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १८९ ॥
पलिओवमस्स भागो, असंखेज्जइमो भवे । आउट्ठिई खहयराण, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९० ॥
असंखभाग पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया । पुव्वकोडीपुहुत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९१ ॥
ठिई खहयराणं, अन्तरं तेसिमं भवे । कालं अणन्तमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं, जहन्नयं ॥ १९२ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ । संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १९३ ॥
मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण । संमुच्छिमा य मणुया, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥ १९४ ॥
गब्भवक्कन्तिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया । कम्मअकम्मभूमा य, अन्तरद्दीवया तहा ॥ १९५ ॥
पन्नरस तीसविहा, भेया अट्ठवीसइं । संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ॥ १९६ ॥
संमुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ । लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥ १९७ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य । ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १९८ ॥
पलिओवमाउ तिण्णि, असंखेज्जइमो भवे । आउट्ठिई मणुयाणं, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९९ ॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण उ साहिया । पुव्वकोडिपुहुत्तेणं, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ २०० ॥
कायठिई मणुयाण, अन्तरं तेसिमं भवे । अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ २०१ ॥
एएसिं, वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ । संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ २०२ ॥
देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण । भोमिज्जवाणमन्तरजोइसवेमाणिया तहा ॥ २०३ ॥
दसहा उ भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो । पञ्चविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥ २०४ ॥

असुरा नागसुवण्णा, विज्जू अग्गी वियाहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया, थणिया भवणवासिणो ॥ ॥ २०५ ॥
पिसायभूया जक्खा य, रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा, अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥ ॥ २०६ ॥
चन्दा सूरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा ।
ठिया विचारिणो चेव, पञ्चहा जोइसालया ॥ ॥ २०७ ॥

वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया । कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पाईया तहेव य ॥ २०८ ॥
कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मीसाणगा तहा । सणंकुमारमाहिन्दबम्भलोगा य लन्तगा ॥ २०९ ॥
महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा । आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥ २१० ॥
कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया । गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥ २११ ॥
हेट्ठिमा हेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमा मज्झिमा तहा । हेट्ठिमा उवरिमा चेव, मज्झिमा हेट्ठिमा तहा ॥ २१२ ॥

मज्झिमा मज्झिमा चेव, मज्झिमा उवरिमा तहा ।
उवरिमा हेट्ठिमा चेव, उवरिमा मज्झिमा तहा ॥ ॥ २१३ ॥

उवरिमा उवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा । विजया वेजयन्ता य, जयन्ता अपराजिया ॥ २१४ ॥
सव्वट्ठसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा । इय वेमाणिया एएऽणेगहा एवमायओ ॥ २१५ ॥
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया । इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ २१६ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य । ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ २१७ ॥

साहीयं सागर एक्क, उक्कोसेण ठिई भवे। भोमेज्जाणं जहन्नेण, दसवाससहस्सिया ॥ २१८ ॥
पलिओवममेग तु, उक्कोसेण ठिई भवे। वन्तराण जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥ २१९ ॥
पलिओवममेग तु, वासलक्खेण साहिय। पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥ २२० ॥
दो चेव सागराइ, उक्कोसेण वियाहिया। सोहम्मम्मि जहन्नेण, एग च पलिओवम ॥ २२१ ॥
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया। ईसाणम्मि जहन्नेण, साहिय पलिओवम ॥ २२२ ॥
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे। सणकुमारे जहन्नेण, दुन्नि उ सागरोवमा ॥ २२३ ॥
साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेण ठिई भवे। माहिन्दम्मि जहन्नेण, साहिया दुन्नि सागरा ॥ २२४ ॥
दस चेव सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। बम्भलोए जहन्नेण, सत्त ऊ सागरोवमा ॥ २२५ ॥
चउदस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। लन्तगम्मि जहन्नेण, दस उ सागरोवमा ॥ २२६ ॥
सत्तरस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। महासुक्के जहन्नेण, चोद्दस सागरोवमा ॥ २२७ ॥
अट्ठारस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। सहस्सारम्मि जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥ २२८ ॥
सागरा अउणवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे। आणयम्मि जहन्नेण, अट्ठारस सागरोवमा ॥ २२९ ॥
वीस तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। पाणयम्मि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ॥ २३० ॥
सागरा इक्कवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे। आरणम्मि जहन्नेण, वीसई सागरोवमा ॥ २३१ ॥
बावीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। अच्चुयम्मि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥ २३२ ॥
तेवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। पढमम्मि जहन्नेण, बावीस सागरोवमा ॥ २३३ ॥
चउवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। बिइयम्मि जहन्नेण, तेवीस सागरोवमा ॥ २३४ ॥
पणवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। तइय जहन्नेण, चउवीस सागरोवमा ॥ २३५ ॥
छव्वीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। चउत्थम्मि जहन्नेण, सागरा पणुवीसई ॥ २३६ ॥
सागरा सत्तवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे। पञ्चमम्मि जहन्नेण, सागरा उ छवीसई ॥ २३७ ॥
सागरा अट्ठवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे। छट्ठम्मि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसई ॥ २३८ ॥
सागरा अउणतीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे। सत्तमम्मि जहन्नेण, सागरा अट्ठवीसई ॥ २३९ ॥
तीस तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। अट्ठमम्मि जहन्नेण, सागरा अउणतीसई ॥ २४० ॥
सागरा इक्कतीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे। नवमम्मि जहन्नेण, तीसई सागरोवमा ॥ २४१ ॥
तेत्तीसा सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। चउसुपि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कतीसई ॥ २४२ ॥
अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीस सागरोवमा। महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥ २४३ ॥
जा चेव उ आउठिई, देवाण तु वियाहिया। सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥ २४४ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्त जहन्नय। विजढम्मि सए काए, देवाण हुज्ज अन्तरं ॥ २४५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ २४६ ॥
ससारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया। रूविणो चेवरूवी य, अजीवा दुविहावि य ॥ २४७ ॥
इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य। सव्वनयाणमणुमए, रमेज्ज सजमे मुणी ॥ २४८ ॥
तओ बहूणि वासाणि, सामण्णमणुपालिय। इमेण कम्मजोगेण, अप्पाण सलिहे मुणी ॥ २४९ ॥
बारसेव उ वासाइ, सलेहुक्कोसिया भवे। सवच्छरमज्झिमिया, छम्मासा य जहन्निया ॥ २५० ॥

पढमे वासचउक्कम्मि, विगई-निज्जूहणं करे। बिइए वासचउक्कम्मि, विचित्तं तु तवं चरे॥ २५१॥
एगन्तरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे। तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगिट्ठं तवं चरे॥ २५२॥
तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे। परिमियं चेव आयामं, तम्मि संवच्छरे करे॥ २५३॥
कोडीसहियमायामं, कट्टु, संवच्छरे मुणी। मासद्धमासिएणं तु, आहारेण तवं चरे॥ २५४॥

कन्दप्पमाभिओगं च, किव्विसियं मोहमासुरत्तं च।
एयाउ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिया होन्ति॥ ॥ २५५॥

मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा उ हिंसगा। इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही॥ २५६॥
सम्मद्दंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा। इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही॥ २५७॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही॥ ॥ २५८॥

जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं करेन्ति भावेण। अमला असंकिलिट्ठा, ते होन्ति परित्तसंसारी॥ २५९॥

बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूणि।
मरिहिन्ति ते वराया जिणवयणं जे न जाणन्ति॥ ॥ २६०॥

बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही। एएण कारणेणं, अरिहा आलोयणं सोउं॥ २६१॥
कन्दप्पकुक्कुयाइं, तह सीलसहावहासविगहाइं। विम्हावेन्तो य परं, कन्दप्पं भावणं कुणइ॥ २६२॥
मन्ताजोगं काउं, भूईकम्मं च जे पउंजन्ति। साय-रस-इड्ढिहेउं अभिओगं भावणं कुणइ॥ २६३॥
नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं। माई अवण्णवाई, किव्विसियं भावणं कुणइ॥ २६४॥
अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी। एएहि कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणइ॥ २६५॥

सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं च जलपवेसो य।
अणायारभण्डसेवा, जम्मणमरणाणि बंधन्ति॥ ॥ २६६॥

इय पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए। छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसंमुए॥ २६७॥
त्ति बेमि॥ जीवाजीवविभत्ती समत्ता॥ ३६॥

॥ इअ उत्तरज्झयण सुत्तं समत्तं॥

॥ णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

॥ सिरि-दसवेआलियं-सुत्तं ॥

॥ दुमपुप्फिया पढम अज्झयणं ॥

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो । देवा वि त नमसति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रस । ण य पुप्फ किलामेइ, सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए सति साहुणो । विहगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥
वय च वित्तिं लब्भामो, ण य कोइ उवहम्मइ । अहागडेसु रीयते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥
महुगा (का) रसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया । नाणपिंडरया दता, तेण वुच्चति साहुणो ॥ ५ ॥

त्ति बेमि ॥ दुमपुप्फिया पढममज्झयण समत्त ॥

॥ अह सामण्णपुव्वय दुइअ अज्झयण ॥

कह नु कुज्जा सामण्ण, जो कामे न निवारए । पए पए विसीअतो, सकप्पस्स वस गओ ॥ १ ॥
वत्थगधमलकार, इत्थीओ सयणाणि य । अच्छदा जे न भुजति, न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥
जे य कते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठि कुव्वइ । साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

समाइ पेहाइ परिव्वयतो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।
न सा महं नोवि अहं वि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज राग ॥ ॥ ४ ॥
आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं ।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज राग, एवं सुही होहिसि सपराए ॥ ॥ ५ ॥

पक्खदे जलियं जोइ, धूमकेउ दुरासय । नेच्छति वतय भोत्तु, कुले जाया अगधणे ॥ ६ ॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो त जीवियकारणा । वत इच्छसि आवेउ, सेय ते मरण भवे ॥ ७ ॥
अह च भोगरायस्स त चऽसि अधगवण्हिणो । मा कुले गधणा होमो, सजम निहुओ चर ॥ ८ ॥
जइ त काहिसि भाव, जा जा दिच्छसि नारिओ । वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
तीसे सो वयण सोच्चा, सजयाइ सुभासिय । अकुसेण जहा नागो, धम्मे सपडिवाइओ ॥ १० ॥
एव करति सबुद्धा, पडिया पवियक्खणा । विणियट्टति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ सामण्णपुव्वय नाम अज्झयण समत्त ॥ २ ॥

अणेगे बहवे तसा पाणा; तजहा–अडया, पोयया, जराउया, रसया, ससेइमा, सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया, जेसिं केसिंचि पाणाण, अभिकतं, पडिकंत, सकुचियं, पसारियं, रुय, भंतं, तसियं, पलाइयं आगइगइविन्नाया; जे अ कीडपयङ्गा, जा य कुथुपिपीलिया, सबे बेइदिया, सबे तेइदिया, सबे चउरिंदिया, सबे पचिंदिया, सबे तिरिक्खजोणिया, सबे नेरइया, सबे मणुआ, सबे देवा, सबे पाणा, परमाहम्मिआ, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ। इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाण नेव सय दड समारभिज्जा, नेवन्नेहिं दड समारभाविज्जा, दड समारभन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि॥

पढमे भन्ते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं। सबं भन्ते! पाणाइवायं पचक्खामि। से सुहुम वा, बायर वा, तस वा, थावर वा, नेव सय पाणे अइवाइज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि। पढमे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सबाओ पाणाइवायाओ वेरमणं॥ १॥

अहावरे दुच्चे भन्ते! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं। सव भन्ते! मुसावाय पचक्खामि। से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सय मुस वइज्जा, नेवन्नेहिं मुस वायाविज्जा, मुसं वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि। दुच्चे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सबाओ मुसावायाओ वेरमण॥ २॥

अहावरे तच्चे भन्ते! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमण। सब भन्ते! अदिन्नादाण पचक्खामि। से गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, अप्प वा, बहु वा, अणु वा, थूल वा, चित्तमत वा, अचित्तमत वा, नेव सय अदिन्न गिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्न गिण्हाविज्जा, अदिन्न गिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि। तच्चे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सबाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण॥ ३॥

अहावरे चउत्थे भन्ते! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं। सब भन्ते! पचक्खामि। से दिव वा, माणुस वा, तिरिक्खजोणिय वा, नेव सय मेहुण सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुण सेवन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि। चउत्थे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सबाओ मेहुणाओ वेरमण॥ ४॥

अहावरे पञ्चमे भन्ते! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं। सबं भंते! परिग्गह पचक्खामि। से अप्प वा, बहुं वा, अणुं वा, थूल वा, चित्तमत वा, अचित्तमत वा। नेव सयंपरिग्गह परिगिण्हिज्जा,

॥ अह खुड्डयायारकहा तइअ अज्झयण ॥

सजमे सुट्ठिअप्पाण, विप्पमुक्काण ताइण। तेसिमेयमणाइण्ण, निग्गथाण महेसिण ॥ १ ॥
उद्देसियं कीयगड, नियागमभिहडाणि य। राइभत्ते सिणाणे य, गधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
सनिही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए। सबाहणा दतपहोयणा य, सपुच्छणा देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
अट्ठावए य नालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए। तेगिच्छ पाणहापाए, समारभ च जोइणो ॥ ४ ॥
सिज्जायरपिंडं च, आसदीपलियकए। गिहंतरनिसिज्जा य, गायस्सुवट्टणाणि य ॥ ५ ॥
गिहिणो वेआवडियं, जा य आजीववत्तिया। तत्तानिव्वुडभोइत्त, आउरस्सरणाणि य ॥ ६ ॥
मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखंडे अनिव्वुडे। कदे मूले य सचित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥
सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमालोणे य आमए। समुद्दे पसुखारे य, कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
धुवणे त्ति वमणे य, वत्थीकम्मविरेयणे। अजणे दतवणे य, गायब्भगविभूसणे ॥ ९ ॥
सव्वमेयमणाइन्नं, निग्गंथाण महेसिण। संजमम्मि अ जुत्ताण, लहुभूयविहारिणं ॥ १० ॥
पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु सजया। पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गथा उज्जुदसिणो ॥ ११ ॥
आयावयंति गिम्हेसु, हेमतेसु अवाउडा। वासासु पडिसंलीणा, सजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
परीसहरिऊदता, धूअमोहा जिइंदिया। सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥ १३ ॥
दुक्कराइ करित्ताण, दुस्सहाइ सहित्तु य। केइत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झन्ति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइ, सजमेण तवेण य। सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडे ॥ ॥ १५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ खुड्डयायारकहा नाम तइयमज्झयण ॥

॥ अह छज्जीवणियानामं चउत्थं अज्झयण ॥

सुअ मे आउसतेणं भगवया एवमक्खाय, इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयणं धम्मपण्णत्ती ॥ १ ॥ कयरा खलु साछज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेणं कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती ॥ २ ॥ इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयण धम्मपन्नत्ती ॥ तजहा—पुढविकाइया १, आउकाइया २, तेउकाइया ३, वाउकाइया ४, वणस्सइकाइया ५, तसकाइया ६। पुढवी चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण। आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं। तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं। वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थसत्थपरिणएण। वणस्सई चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण तंजहा—अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खधबीया, बीयरुहा, सम्मुच्छिमा, तणलया, वणस्सइकाइया, सबीया चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण। से जे पुण इमे

अणेगे बहवे तसा पाणा; तजहा–अडया, पोयया, जराउया, रसया, ससेइमा, सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया, जेसिं केसिंचि पाणाण, अभिक्कतं, पडिकंत, सकुचियं, पसारिय, रुय, भत, तसिय, पलाइय आगइगइविन्नाया, जे अ कीडपयङ्गा, जा य कुथुपिपीलिया, सब्बे बेइंदिया, सब्बे तेइंदिया, सब्बे चउरिंदिया, सब्बे पंचिंदिया, सब्बे तिरिक्खजोणिया, सब्बे नेरइया, सब्बे मणुआ, सब्बे देवा, सब्बे पाणा, परमाहम्मिआ, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ । इच्चेसिं छण्ह जीवनिकायाण नेव सय दड समारभिज्जा, नेवन्नेहिं दड समारभाविज्जा, दड समारभन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥

पढमे भन्ते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमण । सव्व भन्ते ! पाणाइवाय पच्चक्खामि । से सुहुम वा, बायर वा, तस वा, थावर वा, नेव सयं पाणे अइवाइज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि । पढमे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दुच्चे भन्ते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमण । सव्व भन्ते ! मुसावायं पच्चक्खामि । से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सय मुस वइज्जा, नेवन्नेहिं मुस वायाविज्जा, मुसं वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि । दुच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण ॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भन्ते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं । सव्व भन्ते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि । से गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, अप्प वा, बहु वा, अणु वा, थूल वा, चित्तमतं वा, अचित्तमंतं वा, नेव सय अदिन्न गिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्न गिण्हाविज्जा, अदिन्नं गिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि । तच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भन्ते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमण । सव्व भन्ते ! पच्चक्खामि । से दिव्वं वा, माणुस वा, तिरिक्खजोणिय वा, नेव सय मेहुण सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुण सेवन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि । चउत्थे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण ॥ ४ ॥

अहावरे पञ्चमे भन्ते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमण । सव्व भते ! परिग्गह पच्चक्खामि । से अप्प वा, बहु वा, अणु वा, थूलं वा, चित्तमत वा, अचित्तमत वा। नेव सयपरिग्गहं गिण्हि

नेवन्नेहिं परिग्गह परिगिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि। पञ्चमे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भन्ते! वए राइभोअणाओ वेरमण। सव्व भन्ते! राइभोयण पचक्खामि। से असण वा, पाण वा, खाइम वा, साइम वा। नेव सय राइ भुजिज्जा, नेव राइं भुजिज्जा, नेवन्नेहिं राइं भुजाविज्जा, राइ भुजतेऽवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि। छट्ठे भते! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥६॥ इच्चेयाइ पचमहव्वयाइ राइभोअणवेरमणछट्ठाइ अत्तहियट्ठियाए उवसपज्जित्ता ण विहरामि ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपचक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिल वा, लेलु वा, ससरक्ख वा काय, ससरक्ख वा वत्थ, हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण किलिंचेण वा, अगुलियाए वा, सिलागाए वा, सिलागहत्थेण वा न आलिहिज्जा, न विलिहिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिंदिज्जा, अन्न न आलिहाविज्जा, न विलिहाविज्जा, न घट्टाविज्जा, न भिंदाविज्जा, अन्न आलिहंत वा, विलिहत वा, घट्टत वा, भिंदत वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्न न समणुजाणामि तस्स। भते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि।' १ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा सजयविरयपडिहयपचक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदग वा, ओस वा, हिम वा, महिय वा, करग वा, हरितणुग वा, सुद्धोदग वा, उदउल्ल वा वत्थ, ससिणिद्ध वा काय, ससिणिद्ध वा वत्थ न आमुसिज्जा, न सफुसिज्जा, न आवीलिज्जा, न पवीलिज्जा, न अक्खोडिज्जा, न पक्खोडिज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्नं न आमुसाविज्जा, न सफुसाविज्जा, न आवीलाविज्जा, न पवीलाविज्जा, न अक्खोडाविज्जा, न पक्खोडाविज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्न आमुसत वा, सफुसतं वा, आवीलत वा, पवीलतं वा, अक्खोडत वा, पक्खोडत वा, आयावन्त वा, पयावन्त वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए, तिविह तिविहेणं मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंत पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥२॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपचक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणिं वा, इगाल वा, मुम्मुर वा, अच्चि वा, जालं वा, अलाय वा, सुद्धागणिं वा, उक्क वा, न उजिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिंदिज्जा, न उज्जालिज्जा, न पज्जालिज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्न न उज्जाविज्जा, न घट्टाविज्जा, न भिंदाविज्जा, न

उज्जालाविज्जा, न पज्जालाविज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्न उज्जन्त वा, पज्जन्त वा, भिदतं वा, उज्जालव वा, पज्जालतं वा, निव्वावतं वा, न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ३ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सञ्जयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुयणेण वा, तालियण्टेण वा, पत्तेण वा, पत्तभङ्गेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुणहत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा काय, बाहिर वा वि पुग्गल न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्न न फूमाविज्जा, न वीआविज्जा, अन्न फूमन्त वा, वीअन्त वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ४ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा, बीयपइट्ठेसु वा, रूढेसु वा, रूढपइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जायपइट्ठेसु वा, हरिएसु हरियपइट्ठेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइट्ठेसु वा, सचित्तेसु वा, सचित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न निसीइज्जा, न तुअट्टिज्जा, अन्न न गच्छाविज्जा, न चिट्ठाविज्जा, न निसीआविज्जा, न तुअट्टाविज्जा, अन्न गच्छत वा, चिट्ठत वा, निसीअत वा, तुयट्टत वा न समणुजामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ५ ॥

से भिक्खु वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीड वा, पयग वा, कुथु वा, पिपीलिय वा, हत्थसि वा, पायसि वा, बाहुसि वा, उरुसि वा, उदरसि वा, सीसंसि वा, वत्थसि वा, पडिग्गहसि वा, कवलसि वा, पायपुच्छणसि वा, रयहरणसि वा, गुच्छगंसि वा, उडगसि वा, दडगसि वा, पीढगसि वा, फलगसि वा, सथारगसि वा, अन्नयरसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ सजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिअ एगतमवणिज्जा, नो ण सघायमावज्जिज्जा ॥ ६ ॥

अजय चरमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बन्धइ पावय कम्मं, त से होइ कडुअ फल ॥ १ ॥
अजय चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ २ ॥
अजय आसमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ३ ॥
अजय सयमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ४ ॥
अजय भुञ्जमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ५ ॥
अजय भासमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फलं ॥ ६ ॥

कहं चरे कह चिट्ठे, कहमाए कह सए। कहं भुजन्तो भासतो, पावकम्म न बधइ ॥ ७ ॥
जय चरे जय चिट्टे, जयमासे जय सए। जय भुजन्तो भासतो, पावकम्म न बधइ ॥ ८ ॥
सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ। पिहिआसवस्स दतस्स, पावकम्म न बधइ ॥ ९ ॥
पढम नाणं तओ दया, एव चिट्ठइ सव्वसजए। अन्नाणी किं काही, किं वा नाही सेयपावग ॥ १० ॥
सोच्चा जाणइ कल्लाण, सोच्चा जाणइ पावग। उभय पि जाणइ सोच्चा, ज सेय त समायरे ॥ ११ ॥
जो जीवे वि न याणइ, अजीवे वि न याणइ। जीवाजीवे अयाणतो, कह सो नाहीइ सजम ॥ १२ ॥
जो जीवे वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ। जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहीइ सजम ॥ १३ ॥
जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ। तया गइ बहुविह, सव्व जीवाण जाणइ ॥ १४ ॥
जया गइ बहुविह, सव्वजीवाण जाणइ। तया पुण्ण च पाव च, बध मुक्ख च जाणइ ॥ १५ ॥
जया पुण्ण च पाव च, बध मुक्ख च जाणइ। तया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥
जया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे। तया चयइ सजोग, सब्भिन्तर बाहिरं ॥ १७ ॥
जया चयइ संजोग, सब्भितर बाहिर। तया मुडे भवित्ताण, पव्वइए अणगारिय ॥ १८ ॥
जया मुंडे भवित्ताण, पव्वइए अणगारिय। तया सवरमुक्किट्ठ, धम्म फासे अणुत्तर ॥ १९ ॥
जया संवरमुक्किट्ठ, धम्म फासे अणुत्तर। तया धुणइ कम्मरय, अबोहिकलुस कड ॥ २० ॥
जया धुणइ कम्मरय, अबोहिकलुस कड। तया सव्वत्तग नाण, दसण चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥
जया सव्वत्तग नाणं, दंसण चाभिगच्छइ। तया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥
जया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली। तया जोगे निरुभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ॥ २३ ॥
जया जोगे निरुभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ। तया कम्म खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥
जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ। तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥ २५ ॥

सुह सायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणापहोअस्स, दुल्लहा सुगई तारिसगस्स ॥ २६ ॥
तवोगुणपहाणस्स, उज्जुमइ खन्तिसजमरयस्स।
परीसहे जिणतस्स, सुलहा सुगई तारिसगस्स ॥ २७ ॥
पच्छा वि ते पयाया, खिप्प गच्छति अमरभवणाइ।
जेसिं पिओ तवो सजमो अ, खती अ बभचर च ॥ २८ ॥
इच्चेयं छज्जीवणिअ, सम्मदिट्ठी सया जए।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मुणा न विराहिज्जासि ॥ २९ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ छज्जीवणिआ णामं चउत्थं अज्झयणं समत्त ॥ ४ ॥

॥ अह पिंडेसणा णाम पंचमज्झयण ॥

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असंभतो अमुच्छिओ । इमेण कमजोगेण, भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥
से गामे वा नगरे वा, गोअरग्गगओ मुणी । चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेअसा ॥ २ ॥
पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे । वज्जंतो बीअहरियाइ, पाणे अ दगमट्टिअं ॥ ३ ॥
ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए । संकमेण न गच्छिज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए । हिंसेज्ज पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥
तम्हा तेण न गच्छिज्जा, संजए सुसमाहिए । सइ अण्णेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥
इंगालं छारियं रासिं, तुसरासिं च गोमयं । ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नइक्कमे ॥ ७ ॥
न चरेज्ज वासे वासंते, महियाए पडंतिए । महावाए व वायंते, तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
न चरेज्ज वेससामंते, बंभचेरवसाणुए । बंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तत्थ विसोत्तिआ ॥ ९ ॥
अणायणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं । होज्ज वयाणं पीला, सामण्णम्मि अ संसओ ॥ १० ॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं । वज्जए वेससामन्तं, मुणी एगंतमस्सिए ॥ ११ ॥
साणं सूइअं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं । संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए ॥ १२ ॥
अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले । इंदिआइं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो अ गोचरे । हसन्तो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया ॥ १४ ॥
आलोअं थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि अ । चरन्तो न विणिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए ॥ १५ ॥
रन्नो गिहवईणं च, रहस्सारक्खियाण य । संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥ १६ ॥
पडिकुट्ठं कुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए । अचियत्तं कुलं न पविसे, चियत्तं पविसे कुलं ॥ १७ ॥
साणीपावारपिहिअं, अप्पणा नावपंगुरे । कवाडं नो पणुल्लिज्जा, उग्गहंसि अजाइआ ॥ १८ ॥
गोअरग्गपविट्ठो अ, वच्चमुत्तं न धारए । ओगासं फासुअं नच्चा, अणुन्नविय वोसिरे ॥ १९ ॥
णीयं दुवारं तमसं, कुट्ठगं परिवज्जए । अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥ २० ॥
जत्थ पुप्फाइं बीआइं, विप्पइन्नाइं कोट्ठए । अहुणोवलित्तं उल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए ॥ २१ ॥
एलगं दारगं साणं, वच्छगं वा वि कुट्ठए । उल्लंघिआ न पविसे, विऊहित्ताण व संजए ॥ २२ ॥
असंसत्तं पलोइज्जा, नाइदूरावलोअए । उप्फुल्लं न विणिज्झाए, निअट्टिज्ज अयंपिरो ॥ २३ ॥
अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोअरग्गगओ मुणी । कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिअं भूमिं परक्कमे ॥ २४ ॥
तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागविअक्खणो । सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए ॥ २५ ॥
दगमट्टिअआयाणे, बीआणि हरिआणि अ । परिवज्जंतो चिट्ठिज्जा, सव्विंदिअसमाहिए ॥ २६ ॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहारे पाणभोअणं । अकप्पिअं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं ॥ २७ ॥
आहरन्ती सिआ तत्थ, परिसाडिज्ज भोअणं । दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ २८ ॥
संमद्दमाणी पाणाणि, बीआणि हरिआणि अ । असंजमकरिं नच्चा, तारिसिं परिवज्जए ॥ २९ ॥
साहट्टु निक्खिवित्ता णं, सचित्तं घट्टियाणि य । तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणुल्लिया ॥ ३० ॥

ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहारे पाणभोअण । दिंतिअ पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ३१ ॥
पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ३२ ॥
एव उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टिआओसे । हरिआले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥ ३३ ॥
गेरुअवन्निअसेढिअ, सोरट्ठिअपिट्ठकुक्कुसकए अ । उक्किट्ठमससट्ठे, ससट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥ ३४ ॥
असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा । दिज्जमाण न इच्छिज्जा, पच्छाकम्म जहिं भवे ॥ ३५ ॥
संसट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा । दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, ज तत्थेसणिय भवे ॥ ३६ ॥
दुण्ह तु भुंजमाणाण, एगो तत्थ निमतए । दिज्जमाण न इच्छिज्जा, छदं से पडिलेहए ॥ ३७ ॥
दुण्ह भुजमाणाण, दो वि तत्थ निमंतए । दिज्जमाण पडिच्छिज्जा, ज तत्थेसणिय भवे ॥ ३८ ॥
गुव्विणीए उवण्णत्थ, विविहं पाणभोअण । भुजमाण विवज्जिज्जा, भुत्तसेस पडिच्छए ॥ ३९ ॥
सिआ य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी । उट्ठिआ वा निसीइज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥ ४० ॥
त भवे भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४१ ॥
थणग पिज्जमाणी, दारग वा कुमारिअ । तं निक्खिवित्तु रोअत, आहारे पाणभोयण ॥ ४२ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिय । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४३ ॥
जं भवे भत्तपाण तु, कप्पाकप्पम्मि सकिय । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४४ ॥
दगवारेण पिहिअं, नीसाए पीढएण वा । लोढेण वा विलेवेण, सिलेसेण वा केणइ ॥ ४५ ॥
तं च उब्भिदिआ दिज्जा, समणट्ठा एव दावए । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४६ ॥
असणं पाणग वावि, खाइम साइम तहा । ज जाणिज्जा सुणिज्ज वा, दाणट्ठा पगड इम ॥ ४७ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४८ ॥
असण पाणगं वावि, खाइम साइम तहा । ज जाणिज्जा सुणिज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इम ॥ ४९ ॥
तं भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ५० ॥
असणं पाणग वावि, खाइम साइमं तहा । ज जाणिज्जा सुणिज्जा वा, वणिमट्ठा पगड इम ॥ ५१ ॥
त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ५२ ॥
असण पाणगं वावि, खाइम साइम तहा । ज जाणिज्ज सुणिज्जा वा, समणट्ठा पगड इम ॥ ५३ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ५४ ॥
उद्देसिय कीयगड, पूइकम्म च आहड । अज्झोअरपामिच्च, मीसजाय विवज्जए ॥ ५५ ॥
उग्गम से अ पुच्छिज्जा, कस्सट्ठा केण वा कड । सुच्चा निस्सकिय सुद्ध, पडिगाहिज्ज सजए ॥ ५६ ॥
असणं पाणग वावि, खाइम साइम तहा । पुप्फेसु हुज्ज उम्मीस, बीएसु हरिएसु वा ॥ ५७ ॥
त भवे भत्तपाणं तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ५८ ॥
असण पाणग वावि, खाइम साइम तहा । उदगम्मि हुज्ज निक्खित्त, उत्तिगपणगेसु वा ॥ ५९ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअं । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ६० ॥

असण पाणग वावि, खाइम साइम तहा ।
तेउम्मि (अगणिम्मि) होज निक्खित्तं, त च सघट्टिआ दए ॥ ॥ ६१ ॥

त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअं । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिम ॥ ६२ ॥

एव उस्सिक्किया ओसक्किया, उज्जालिआ पज्जालिआ निव्वाविया ।
उस्सिचिया निस्सिचिया, उववत्तिया (उव्वचिया)ओवारिया दए ॥ ॥ ६३ ॥

त भवे भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पिअ । दितिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६४ ॥
हुज्ज कट्ठ सिल वावि, इट्टाल वावि एगया । ठविअं सकमट्ठाए, त च हुज्ज चलाचल ॥ ६५ ॥
न तेण भिक्खू गच्छिज्जा, दिट्ठो तत्थ असजमो । गभीर झुसिर चेव, सव्विदिअ समाहिए ॥ ६६ ॥
निस्सेणिं फलग पीढ, उस्सवित्ता ण मारुहे । मच कील च पासाय, समणट्ठा एव दावए ॥ ६७ ॥

दुरूहमाणी पवडिज्जा, (पडिवज्जा) हत्थ पाय च लूसए ।
पुढवीजीवे वि हिंसेज्जा, जे अ तन्निस्सिआ जगे ॥ ॥ ६८ ॥

एआरिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो । तम्हा मालोहड भिक्खू, न पडिगिण्हसि सजया ॥ ६९ ॥
कद मूल पलब वा, आमं छिन्न च सन्निर । तुबाग सिंगबेर च, आमगं परिवज्जए ॥ ७० ॥
तहेव सत्तुचुन्नाइ, कोलचुन्नाइ आवणे । सक्कुलिं फाणिअ पूअं, अन्न वा वि तहाविह ॥ ७१ ॥
विक्कायमाण पसढ, रएण परिफासिअ । दितिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ७२ ॥
बहुअट्ठिअं पुग्गल, अणिमिसं वा बहुकटय । अत्थिय तिंदुय बिल्ल, उच्छुखड व सिंबलिं ॥ ७३ ॥

अप्पे सिआ भोअणजाए, बहुउज्झिय धम्मिए (य) ।
दितिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ॥ ७४ ॥

तहेवुच्चावय पाण, अदुवा वारधोअणं । ससेइम चाउलोदग, अहुणाधोअ विवज्जए ॥ ७५ ॥
जाजाणेज्जा चिराधोआ, मइए दसणेण वा, पडिपुच्छिऊण सुच्चा वा, ज च निस्सकिय भवे ॥ ७६ ॥
अजीव परिणय नच्चा, पडिगाहिज्ज सजए । अह सकियं भविज्जा, आसाइत्ताण रोअए ॥ ७७ ॥
थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे । मामे अच्चबिल पूअ, नाल तिण्ह विणित्तए ॥ ७८ ॥
त च अच्चबिल पूअ, नाल तिण्हविणित्तए । दितिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७९ ॥
त च हुज्जा अकामेण, विमणेण पडिच्छिअ । त अप्पणा न पिबे । नो वि अन्नस्स दावए ॥ ८० ॥
एगतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिआ । जय परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८१ ॥
सिया अ गोअरग्गओ इच्छिज्जा परिभुत्तुअ । कुट्ठग भित्तिमूल वा, पडिलेहित्ताण फासुअ ॥ ८२ ॥
अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छिन्नम्मि सवुडे । हत्थग सपमज्जित्ता, तत्थ भुजिज्ज सजए ॥ ८३ ॥
तत्थ से भुजमाणस्स, अट्ठिअ कटओ सिआ । तणकट्ठसक्कर वावि, अन्न वावि तहाविह ॥ ८४ ॥
त उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डए । हत्थेण त गहेऊण, एगतमवक्कमे ॥ ८५ ॥
एगतमवक्कमित्ता अचित्त पडिलेहिआ । जय परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८६ ॥
सिआ अभिक्खुइच्छिज्जा, सिज्जमागम्म भुत्तुअ । सपिंडपायमागम्म, उडुअ पडिलेहिआ ॥ ८७ ॥
विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी । इरियावहियमायाय, आगओ अ पडिक्कमे ॥ ८८ ॥
आभोइत्ताण नीसेसं, अइआर च जहक्कम । गमणागमणे चेव, भत्ते पाणे व सजए ॥ ८९ ॥
उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो, अवक्खित्तेण चेअसा । आलोए गुरुसगासे, ज जहा गहिय भवे ॥ ९० ॥
न सम्ममालोइअ हुज्जा, पुव्विं पच्छा व ज कड । पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसट्ठो चितए इम ॥ ९१ ॥

अहो जिणेहिं असावज्जा, वित्ती साहूण देसिआ। मुक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥ ९२ ॥
णमुक्कारेण पारित्ता, करित्ता जिणसंथवं। सज्झाय पट्ठवित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी ॥ ९३ ॥
वीससंतो इमं चिंते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ। मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू हुज्जामि तारिओ ॥ ९४ ॥
साहवो तो चियत्तेण, निमंतिज्ज जहक्कमं। जइ तत्थ केइ इच्छिज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥ ९५ ॥
अह कोइ न इच्छिज्जा, तओ भुंजिज्ज एक्कओ। आलोए भायणे साहू जयं अपरिसाडिअं ॥ ९६ ॥

तित्तगं च कडुअं च, कसायं अविलं च महुरं लवणं वा।
एयलद्धमन्नत्थपउत्तं, महुघयं व भुंजिज्ज संजए ॥ ॥ ९७ ॥

अरसं विरसं वावि, सूइअं वा असूइअं। उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथुकुम्मासभोअणं ॥ ९८ ॥
उप्पण्णं नाइहीलिज्जा, अप्पं वा बहु फासुअं। मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जिअं ॥ ९९ ॥
दुल्लहाओ मुहादाई, मुहाजीवी, वि दुल्लहा। मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गइं ॥ १०० ॥

॥ इअ पिंडेसणाए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाइ संजए। दुगंधं वा, सुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए ॥ १ ॥
सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो अ गोयरे। अयावयट्ठा भुच्चाणं, जइ तेणं न संथरे ॥ २ ॥
तओ कारणमुप्पण्णे, भत्तपाणं गवेसए। विहिणा पुव्वउत्तेण, इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जित्ता (ज्जा), काले कालं समायरे ॥ ॥ ४ ॥
अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि।
अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ॥ ५ ॥

सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारिअं। अलाभोत्ति न सोइज्जा, तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया। तं उज्जुअं न गच्छिज्जा, जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
गोअरग्गपविट्ठो अ, न निसीइज्ज कत्थई। कहं च न पबंधिज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए। अवलंबिअ न चिट्ठिज्जा, गोअरग्गओ मुणी ॥ ९ ॥
समणं माहणं वावि, किविणं वा वणीमगं। उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १० ॥
तमइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोअरे। एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठिज्ज संजए ॥ ११ ॥
वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा। अप्पत्तिअं सिआ हुज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ॥ १२ ॥
पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए। उवसंकमिज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १३ ॥
उप्पलं पउमं वावि, कुमुअं वा मगदंतिअं। अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संलुंचिआ दए ॥ १४ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं। दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ १५ ॥
उप्पलं पउमं वावि, कुमुअं वा मगदंतिअं। अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संमद्दिआ दए ॥ १६ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं। दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ १७ ॥
सालुअं वा विरालिअं, कुमुअं उप्पलनालिअं। मुणालिअं सासवनालिअं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥ १८ ॥
तरुणगं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा। अन्नस्स वा वि हरिअस्स, आमगं परिवज्जए ॥ १९ ॥

तरुणिअ वा छिवाडिं, आमिअं भज्जियं सयं। दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ २० ॥
तहा कोलमणुस्सिन्नं, वेलुअं कासवनालिअं। तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए ॥ २१ ॥
तहेव चाउलं पिट्ठं, विअडं वा तत्तनिव्वुडं। तिलपिट्ठपूइपिन्नागं, आमगं परिवज्जए ॥ २२ ॥
कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगत्तिअं, आमं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥ २३ ॥
तहेव फलमथूणि, बीअमथूणि जाणिआ। विहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥ २४ ॥
समुआणं चरे भिक्खू कुलमुच्चावयं सया। नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए ॥ २५ ॥
अदीणो वित्तिमेसिज्जा, न विसीएज्ज पंडिए। अमुच्छिओ भोअणम्मि, मायण्णे एसणारए ॥ २६ ॥
बहु परघरे अत्थि विविहं खाइमसाइमं। न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा दिज्ज परो न वा ॥ २७ ॥
सयणासणवत्थं वा, भत्तं पाणं च संजए। अदितस्स न कुप्पिज्जा, पच्चक्खे वि अ दीसओ ॥ २८ ॥
इत्थिअं पुरिसं वावि, डहरं वा महल्लगं। वंदमाणं न जाइज्जा, नो अ णं फरुसं वए ॥ २९ ॥
जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे। एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ ॥ ३० ॥
सिआ एगइओ लद्धुं लोभेण विणिगूहइ। मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूण सयमायए ॥ ३१ ॥
अत्तट्ठा गुरुओ लुद्धो, बहु पावं पकुव्वइ। दुत्तोसओ अ से (सो) होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥ ३२ ॥
सिआ एगइओ लद्धुं, विविहं पाणभोअणं। भद्दगं भद्दगं भुच्चा, विवन्नं विरसमाहरे ॥ ३३ ॥
जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी। संतुट्ठो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ ॥ ३४ ॥
पूयणट्ठा जसोकामी, माणसम्माणकामए। बहुं पसवई पावं, मायासल्लं च कुव्वइ। ३५ ॥
सुरं वा मेरगं वावि, अन्नं वा मज्जगं रसं। ससक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥ ३६ ॥
पियए एगओ तेणो न मे कोई विआणइ। तस्स पस्सह दोसाइं, निअडिं च सुणेह मे ॥ ३७ ॥
वड्ढई सुंडिआ तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो। अयसो अ अनिव्वाणं, सययं च असाहुआ ॥ ३८ ॥
निच्चुव्विग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मई। तारिसो मरणंते वि न आराहइ संवरं ॥ ३९ ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे आवि तारिसो। गिहत्था वि णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥ ४० ॥
एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विवज्जए। तारिसो मरणंते वि, ण आराहेइ संवरं ॥ ४१ ॥
तवं कुव्वइ मेहावी, पणीअं वज्जए रसं। मज्जप्पमायविरओ, तवस्सी अइउक्कसो ॥ ४२ ॥
तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेगसाहुपूइअं। विउलं अत्थसंजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे ॥ ४३ ॥
एवं तु गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जए (ओ)। तारिसो मरणंते वि, आराहेइ संवरं ॥ ४४ ॥
आयरिए आराहेइ, समणे आवि तारिसो। गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं। ४५ ॥
तवतेणे वयतेणे, रूवतेणे अ जे नरे। आयारभावतेणे अ, कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥ ४६ ॥
लद्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिब्बिसे। तत्थावि से न याणाइ किं मे किच्चा इमं फलं ॥ ४७ ॥
तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भई एलमूअगं। नरगं तिरिक्खजोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा। ४८ ॥
एअं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासिअं। अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए ॥ ४९ ॥
सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे। तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिंदिए, तिव्वलज्जगुणवं विहरिज्जासि ॥५०॥ त्ति बेमि॥ इअ पिंडेसणाए बीओ उद्देसो॥ पंचमज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह छट्ठं धम्मत्थकामज्झयणं ॥

नाणदंसणसंपन्नं, संजमे अ तवे रयं। गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥
रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिआ। पुच्छंति निहुअप्पाणो, कहं मे आयारगोयरो ॥ २ ॥
तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूअसुहावहो, सिक्खाए सुसमाउत्तो, आयक्खइ विअक्खणो ॥ ३ ॥
हंदि धम्मत्थकामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे। आयारगोअरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठिअं ॥ ४ ॥
नन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं। विउलट्ठाणभाइस्स, न भूअं न भविस्सइ ॥ ५ ॥
सखुड्डगविअत्ताणं, वाहिआणं च जे गुणा। अखंडफुडिआ कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥
दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झइ। तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथत्ताओ भस्सइ ॥ ७ ॥
वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियंकनिसि[सि]ज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥ ८ ॥
तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसिअं। अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥
जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा। ते जाणमजाणं वा, न हणे णो विघायए ॥ १० ॥
सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं। तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ ११ ॥
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया। हिंसगं न मुसं बूआ, नोवि अन्नं वयावए ॥ १२ ॥
मुसावाओ य लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरिहिओ। अविस्सासो य भूआणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥ १३ ॥
चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं। दंतसोहणमित्तं पि, उग्गहंसि अजाइया ॥ १४ ॥
तं अप्पणा न गिण्हंति, नो वि गिण्हावए परं। अन्नं वा गिण्हमाणं पि, नाणुजाणंति संजया ॥ १५ ॥
अबंभचरिअं घोरं, पमायं दुरहिट्ठिअं। नायरंति मुणी लोए, भेआययणवज्जिणो ॥ १६ ॥
मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं। तम्हा मेहुणसंसग्गं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ १७ ॥
विडमुब्भेइमं लोणं, तिल्लं सप्पिं च फाणिअं। न ते संनिहिमिच्छंति, नायपुत्तवओरया ॥ १८ ॥
लोहस्सेसणुफासे, मन्ने अन्नयरामवि। जे सिया सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से ॥ १९ ॥
जं पि वत्थं च पायं वा, कंबलं पायपुंछणं। तं पि संजमलज्जट्ठा, धारंति परिहरंति अ ॥ २० ॥
न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा। मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २१ ॥
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खणपरिग्गहे। अवि अप्पणोऽवि देहम्मि, नायरंति ममाइयं ॥ २२ ॥
अहो निच्चं तवो कम्मं, सव्वबुद्धेहिं वण्णिअं। जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोअणं ॥ २३ ॥
संति मे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा। जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणिअं चरे ॥ २४ ॥
उदउल्लं बीअसंसत्तं, पाणा निवडिया महिं। दिआ ताइं विवज्जिज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ॥ २५ ॥
एअं च दोसं दट्ठुणं, नायपुत्तेण भासियं। सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइभोअणं ॥ २६ ॥
पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥ २७ ॥
पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए। तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ २८ ॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं। पुढविकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥ २९ ॥
आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥ ३० ॥

आउकाय विहिंसंतो, हिंसई तयस्सिए । तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ३१ ॥
तम्हा एअ विआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढणं । आउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३२ ॥
जायतेअ न इच्छंति पावगं जलइत्तए । तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासयं ॥ ३३ ॥
पाईणं पडिणं वावि, उड्ढं अणुदिसामवि । अहे दाहिणिओ वा वि, दहे उत्तरओ वि अ ॥ ३४ ॥
भूआणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ । तं पईवपयावट्ठा, संजया किंचि नारभे ॥ ३५ ॥
तम्हा एयवियाणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढणं । तेउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३६ ॥
अणिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नंति तारिसं । सावज्जबहुलं चेअं, नेअं ताईहिं सेविअं ॥ ३७ ॥
तालिअंटेण पत्तेण, साहाविहुअणेण वा । न ते वीइउमिच्छंति, वीआवेऊण वा परं ॥ ३८ ॥
जं पि वत्थं व (च) पायं वा, कंबलं पायपुंछणं न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति अ ॥ ३९ ॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं । वाउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४० ॥
वणस्सइं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा । तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥ ४१ ॥
वणस्सइं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए । तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ४२ ॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं । वणस्सइ समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४३ ॥
तसकाय न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा । तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥ ४४ ॥
तसकाय विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए । तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ४५ ॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं । तसकायसमारंभं, जाज्जीवाए [इ] वज्जए ॥ ४६ ॥
जाइं चत्तारि भुज्जाइं, इसिणा हारमाइणि । ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अणुपालए ॥ ४७ ॥
पिंडं सिज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य । अकप्पिअं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं ॥ ४८ ॥
जे नियागं ममायंति, कीअमुद्देसिआहडं । वहं ते समणुजाणंति, इअ उ (वु)त्त महेसिणा ॥ ४९ ॥
तम्हा असणपाणाइ, कीयमुद्देसियाहडं । वज्जयंति ठिअप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो ॥ ५० ॥
कंसेसु कंसपाएसु कुंडमोएसु वा पुणो । भुंजंतो असणपाणाइ, आयरा परिभस्सइ ॥ ५१ ॥
सीओदग समारंभे, मत्तधोअणछड्डणे जाइं छन्नंति भूआइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥ ५२ ॥
पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिआ तत्थ न कप्पइ । एअमट्ठं न भुंजंति, निग्गंथा गिहिभायणे ॥ ५३ ॥
आसंदीपलिअंकेसु, मंचमासालएसु वा । अणायरिअमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥ ५४ ॥
नासंदीपलिअंकेसु, न निसिज्जा न पीढए । निग्गंथा पडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥ ५५ ॥
गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा । आसंदी पलिअंको अ, एयमट्ठं विवज्जिआ ॥ ५६ ॥
गोअरग्गपविट्ठस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ । इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहिअं ॥ ५७ ॥
विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो । वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ॥ ५८ ॥
अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वा वि संकणं । कुसीलवड्ढणं, ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥ ५९ ॥
तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ । जराए अभिभूअस्स, वाहिअस्स तवस्सिणो ॥ ६० ॥
वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए । वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ॥ ६१ ॥
संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु अ । जे अ भिक्खू सिणायंतो, विअडेणुप्पिलावए ॥ ६२ ॥
तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा । जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाणमहिट्ठगा ॥ ६३ ॥

सिणाणं अदुवा क्क, लुद्द पउमगाणि अ। गायस्सुबट्टणट्ठाए, नायरति कयाइ वि ॥ ६४ ॥
नगिणस्स वावि मुंटस्स, दीहरोमनहंसिणो। मेहुणाओ उवसतस्स, किं विभूसाए कारिअं ॥ ६५ ॥
विभूसावत्तिअं भिक्खू, कम्मं बधइ चिक्कणं। संसारसायरे घोरे, जेण पडइ दुरुत्तरे ॥ ६६ ॥
विभूसावत्तिअं चेअ, बुद्धा मन्नति तारिसं। सावज्ज बहुल चेअ, नेय ताईहि सेविअं ॥ ६७ ॥

खवंति अप्पाणममोहदंसिणो, तवे रया संजम अज्जवे गुणे।
धुणंति पावाइं, पुरेकडाइं नवाइं पावाइं न ते करंति ॥ ॥ ६८ ॥
सओवसंता अममा अकिंचणा, सविज्जविज्जाणुगया जससिणो।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा। सिद्धिं विमाणाइं उवेंति (वयंति) ताइणो ॥ ६९ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ छट्ठं धम्मत्थकामज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

॥ अह सुवक्कसुद्धी णाम सत्तमं अज्झयणं ॥

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पन्नवं। दुण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासिज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा अ सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा अ जा मुसा। जा अ बुद्धेहिं नाइन्ना, न तं भासिज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकक्कसं। समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासिज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
एयं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं। स भासं सच्चमोसं च पि तं (पि) धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
वितहं पि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए नरो। तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुण जो मुसं वए ॥ ५ ॥

तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ॥ ॥ ६ ॥

एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि संकिआ। संपयाइअमट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
अईअम्मि अ कालम्मि, पच्चुप्पण्णमणागए। जमट्ठं तु न जाणिज्जा, एवमेअं ति नो वए ॥ ८ ॥
अईअम्मि अ कालम्मि, पच्चुप्पण्णमणागए। जत्थ संका भवे तं तु, एवमेअं तु नो वए ॥ ९ ॥
अईअम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पणमणागए। निस्संकिअं भवे जं तु, एवमेअं तु निद्दिसे ॥ १० ॥
तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी। सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ॥ ११ ॥
तहेव काणं काणं त्ति, पंडगं पंडगं त्ति वा। वाहिअं वा वि रोगि त्ति, तेणं चोर त्ति नो वए ॥ १२ ॥
एएणन्नेण अट्ठेण, परो जेणुवहम्मइ। आयारभावदोसन्नू, न तं भासिज्ज पण्णवं ॥ १३ ॥
तहेव होले गोलि त्ति, साणे वा वसुलि त्ति अ। दमए दुहए वा वि, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ १४ ॥

अज्जिए पज्जिए वा वि अम्मो माउसिअ त्ति अ।
पिउस्सिए भायणिज्ज त्ति, धूए णत्तुणिअ त्ति अ ॥ ॥ १५ ॥
हले हलित्ति अन्नि त्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुलि त्ति, इत्थिअं नेवमालवे ॥ ॥ १६ ॥

णामधिज्जेण णं बूआ, इत्थीगुत्तेण वा पुणो। जहारिहमभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा ॥ १७ ॥

अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउ त्ति अ। माउलो भाइणिज्ज त्ति, पुत्ते णत्तुणिअ त्ति अ ॥ १८ ॥
हे भो ! हलित्ति अन्नित्ति, भट्टा सामि अ गोमिअ। होला गोल वसुलित्ति, पुरिसं नेवमालवे ॥ १९ ॥
नामधिज्जेण णं बूआ, परिगुत्तेण वा पुणो। जहारिहमभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा ॥ २० ॥
पचिंदिआण पाणाण, एस इत्थी अय पुमं। जाव ण नो विजाणिज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे ॥ २१ ॥
तहेव मणुसं पसुं, पक्खि वा वि सरीसिव। थूले पमेइले वज्झे, पाइमि त्ति अ नो वए ॥ २२ ॥
परिवुड्ढे त्ति ण बूआ, बूआ उवचिए त्ति अ। सजाए पीणिए वावि महाकाय त्ति आलवे ॥ २३ ॥
तहेव गाओ दुज्झाओ, दम्मा गोरहग त्ति अ। वाहिमा रहजोगि त्ति, नेव भासिज्ज पण्णवं ॥ २४ ॥
जुव गवि त्ति ण बूआ, धेणु रसदय त्ति अ। रहस्से महल्लए वा वि, वए संवहणि त्ति अ ॥ २५ ॥
तहेव गतुमुज्जाण, पव्वयाणि वणाणि अ। रुक्खा महल पेहाए, नेव भासिज्ज पण्णव ॥ २६ ॥
अल पासायखमाणं, तोरणाणि गिहाणि अ। फलिहग्गलनावाण, अलं उदगदोणिण ॥ २७ ॥
पीढए चगबेरे अ, नगले मइय सिआ। जतलट्ठी व नामी वा, गडिआ व अल सिआ ॥ २८ ॥
आसण सयण जाण, हुज्जा वा किंचुवस्सए। भूओवघाइणिं भास, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ २९ ॥
तहेव गतुमुज्जाण, पव्वयाणि वणाणि अ। रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासिज्ज पण्णवं ॥ ३० ॥
जाइमता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया। पयायसाला विडिमा, वए दरिसणि त्ति अ ॥ ३१ ॥
तहा फलाइ पक्काइ, पायखज्जाइ नो वए। वेलोइयाइं टालाइ, वेहिमाइ त्ति नो वए ॥ ३२ ॥
असथडा इमे अबा, बहुनिवडिमा फला। वइज्ज बहुसभूआ, भूअरूव त्ति वा पुणो ॥ ३३ ॥
तहेवोसहीओ पक्काओ, नीलिआओ छवीइ अ। लाइमा भज्जिमाउ त्ति, पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥ ३४ ॥
रूढा बहुसभूआ, थिरा ओसढा वि अ। गब्भिआओ पसूआओ, ससाराउ त्ति आलवे ॥ ३५ ॥

तहेव सखडिं नच्चा, किच्च कज्ज ति नो वए।
तेणग वावि वज्झि त्ति, सुतित्थि त्ति अ आवगा ॥ ॥ ३६ ॥

सखडि सखडि बूआ, पणिअट्ठ त्ति तेणग।
बहुसमानि तित्थाणि, आवगाण विआगरे ॥ ॥ ३७ ॥

तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्ज त्ति नो वए।
नावाहिं तारिमाउ त्ति, पाणिपिज्ज त्ति नो वए ॥ ॥ ३८ ॥

बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा। बहुवित्थडोदगा आवि, एव भासिज्ज पण्णव ॥ ३९ ॥
तहेव सावज्ज जोगं, परस्सट्ठा अ निट्ठिअ। कीरमाण ति वा नच्चा, सावज्ज न लवे मुणी ॥ ४० ॥
सुकडि त्ति सुपक्कि त्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे। सुनिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्ज वज्जए मुणी ॥ ४१ ॥

पयत्तपक्कि त्ति व पक्कमालवे, पयत्तछिन्न त्ति व छिन्नमालवे।
पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउअ, पहारगाढि त्ति व गाढमालवे ॥ ॥ ४२ ॥

सव्वुक्कस परग्घ वा, अउल नत्थि एरिस। अविक्किअमवत्तव, अचिअत्त चेव नो वए ॥ ४३ ॥
सव्वमेअ वइस्सामि, सव्वमेअ त्ति नो वए। अणुवीइ सव्व सव्वत्थ, एव भासिज्ज पण्णव ॥ ४४ ॥
सुक्कीअ वा सुविक्कीअ, अकिज्ज किज्जमेव वा। इम गिण्ह इम मुंच, पणिअ नो विआगरे ॥ ४५ ॥

अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा। पणिअट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं विआगरे ॥ ४६ ॥
तहेवासंजयं धीरो, आस एहि करेहि वा। सयं चिट्ठ वयाहित्ति, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ ४७ ॥
बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो। न लवे असाहुं साहुत्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥ ४८ ॥
नाणदंसणसंपन्नं, संजमे अ तवे रयं। एवं गुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे ॥ ४९ ॥
देवाणं मणुआणं च, तिरिआणं च वुग्गहे। अमुगाणं जओ होउ, मा वा होउत्ति नो वए ॥ ५० ॥

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं, खेमं धायं सिवं ति वा।
कया णु हुज्ज एयाणि, मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५१ ॥
तहेव मेहं व नहं व माणवं, न देवदेव त्ति गिरं वइज्जा।
समुच्छिए उन्नए वा पओए, वइज्ज वा वुट्ठ बलाहय त्ति ॥ ५२ ॥
अंतलिक्ख त्ति णं बूआ, गुज्झाणुचरिअ त्ति अ।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतं ति आलवे ॥ ५३ ॥
तहेव सावज्जणुमोअणी गिरा, ओहारिणी जा य परोवघायणी।
से कोह लोह भय हास माणवो, न हासमाणो वि गिरं वइज्जा ॥ ५४ ॥
सुवक्कसुद्धिं समुपेहिआ मुणी, गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मिअं अदुट्ठं अणुवीइ भासए, सयाण मज्झे लहई पसंसणं ॥ ५५ ॥
भासाइ दोसे अ गुणे अ जाणिआ, तीसेअ दुट्ठे परिवज्जए सया।
छसु संजए सामणिए सया जए, वइज्ज बुद्धे हिअमाणुलोमिअं ॥ ५६ ॥
परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए, चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स निद्धुणे धुत्तमलं पुरेकडं, आराहए लोगमिणं तहा परं ॥ ५७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ सुवक्कसुद्धीनाम सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

॥ अह आयारपणिही अट्ठममज्झयणं ॥

आयारपणिहिं लद्धुं, जहा कायव्व भिक्खुणा । तं मे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
पुढविदगअगणिमारुअ, तणरुक्खस्स बीयगा । तसा अ पाणा जीव त्ति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥
तेसिं अच्छणजोएण, निच्चं होअव्वयं सिआ । मणसा कायवक्केण, एवं हवइ संजए ॥ ३ ॥
पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, नेव भिंदे न संलिहे । तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
सुद्धपुढवीं न निसीए, ससरक्खम्मि अ आसणे । पमज्जित्तु निसीइज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ॥ ५ ॥
सीओदगं न सेविज्जा, सिलावुट्ठं हिमाणि अ । उसिणोदगं तत्तफासुअं, पडिगाहिज्ज संजए ॥ ६ ॥
उदउल्लं अप्पणो कायं, नेव पुंछे न संलिहे । समुप्पेह तहाभूअं, नो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
इंगालं अगणिं अच्चिं, अलायं वा सजोइअं । न उंजिज्जा न घट्टिज्जा, नो णं निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
तालिअंटेण पत्तेण, साहाए विहुयणेण वा । न वीइज्ज अप्पणो कायं, बाहिरं वा वि पुग्गलं ॥ ९ ॥
तणरुक्खं न छिंदिज्जा, फलं मूलं च कस्सइ । आमगं विविहं बीअं, मणसा वि ण पत्थए ॥ १० ॥
गहणेसु न चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा । उदगम्मि तहा निच्चं, उत्तिंगपणगेसु वा ॥ ११ ॥
तसे पाणे न हिंसिज्जा, वाया अदुव कम्मुणा । उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविहं जगं ॥ १२ ॥
अट्ठ सुहुमाइं पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए । दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥ १३ ॥
कयराइं अट्ठ सुहुमाइं, जाइं पुच्छिज्ज संजए । इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खिज्ज विअक्खणो ॥ १४ ॥
सिणेहं पुप्फसुहुमं च, पाणुत्तिंगं तहेव य । पणगं बीअ हरिअं च, अंडसुहुमं च अट्ठमं ॥ १५ ॥
एवमेआणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए । अप्पमत्तो जए निच्चं, सव्विंदिअसमाहिए ॥ १६ ॥
धुवं च पडिलेहिज्जा, जोगसा पायकंबलं । सिज्जमुच्चारभूमिं च, संथारं अदुवासणं ॥ १७ ॥
उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाणजल्लिअं । फासुअं पडिलेहित्ता, परिट्ठाविज्ज संजए ॥ १८ ॥
पविसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोअणस्स वा । जयं चिट्ठे मिअं भासे, न य रूवेसु मणं करे ॥ १९ ॥
बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ । न य दिट्ठं सुअं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥ २० ॥
सुअं वा जइ वा दिट्ठं, न लविज्जोवघाइअं । न य केण उवाएण, गिहिजोगं समायरे ॥ २१ ॥
निट्ठाणं रसनीज्जूढं, भद्दगं पावगं ति वा । पुट्ठो वावि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निद्दिसे ॥ २२ ॥
न य भोअणम्मि गिद्धो, चरे उंछं अयंपिरो । अफासुअं न भुंजीज्जा, कीअमुद्देसिआहडं ॥ २३ ॥
संनिहिं च न कुव्विज्जा, अणुमायं पि संजए । मुहाजीवी असंबद्धे, हविज्ज जगनिस्सिए ॥ २४ ॥
लूहवित्ति सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिआ । आसुरत्तं न गच्छिज्जा, सुच्चा णं जिणसासणं ॥ २५ ॥
कण्णसुक्खेहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए । दारुणं कक्कसं फासं, कारण अहिआसए ॥ २६ ॥
खुहं पिवासं दुस्सिज्जं, सीउण्हं अरइं भयं । अहिआसे अव्वहिओ देहदुक्खं महाफलं ॥ २७ ॥
अत्थं गयम्मि आइच्चे, पुरत्था अ अणुग्गए । आहारमाइअं सव्वं, मणसा वि न पत्थए ॥ २८ ॥
अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी, मिआसणे । हविज्ज उअरे दंते, थोवं लद्धुं न खिंसए ॥ २९ ॥
न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्कसे । सुअलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा तवस्सि बुद्धिए ॥ ३० ॥

से जाणमजाण वा, कट्टु आहम्मिअं पयं । संवरे खिप्पमप्पाणं, बीअं तं न समायरे ॥ ३१ ॥
अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे । सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए ॥ ३२ ॥
अमोहं वयणं कुज्जा, आयरीअस्स महप्पणो । तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ३३ ॥
अधुवं जीविअं नच्चा, सिद्धिमग्गं विआणिआ । विणिअट्टिज्ज भोगेसु, आउं परिमिअमप्पणो ॥ ३४ ॥
बलं थामं च पेहाए, सद्धामारुग्गमप्पणो । खित्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं निजुंजए ॥ ३५ ॥
जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ । जाविंदिआ न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥ ३६ ॥
कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं । वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हिअमप्पणो ॥ ३७ ॥
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो । माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो ॥ ३८ ॥
उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे । मायमज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥ ३९ ॥

कोहो अ माणो अ अणिग्गहीआ, माया अ लोभो अ पवड्ढमाणा ।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥ ॥ ४० ॥
रायणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलयं सययं न हावइज्जा ।
कुम्मु व्व अल्लीणपलीणगुत्तो, परक्कमिज्जा तवसंजमम्मि ॥ ॥ ४१ ॥

निद्दं च न बहु मन्निज्जा, सप्पहासं विवज्जए । मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया ॥ ४२ ॥
जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अनलसो धुवं । जुत्तो अ समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥ ४३ ॥
इहलोगपारत्तहिअं, जेण गच्छइ सुग्गइं । बहुस्सुअं पज्जुवासिज्जा, पुच्छिज्जत्थविणिच्छअं ॥ ४४ ॥
हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए । अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ । न य ऊरुं समासिज्ज, चिट्ठिज्जा गुरुणंतिए ॥ ४६ ॥
अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अंतरा । पिट्ठिमंसं न खाइज्जा, मायामोसं विवज्जए ॥ ४७ ॥

अप्पत्तिअं जेण सिआ, आसु कुप्पिज्ज वा परो ।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहिअगामिणिं ॥ ॥ ४८ ॥

दिट्ठं मिअं असंदिद्धं, पडिपुन्नं विअं जिअं । अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ॥ ४९ ॥
आयारपन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं । वायविक्खलिअं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥ ५० ॥
नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं । गिहिणो तं न आइक्खे, भूआहिगरणं पयं ॥ ५१ ॥
अन्नट्ठं पगडं लयणं, भइज्ज सयणासणं । उच्चारभूमिसंपन्नं, इत्थीपसुविवज्जिअं ॥ ५२ ॥
विवित्ता अ भवे सिज्जा, नारीणं न लवे कहं । गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ॥ ५३ ॥
जहा कुक्कुडपोअस्स, निच्चं कुललओ भयं । एवं खु बंभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं ॥ ५४ ॥
चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुअलंकिअं । भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ ५५ ॥
हत्थपायपडिच्छिन्नं, कन्ननासविगप्पिअं । अवि वाससयं नारिं, बंभयारी विवज्जए ॥ ५६ ॥
विभूसा इत्थिसंसग्गी, पणीअं रसभोअणं । नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥ ५७ ॥
अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लविअपेहिअं । इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं ॥ ५८ ॥
विसएसु मणुन्नेसु, पेमं नाभिनिवेसए । अणिच्चं तेसिं विन्नाय, परिणामं पुग्गलाण उ ॥ ५९ ॥

पोग्गलाण परिणामं, तेसिं नच्चा जहा तहा। विणीअतिण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥ ६० ॥
जाइ सद्धाइ निक्खतो, परिआयट्ठाणमुत्तमं। तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरियसंमए ॥ ६१ ॥

तव चिम मजमजोगय च, सज्झायजोग च सया अहिट्ठ ए।
सूरे व सेणाइ सम्मत्तमाउहे, अलमप्पणो होइ अल परेसिं ॥ ६२ ॥
सज्झायसुज्झाणरयस्स ताइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झई ज सि मलं पुरेकड, समीरिअ रुप्पमल व जोइणा ॥ ६३ ॥
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए, सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए, कसिणब्भपुडावगमे व चंदिम ॥ ६४ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ आयारपणिही णाम अट्ठममज्झयण समत्त ॥ ८ ॥

॥ अह विणयसमाही णाम नवममज्झयणं ॥

थभा व कोहा व मयप्पमाया, गुरुस्सगासे विणय न सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो, फल व कीअस्स वहाय होइ ॥ १ ॥
जे आवि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता, डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा।
हीलंति मिच्छ पडिवज्जमाणा, करंति आसायण ते गुरूण ॥ २ ॥
पगईए मदा वि भवंति एगे, डहरा वि अ जे सुअबुद्धोववेआ।
आयारमंता गुणसुट्ठिअप्पा, जे हीलिआ सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
जे आवि नाग डहर ति नच्चा, आसायए से अहिआय होइ।
एवायरियअ पि हु हीलयंतो, निअच्छई जाइपह खु मंदो (दे) ॥ ४ ॥
आसीविसो वावि पर सुरुट्ठो, किं जीवनासाउ पर न कुज्जा।
आयरिआया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो ॥ ५ ॥
जो पावग जलिअमवक्कमिज्जा, आसीविस वा वि हु कोवइज्जा।
जो वा विस खायइ जीविअट्ठी, एसोवमासायणया गुरूण ॥ ६ ॥
सिआ हु से पावय नो डहिज्जा, आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिआ विस हालहलं न मारे, न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥
जो पव्वय सिरसा भित्तुमिच्छे, सुत्त व सीह पडिबोहइज्जा।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहार, एसोवमासायणया गुरूण ॥ ८ ॥
सिआ हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिआ हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिआ न भिंदिज्ज व सत्तिअग्ग, न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥
आयरिअपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा ॥ १० ॥
जहाहिअग्गी जलणं नमसे, नाणाहुईमतपयाभिसित्त।

से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मिअं पयं। संवरे खिप्पमप्पाणं, बीअं तं न समायरे ॥ ३१ ॥
अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे। सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए ॥ ३२ ॥
अमोहं वयणं कुज्जा, आयरिअस्स महप्पणो। तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ३३ ॥
अधुवं जीविअं नच्चा, सिद्धिमग्गं विआणिआ। विणिअट्टिज्ज भोगेसु, आउं परिमिअमप्पणो ॥ ३४ ॥
बलं थामं च पेहाए, सद्धामारुग्गमप्पणो। खित्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं निजुंजए ॥ ३५ ॥
जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ। जाविंदिआ न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥ ३६ ॥
कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं। वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हिअमप्पणो ॥ ३७ ॥
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो। माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो ॥ ३८ ॥
उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे। मायमज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥ ३९ ॥

कोहो अ माणो अ अणिग्गहीआ, माया अ लोभो अ पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥ ॥ ४० ॥
रायणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलयं सययं न हावइज्जा।
कुम्मुव्व अल्लीणपलीणगुत्तो, परक्कमिज्जा तवसंजमंमि ॥ ॥ ४१ ॥

निद्दं च न बहु मन्निज्जा, सप्पहासं विवज्जए। मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायंमि रओ सया ॥ ४२ ॥
जोगं च समणधम्मंमि, जुंजे अनलसो धुवं। जुत्तो अ समणधम्मंमि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥ ४३ ॥
इहलोगपारत्तहिअं, जेणं गच्छइ सुग्गइं। बहुस्सुअं पज्जुवासिज्जा, पुच्छिज्जत्थविणिच्छयं ॥ ४४ ॥
हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए। अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ। न य ऊरुं समासिज्ज, चिट्ठिज्जा गुरुणंतिए ॥ ४६ ॥
अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अंतरा। पिट्ठिमंसं न खाइज्जा, मायामोसं विवज्जए ॥ ४७ ॥

अप्पत्तिअं जेण सिआ, आसु कुप्पिज्ज वा परो।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहिअगामिणिं ॥ ॥ ४८ ॥

दिट्ठं मिअं असंदिद्धं, पडिपुन्नं विअं जिअं। अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ॥ ४९ ॥
आयारपन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं। वायविक्खलिअं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥ ५० ॥
नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं। गिहिणो तं न आइक्खे, भूआहिगरणं पयं ॥ ५१ ॥
अन्नट्ठं पगडं लयणं, भइज्ज सयणासणं। उच्चारभूमिसंपन्नं, इत्थीपसुविवज्जिअं ॥ ५२ ॥
विवित्ता अ भवे सिज्जा, नारीणं न लवे कहं। गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ॥ ५३ ॥
जहा कुक्कुडपोअस्स, निच्चं कुललओ भयं। एवं खु बंभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं ॥ ५४ ॥
चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुअलंकिअं। भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ ५५ ॥
हत्थपायपडिच्छिन्नं, कन्ननासविगप्पिअं। अवि वाससयं नारिं, बंभयारी विवज्जए ॥ ५६ ॥
विभूसा इत्थिसंसग्गी, पणीअं रसभोअणं। नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥ ५७ ॥
अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लविअपेहिअं। इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं ॥ ५८ ॥
विसएसु मणुन्नेसु, पेमं नाभिनिवेसए। अणिच्चं तेसिं विन्नाय, परिणामं पुग्गलाण उ ॥ ५९ ॥

पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं नच्चा जहा तहा। विणीअतिण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥ ६० ॥
जाइ सद्धाइ निक्खंतो, परिआयट्ठाणमुत्तमं। तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरियसंमए ॥ ६१ ॥
तवं चिमं संजमजोगयं च, सज्झायजोगं च सया अहिट्ठिए।
सूरे व सेणाइ सम्मत्तमाउहे, अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥ ६२ ॥
सज्झायसुज्झाणरयस्स ताइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झई जं सि मलं पुरेकडं, समीरिअं रुप्पमलं व जोइणा ॥ ६३ ॥
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए, सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए, कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमे ॥ ६४ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ आयारपणिही णाम अट्ठममज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

॥ अह विणयसमाही णाम नवममज्झयणं ॥

थंभा व कोहा व मयप्पमाया, गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो, फलं व कीअस्स वहाय होइ ॥ १ ॥
जे आवि मंदि त्ति गुरु विइत्ता, डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा, करंति आसायण ते गुरूणं ॥ २ ॥
पगईए मंदा वि भवंति एगे, डहरा वि अ जे सुअबुद्धोववेआ।
आयारमंता गुणसुट्ठिअप्पा, जे हीलिआ सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
जे आवि नागं डहरं ति नच्चा, आसायए से अहिआय होइ।
एवायरिअं पि हु हीलयंतो, निअच्छई जाइपहं खु मंदो (ढे) ॥ ४ ॥
आसीविसो वावि परं सुरुट्ठो, किं जीवनासाउ परं न कुज्जा।
आयरिआपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो ॥ ५ ॥
जो पावगं जलिअमवक्कमिज्जा, आसीविसं वा वि हु कोवइज्जा।
जो वा विसं खायइ जीविअट्ठी, एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ६ ॥
सिआ हु से पावय नो डहिज्जा, आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिआ विसं हालहलं न मारे, न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥
जो पव्वयं सिरसा भित्तुमिच्छे, सुत्तं व सीहं पडिबोहइज्जा।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं, एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ८ ॥
सिआ हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिआ हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिआ न भिंदिज्ज व सत्तिअग्गं, न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥
आयरिअपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा ॥ १० ॥
जहाहिअग्गी जलणं नमंसे, नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं।

एवायरिअं उवचिट्ठइज्जा, अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥ ११ ॥
जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे, तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ, कायग्गिरा भो मणसा अ निच्चं ॥ १२ ॥
लज्जा दया संजमबंभचेरं, कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति, ते हं गुरू सययं पूअयामि ॥ १३ ॥
जहा निसंते तवणच्चिमाली, पभासई केवलभारहं तु ।
एवायरिओ सुअसीलबुद्धिए, विरायई सुरमज्झे व इंदो ॥ १४ ॥
जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो, नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥ १५ ॥
महागरा आयरिआ महेसी, समाहिजोगे सुअसीलबुद्धिए ।
संपाविउकामे अणुत्तराइं, आराहए तोसइ धम्मकामी ॥ १६ ॥
सुच्चा ण मेहावी सुभासिआइं, सुस्सूसए आयरिअप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावई सिद्धिमणुत्तरं ति बेमि ॥ १७ ॥

॥ इअ विणयसमाहिज्झयणे पढमो उद्देसो समत्तो ॥

मूलाउ खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाउ पच्छा समुविंति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ सि (से) पुप्फं च फलं रसो अ ॥ ॥ १ ॥
एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो अ से मुक्खो, जेण कित्तिं सुअं सिग्घं, नीसेसं चाभिगच्छइ ॥ २ ॥
जे अ चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई निअडी सढे । वुज्झइ से अविणीअप्पा, कट्ठं सोअगयं जहा ॥ ३ ॥
विणयंमि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पई नरो । दिव्वं सो सिरिमिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥
तहेव अविणीअप्पा, उववज्झा हया गया । दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिआ ॥ ५ ॥
तहेव सुविणीअप्पा, उववज्झा हया गया । दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
तहेव अविणीअप्पा, लोगंसि नरनारिओ । दीसंति दुहमेहंता, छाया ते विगलिंदिआ ॥ ७ ॥
दंडसत्थपरिज्जुण्णा, असब्भवयणेहि अ । कलुणा विवन्नछंदा, खुप्पिवासपरिग्गया ॥ ८ ॥
तहेव सुविणीअप्पा, लोगंसि नरनारिओ । दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
तहेव अविणीअप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा । दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिआ ॥ १० ॥
तहेव सुविणीअप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा । दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
जे आयरिअउवज्झायाणं, सुस्सूसावयणंकरे । तेसिं सिक्खा पवड्ढंति, जलसित्ता इव पायवा ॥ १२ ॥
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा णेउणिआणि अ । गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा ॥ १३ ॥
जेण बंधं वहं घोरं, परिआवं च दारुणं । सिक्खमाणा निअच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिआ ॥ १४ ॥
ते वि तं गुरुं पूअंति, तस्स सिप्पस्स कारणा । सक्कारंति नमंसंति, तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥ १५ ॥
किं पुण जे सुअग्गाही, अणंतहिअकामए । आयरिआ जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए ॥ १६ ॥

नीअ सिज्ज गइ ठाण, नीअ च आसणाणि अ । नीअ च पाए वंदिज्जा, नीअं कुज्जा अ अंजलिं ॥ १७ ॥
संघट्टइत्ता काएण, तहा उवहिणामवि । खमेह अवराह मे, वइज्ज न पुणु त्ति अ ॥ १८ ॥
दुग्गओ वा पओएण, चोइओ वहइ रह । एव दुब्बुद्धि किच्चाण, वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ ॥ १९ ॥
आलवंते लवते वा, न निसिज्जाए पडिस्सुणे । मुत्तूण आसण धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सणे ॥ २० ॥
कालं छंदोवयार च, पडिलेहित्ताण हेउहिं । तेण तेण उवाएण, त तं सपडिवायए ॥ २१ ॥
विवत्ति अविणीअस्स, सपत्ती विणिअस्स य । जस्सेय दुहओ नायं, सिक्ख से अभिगच्छइ ॥ २२ ॥

जे आवि चडे मइइड्ढिगारवे, पिसुणे नरे साहसहीणपेसणे ।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए,असविभागी न हु तस्स मुक्खो ॥ ॥ २३ ॥
निद्देसवित्ती पुण जे गुरूण, सुअत्थधम्मा विणयम्मि कोविआ ।
तरित्तु ते ओघमिण दुरुत्तर, खवित्तु कम्म गइमुत्तम गया ॥ ॥ २४ ॥

त्ति बेमि इअ विणयसमाहिणामज्झयणे बीओ उद्देसो समत्तो ॥

आयरिअ(अ) अग्गिमिवाहिअग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा ।
आलोइअ इंगिअमेव नच्चा, जो छंदमाराहयई स पुज्जो ॥ १ ॥
आयारमट्ठा विणय पउंजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्क ।
जहोवइट्ठ अभिकंखमाणो, गुरु च नासायइ जे स पुज्जो ॥ २ ॥
रायणिएसु विणय पउंजे डहरा वि अ जे परिआयजिट्ठा ।
नीअत्तणे वट्टइ सच्चवई, ओवायव वक्कर स पुज्जो ॥ ३ ॥
अन्नायउंछ चरई विसुद्ध, जवणट्ठया समुआण च निच्चं ।
अलद्धुअ नो परिदेवइज्जा, लद्धु न विकत्थई स पुज्जो ॥ ४ ॥
सथारसिज्जासणभत्तपाणे, अप्पिच्छया अइलाभे वि सते ।
जो एवमप्पाणभितोसइज्जा, सतोसपाहन्नरए स पुज्जो ॥ ५ ॥
सक्का सहेउ आसाइ कटया, अओमया उच्छहया नरेण ।
अणासए जो उ सहिज्ज कटए, वईमए कन्नसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥
मुहुत्तदुक्खा उ हवति कंटया, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥
समावयता वयणाभिघाया, कन्नगया दुम्मणिअं जणति ।
धम्मु त्ति किच्चा परमग्गसूरे, जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥
अवण्णवाय च परम्मुहस्स, पच्चक्खओ पडिणीअ च भास ।
ओहारणिं अप्पिअकारणिं च, भास न भासिज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥
अलोलुए अक्कुहए अमाई, अपिसुणे आवि अदीणवित्ती ।
नो भावए नो वि अ भाविअप्पा, अकोउहल्ले अ सया स पुज्जो ॥ १० ॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुंचऽसाहू।
विआणिआ अप्पगमप्पएणं, जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥ ११ ॥
तहेव डहरं च महल्लगं वा, इत्थी पुमं पव्वइअं गिहिं वा।
नो हीलए नो वि अ खिंसइज्जा, थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥ १२ ॥
जे माणिआ सययं माणयंति, जत्तेण कन्नं व निवेसयंति।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥ १३ ॥
तेसिं गुरूणं गुणसायराणं, सुच्चाण मेहावि सुभासिआइं।
चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो, चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥ १४ ॥
गुरुमिह सययं पडिअरिअ मुणी, जिणमयनिउणे अभिगमकुसले।
धुणिअ रयमलं पुरेकडं, भासुरमउलं गइं वइ (गय) ॥ १५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ विणयसमाहीए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

सुअं मे आउसं-तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता। कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता। इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता। तंजहा-विणयसमाही, सुअसमाही, तवसमाही, आयारसमाही। "विणए सुए अ तवे, आयारे निच्च पंडिआ। अभिरामयंति अप्पाणं, जे भवंति जिइंदिआ" चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ। तंजहा-अणुसासिज्जंतो, सुस्सूसइ। सम्मं पडिवज्जइ। वेयमाराहइ। न य भवइ अत्तसंपग्गहिए। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो॥ "पेहेइ हिआणुसासणं, सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठिए। न य माणमएण मज्जइ, विणयसमाहिआययट्ठिए" ॥ २ ॥ चउव्विहा खलु सुअसमाही भवइ। तंजहा-सुअं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइअव्वं भवइ। एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ। अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ। ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो॥ "नाणमेगग्गचित्तो अ, ठिओ अ ठावई परं। सुआणि अ अहिज्जित्ता, रओ सुअसमाहिए" ॥ ३ ॥ चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ। तंजहा-नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो॥ "विविहगुणतवोरए, निच्चं भवइ निरासए निज्जरट्ठिए। तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए" ॥ ४ ॥ चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ। तंजहा-नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठिज्जा। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो। "जिणवयणरए अतिंतिणे, पडिपुण्णाययमाययट्ठिए। आयारसमाहिसंवुडे, भवइ अ दंते भावसंधए" ॥ ५ ॥ अभिगम चउरो समाहिओ, सुविसुद्धो सुसमाहिअप्पओ। विउलहिअ सुहावहं पुणो, कुव्वइ अ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥ जाइमरणाओ मुच्चइ इत्थंथं

च चएइ सवसो। सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥ ७ ॥
त्ति बेमि॥ इअ विणयसमाही नाम चउत्थो उद्देसो नवममज्झयण समत्तं ॥ ९ ॥

॥ अह भिक्खू नामं दसममज्झयण ॥

तिक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे, निच्च चित्तसमाहिओ हविज्जा।
इत्थीण वसं न आवि गच्छे, वंत नो पडिआयइ जे स भिक्खू ॥ १ ॥
पुढविं न खणे न खणावए, सीओदग न पिए न पिआवए।
अगणि सत्थं जहा सुनिसिअं, तं न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥ २ ॥
अनिलेण न वीए न वीयावए, हरियाणि न छिंदे न छिंदावए।
बीआणि सया विवज्जयंतो, सचित्त नाहारए जे स भिक्खू ॥ ३ ॥
वहण तसथावराण होइ, पुढवितणकट्ठनिस्सिआण।
तम्हा उद्देसिअ न भुंजे नो वि, पए न पयावए जे स भिक्खू ॥ ४ ॥
रोइअ नायपुत्तवयणे, अत्तसमे मन्निज्ज छप्पि काए।
पंच य फासे महव्वयाइ, पंचासवसंवरे जे स भिक्खू ॥ ५ ॥
चत्तारि वमे सया कसाए, धुवजोगी हविज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जायरूवरयए, गिहिजोग परिवज्जए जे स भिक्खू ॥ ६ ॥
सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे, अत्थि हु नाणे तवे संजमे अ।
तवसा धुणइ पुराणपावग, मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥ ७ ॥
तहेव असण पाणग वा, विविह खाइमसाइम लभित्ता।
होही अट्ठो सुए परे वा, त न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥ ८ ॥
तहेव असण पाणग वा, विविह खाइमसाइम लभित्ता।
छंदिअ साहम्मिआण भुंजे, भुच्चा सज्झायरए जे स भिक्खू ॥ ९ ॥
न य वुग्गहिअ कह कहिज्जा, न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते।
संजमधुवजोगजुत्ते, उवसंते अविहेडए जे स भिक्खू ॥ १० ॥
जो सहइ हु गामकंटए, अक्कोसपहारतज्जणाओ अ।
भयभेरवसद्दसप्पहासे, समसुहदुक्खसहे अ जे स भिक्खू ॥ ११ ॥
पडिम पडिवज्जिआ मसाणे, नो भायए भयभेरवाइं दिस्स।
विविहगुणतवोरए अ निच्चं, न सरीर चाभिकंखए जे स भिक्खू ॥ १२ ॥
असइं वोसिट्ठचत्तदेहे, अक्कुट्ठे व हए लूसिए वा।
पुढविसमे मुणी हविज्जा अनिआणे अकोउहल्ले जे स भिक्खू ॥ १३ ॥
अभिभूअ काएण परीसहाइ, समुद्धरे जाइपहाउ अप्पय।
विइत्तु जाईमरण महब्भय, तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ॥ १४ ॥

हत्थसंजए पायसंजए, वायसंजए संजइंदिए।
अज्झप्परए सुसमाहिअप्पा, सुत्तत्थं च विआणइ जे स भिक्खू ॥ १५ ॥
उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे, अन्नायउंछं पुलनिप्पुलाए।
कयविक्कयसंनिहिओ विरए, सव्वसंगावगए अ जे स भिक्खू ॥ १६ ॥
अलोल(ल्लु)भिक्खू न रसेसु गिद्धे, उंछं चरे जीविअनाभिकंखी।
इड्ढिं च सक्कारण पूअणं च, चए ठिअप्पा अणिहे जे स भिक्खू ॥ १७ ॥
न परं वइज्जासि अयं कुसीले, जेण च कुप्पिज्ज न तं वइज्जा।
जाणिअ पत्तेअं पुण्णपावं अत्ताण न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥ १८ ॥
न जाइमत्ते न य रूवमत्ते, न लाभमत्ते न सुएण मत्ते।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाणरए जे स भिक्खू ॥ १९ ॥
पवेअए अज्जपयं महामुणी, धम्मे ठिओ ठावयई परं पि।
निक्खम्म वज्जिज्ज कुसीललिंगं, न आवि हासंकुहए जे स भिक्खू ॥ २० ॥
तं देहवासं असुइं असासयं, सया चए निच्चहिअट्ठिअप्पा।
छिंदित्तु जाइमरणस्स बंधणं, उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥ २१ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ भिक्खु नाम दसमज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह रइवक्का पढमा चूलिआ ॥

इह खलु भो पव्वइएण उप्पन्नदुक्खेण संजमे अरइसमावन्नचित्तेणं ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएण चेव हयरस्सिगयंकुसपोयपडागाभूआइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहिअव्वाइं भवंति। तंजहा ह भो! दुस्समाइ दुप्पजीवी ॥ १ ॥ लहुसगा इत्तरिआ गिहीणं कामभोगा ॥ २ ॥ भुज्जो अ साय-बहुला मणुस्सा ॥ ३ ॥ इमे अ मे दुक्खे न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ ॥ ४ ॥ ओमजणपुरक्कारे ॥५॥ वंतस्स य पडिआयणं ॥ ६ ॥ अहरगइवासोवसंपया ॥ ७ ॥ दुल्लहे खलु भो! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं ॥८॥ आयंके से वहाय होइ ॥९॥ संकप्पे से वहाय होइ ॥१०॥ सोवक्केसे गिहवासे, निरुवक्केसे परिआए ॥ ११ ॥ बंधे गिहवासे, मुक्खे परिआए ॥१२॥ सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परिआए ॥ १३ ॥ बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥ १४ ॥ पत्तेअं पुण्णपावं ॥ १५ ॥ अणिच्चे खलु भो! मणुआण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले ॥१६॥ बहुं च खलु भो! पावं कम्मं पगडं ॥ १७ ॥ पावाणं च खलु भो! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं वेइत्ता मुक्खो नत्थि अवेइत्ता तवसा वा झोसइत्ता ॥ १८ ॥ अट्ठारसमं पयं भवइ, भवइ अ इत्थ सिलोगो —

जया य चयई धम्मं, अणज्जो भोगकारणा। से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नावबुज्झइ ॥ १ ॥
जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं। सव्वधम्मपरिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥
जया अ वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो। देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥
जया अ पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो, राया व रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया अ माणिमो होइ, पच्छाहोइ अमाणिमो । सिट्ठिव कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥
जया अ थेरओ होइ, समइक्कतजुव्वणो । मच्छुव्व गलिं गलित्ता, स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥
जया अ कुकुडुंबस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ । हत्थी व बंधणे बद्धो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥
पुत्तदारपरिकिन्नो, मोहसंताणसंतओ । पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
अज्ज आह गणी हुंतो, भाविअप्पा बहुस्सुओ । जइ हरमंतो परिआए, सामन्ने जिणदेसिए ॥ ९ ॥
देवलोगसमाणो अ, परिआओ महेसिणं । रयाणं, अरयाणं च, महानरयसारिसो ॥ १० ॥

अमरोवमं जाणिअ सुक्खमुत्तमं, रयाण परिआए तहारयाणं ।
निरओवमं जाणिअ दुक्खमुत्तमं, रमिज्ज तम्हा परिआयपंडिए ॥ ११ ॥
धम्माउ भट्ठं सिरिओववेयं, जन्नग्गि विज्झायमिवप्पतेअं ।
हीलंति णं दुव्विहिअं कुसीला, दाढुद्धिअं घोरविसं व नागं ॥ १२ ॥
इहेव धम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामधिज्जं च पिहुज्जणम्मि ।
चुअस्स धम्माउ अहम्मसेविणो, संभिन्नवित्तस्स य हिट्ठओ गई ॥ १३ ॥
भुंजित्तु भोगाइ पसज्झ चेअसा, तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं ।
गइं च गच्छे अणहिज्झिअं दुहं, बोही अ से नो सुलहा पुणो पुणो ॥ १४ ॥
इमस्स ता नेरइअस्स जंतुणो, दुहोवणीअस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं, किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ॥ १५ ॥
न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ, असासया भोगपिवास जंतुणो ।
न चे सरीरेण इमेण विस्सइ, अविस्सई जीविअपज्जवेण मे ॥ १६ ॥
जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छिओ, चइज्ज देहं न हु धम्मसासणं ।
तं तारिसं नो पइलिंति इंदिआ, उविंति वाया व सुदंसणं गिरिं ॥ १७ ॥
इच्चेव संपस्सिअ बुद्धिमं नरो, आयं उवायं विविहं विआणिआ ।
काएण वाया अदु माणसेणं तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि ॥ १८ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ रइवक्का पढमा चूला समत्ता ॥ १ ॥

॥ अह विवित्तचरिया बीआ चूलिआ ॥

चूलिअं तु पवक्खामि, सुअं केवलिभासिअं । जं सुणित्तु सुपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥
अणुसोअपट्ठिए बहुजणम्मि पडिसोअलद्धलक्खेणं । पडिसोअमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेणं ॥ २ ॥
अणुसोअसुहो लोओ,पडिसोओ आसवो सुविहिआणं।अणुसोओ संसारो,पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥
तम्हा आयारपरक्कमेण संवरसमाहिबहुलेणं । चरिआ गुणा अ नियमा अ, हुंति साहूण दट्ठव्वा ॥ ४ ॥

अणिएअवासो समुआणचरिआ, अन्नायउंछं पयरिक्कया अ ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा अ, विहारचरिआ इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥
आइन्नओमाणविवज्जणा अ, ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे ।

संमट्ठकप्पेण चरिज्ज भिक्खू, तज्जायसंसट्ठ जई जइज्जा ॥ ६ ॥
अमज्जमंसासि अमच्छरीआ, अभिक्खणं निव्विगइं गया अ।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी, सज्झायजोगे पयओ हविज्जा ॥ ७ ॥
न पडिन्नविज्जा सयणासणाइं, सिज्जं निसिज्जं तह भत्तपाणं।
गामे कुले वा नगरे व देसे, ममत्तभावं न कहिं पि कुज्जा ॥ ८ ॥
गिहिणो वेआवडिअं न कुज्जा, अभिवायणं वंदणपूअणं वा।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसिज्जा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥
न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहिअं वा गुणओ समं वा।
इक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ १० ॥
संवच्छरं वा वि परं पमाणं, बीअं च वासं न तहिं वसिज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥ ११ ॥
जो पुव्वरत्तावररत्तकाले, संपिक्खए अप्पगमप्पएणं।
किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥ १२ ॥
किं मे परो पासइ किं च अप्पा, किं वाहं खलिअं न विवज्जयामि।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो, अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥ १३ ॥
जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं।
तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा, आइन्नओ खिप्पमिव क्खलीणं ॥ १४ ॥
जस्सेरिसा जोग जिइंदिअस्स, धिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी, सो जीअइ संजमजीविएणं ॥ १५ ॥
अप्पा खलु सययं रक्खिअव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ, सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥ १६ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ विवित्तचरिआ बीआ चूला समत्ता ॥

॥ इअ दसवेआलिअं सुत्त समत्तं ॥

॥ श्रीमद्देवऋद्धिगणिक्षमाश्रमणप्रणीत ॥

श्री नन्दीसूत्र मूलपाठः ।

जयइ जग जीव जोणी वियाणओ । जगगुरू जगाणदो ॥ जगणाहो जगबधू, जयइ जगप्पियामहोभयव ॥ १ ॥ जयइ सुआण पभवो । तित्थयराण अपच्छिमो जयइ ॥ जयइ गुरूलोगाण । जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥ भद्द सव जगुज्जोयगस्स । भद्द जिणस्स वीरस्स ॥ भद्द सुरासुरनमंसियस्स । भद्द धुयरयस्स ॥ ३ ॥ गुणभवणगहण । सुयरयण भरियदसणविसुद्धरत्थागा सघ नगर भद्द ते । अखड चारित्तपागारा ॥ ४ ॥ सजम तव तुवारयस्स । नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥ अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया सघचक्कस्स ॥ ५ ॥ भद्द सील पडागूसियस्स । तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ संघरहस्स भगवओ । सज्झाय सुनदिघोसस्स ॥ ६ ॥ कम्मरय जलोह विणिग्गयस्स । सुयरयण दीहनालस्स ॥ पच महव्वय थिरकन्नियस्स । गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥ सावग जण महुअरि परिवुडस्स । जिण सूर तेय बुद्धस्स ॥ सघपउमस्स भद्द । समण गण सहस्स पत्तस्स ॥ ८ ॥ तव सजम मयलछण । अकिरिय राहुमुह दुद्धरिसनिच्चं । जय संघ चद । निम्मल सम्मत्त विसुद्ध जोण्हागा ॥ ९ ॥ पर तित्थिय गह पह नासगस्स । तवतेय दित्त लेसस्स ॥ नाणु ज्जोयस्स जए भद्द दम सघ सूरस्स ॥ १० ॥ भद्द धिइ वेला परिगयस्स । सज्झाय जोग मगरस्स ॥ अक्खोहस्स भगवओ । सघ समुद्दस्स रुदस्स ॥ ११ ॥ सम्म द्दसण वर वइर दढ रूढ गाढावगाढ पेढस्स ॥ धम्म वररयण मडिय चामीयर मेहलागस्स ॥ १२ ॥ निय मूसिय कणय सिलायलुज्जल जलत चित्तकूडस्स ॥ नंदण वण मणहर सुरभि सील गधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥ जीवदया सुदर कद रुरिय मुणिवर मइद इन्नस्स ॥ हेउ सय धाउ पगलत रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥ १४ ॥ सवर वर जल पगलिय उज्झर पविराय माणहारस्स ॥ सावग जण पउर रवंत मोर नच्चत कुहरस्स ॥ १५ ॥ विणय नय पवर मुणिवर फुरत विज्जुज्जलत सिहरस्स । विविह गुण कप्प रुक्खग फलभर कुसुमाउल वणस्स ॥ १६ ॥ नाण वर रयण दिप्पत कत वेरुलिय विमल चूलस्स ॥ वदामि विणय पणओ सघ महामदर गिरिस्स ॥ १७ ॥ गुण रयणुज्जल कडय सील सुगधि तव मडिउद्देस ॥ सुयबारगंगसिहर सघ महामदर वदे ॥ १८ ॥ नगर रह चक्क पउमे चंदे सूरे समुद्द मेरुम्मि ॥ जो उवमिज्जइ सयय त सघगुणायर वंदे ॥ १९ ॥ वदे उसभ अजिय सभव मभिनदण सुमइ सुप्पभ सुपास॥

इति ।

सेल-घण[1], कुडग[2], चालणि[3], परिपूणग[4], हंस[5]. महिस[6], मेसे य[7], मसग[8], जलूग[9], बिराली[10] जाहग[11], गो[12], मेरी[13] आभीरी[14] ॥ ५१ ॥

"सा समासओ तिविहा पन्नत्ता तजहा जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा" जाणिया जहा खीरमिव, जहा हसा जे घुट्टन्ति इह गुरुगुण समिद्धा दोसे य विवज्जति तं जाणसु जाणियं परिस ॥५२॥ अजाणिया जहा–जा होइ पगइमहुरा मियछावय मीह कुक्कुडय भूआ । रयणमिव असठविया । अजाणिया साभवे परिसा ॥ ५३ ॥ दुव्वियड्ढा जह–नय कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण । वत्थिव्ववायपुण्णो फुट्टइ गामिल्लयवियड्ढो दुव्वियड्ढो ॥ ५४ ॥ (सूत्र) नाण पञ्चविह पन्नत, तजहा–आभिणि बोहियनाण सुयनाण, ओहिनाण, मणपज्जवनाण, केवलनाण ॥ १ ॥ त समासओ दुविह पण्णत, तजहा–पचक्ख च परोक्ख च ॥ सू० २ ॥ से कि त पचक्ख ? पचक्ख दुविहपण्णत्त, तजहा इदियपच्चक्ख । नोइदियपच्चक्ख च ॥ सू० ३ ॥ से कि त इदिय पचक्ख ? इदियपचक्ख पञ्चविहं पण्णत्त, तजहा–सो इदियपचक्ख । चक्खिदिय पचक्ख । घाणिंदिय पचक्ख । जिब्भिदिय पचक्ख । फासिंदिय पचक्ख । सेत इदियपचक्ख ॥ सू० ४ ॥ से किं त नोइदियपचक्ख ? नोइदियपचक्ख तिविह पण्णत्त तजहा–ओहिनाण पचक्ख । मणपज्जवनाण पचक्ख । केवलनाण पचक्ख ॥ ५ ॥ से कि त ओहिनाण पचक्ख ? ओहिनाण पचक्ख दुविह पण्णत्त, तजहा–भवपचइयच खा ओवसमियं च ॥ ६ ॥ से कि त भवपचइय ? भवपचइय दुण्ह, तजहा–देवाणय नेरइयाणय ॥ ७ ॥ से किं त खा ओवसमिय ? खा ओवसमय दुण्ह, तंजहा—मणूसाण य पचेदिय तिरिक्ख जोणियाण य । को हेऊ खाओवसमिय ? खाओवसमिय तयावरणि ज्जाण कम्माण उदिण्णाण खएण अणुदिण्णाण उवसमेण ओहिनाण समुप्पज्जइ ॥ सू० ८ ॥ अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाण समुप्पज्जइ तं समासओ छव्विह पण्णत्त, तजहा–आणुगामिय[1], अणाणुगामिय[2], वड्ढमाणय[3], हीयमाणय[4], पडिवाइग[5], अपडिवाइग[6] ॥ ६ ॥ से किं त आणुगामिग आणुगामिग ओहिनाण दुविह पण्णत्त, तजहा–अतगग च मज्झगग च । से किं त अंतगग ? अतगय तिविह पण्णत्त तजहा पुरओ अतगय ? मग्गओ अतगय । पासओ अतगय से कि त पुरओ अतगय ? पुरओ अतगय–से जहा नामए केइ पुरिसे उक्का वा चडुलिय वा अलाय वा मणिं वा पईव वा जोइ वा पुरओ काउ पणुल्लेमाणे २ गच्छेज्जा, से त पुरओ अंतगय । से किं त मग्गओ अतगय ? मग्गओ अतगय से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चडुलिय वा अलाय वा मणिं वा पईव वा जोइ वा मग्गओ काउ अणुलड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से त अतगय । से किं त पासओ अंतगय ? पासओ अतगय सेजहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चडुलिय वा अलाय वा मणिं वा पईव वा जोइं वा पासओ काउ परिकड्ढे माणे २ गच्छिज्जा, से त पासओ अतगय से त अंतगय । से किंत मज्झगय ? मज्झगयं से जहा नामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलिय वा अलाय वा

मणिं वा पईवं वा जोइं वा मत्थए काउं समुव्वहमाणे २ गच्छिज्जा से तं मज्झगयं । अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो । पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ मग्गओ अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । मज्झगएणं ओहिनाणेणं सव्वओ समंता संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । से तं आणुगामियं ओहिनाणं ॥ १० ॥ से किं तं अणाणुगामियं ओहिनाणं अणाणुगामियं ओहिनाणं से जहानामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं, परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अन्नत्थगए न जाणइ न पासइ एवामेव अणाणुगामियं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखे-ज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, अन्नत्थगए न पासइ, से तं अणाणुगामियं ओहिनाणं ॥ ११ ॥ से किं तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ? वड्ढमाणयं ओहिनाणं पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु वट्टमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स । विसुज्झमाणस्स विसुज्झ-माणचरित्तस्स । सव्वओ समंता ओही वड्ढइ—

जावइया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ॥ ओगाहणा जहन्ना ओहीखित्तं जहन्नं तु ॥ ५५ ॥ सव्व बहु अगणि जीवा निरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु ॥ खित्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्त निद्दिट्ठो । ५६ ॥ अंगुलमावलियाणं भाग मसंखिज्ज दोसु संखिज्जा ॥ अंगुलमावलियंतो आवलिया अंगुल पुहुत्तं ॥ ५७ ॥ हत्थम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ॥ जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पन्नवीसाओ ॥ ५८ ॥ भरहम्मि अद्धमासो, जम्बुद्दीवम्मि साहिओ मासो ॥ वासं च मणुय लोए, वासपुहुत्तं च रुयगम्मि ॥ ५९ ॥ संखिज्जम्मि उ काले, दीवसमुद्दा वि हुंति संखिज्जा ॥ कालम्मि असंखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥ ६० ॥ काले चउण्ह वुड्ढी, कालो भइयव्वु खित्त वुड्ढीए ॥ वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥ ६१ ॥ सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुम यरं हवइ खित्तं अंगुल सेढी मित्ते, ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ॥ ६२ ॥ से त्तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ॥ १२ ॥ से किं तं हीयमाणयं ओहिनाणं ? हीयमाणयं ओहिनाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही परिहायइ से त्तं हीयमाणयं ओहिनाणं ॥ १३ ॥ से किं तं पडिवाइ ओहिनाणं ? पडिवाइ ओहिनाणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जय भागं वा संखिज्जय भागं वा वालग्गं वा वालग्ग पुहुत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहुत्तं वा, जूयं वा जूयपुहुत्तं वा, जवं वा जव पुहुत्तं वा । अंगुलं वा अंगुल-पुहुत्तं वा । पायं वा पायपुहुत्तं वा । विहत्थिं वा विहत्थि पुहुत्तं वा । रयणिं वा रयणि पुहुत्तं वा कुच्छिं कुच्छिपुहुत्तं वा, धणुं वा धणुपुहुत्तं वा । गाउयं वा गाउयपुहुत्तं वा । जोयणं वा जोयण पुहुत्तं वा । जोयणसयं वा जोयणसय पुहुत्तं वा जोयण सहस्सं वा जोयणसहस्स पुहुत्तं वा । जो-यणलक्खं वा जोयणलक्ख पुहुत्तं वा । जोयणकोडिं वा जोयणकोडाकोडिं पुहुत्तं वा । जोयणकोडा-कोडिं वा जोयणकोडाकोडि पुहुत्तं वा । [जो संखिज्जं वा जो संखिज्ज पुहुत्तं वा जो अस

असंखेज्जंवा जो अणअसखेज्जपुहुंत्तंवा ।] उक्कोसेण लोग वा पासि त्ताणं पडिवइज्जा। से त पडिवाइ ओहिनाण ॥ १४ ॥ से किं त अपडिवाइ ओहिनाण। अपडिवाइ ओहिनाणजेण अलोगस्स एग-मवि आगासपएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइ ओहिनाण। से त्त अपडिवाइ ओहिनाण ॥१५॥ त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तंजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्व ओ णं ओहि-नाणी जहन्नेण अणताइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्वाइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ, खित्त-ओण ओहिनाणी जहन्नेण अगुलस्स असखिज्जय भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखि ज्जाइ अलोगे लोगप्पमाण मित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ, कालओ ण ओहिनाणी जहन्नेण आवलियाए असखिज्जय भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय मणागय च कालं जाणइ, पासइ भावओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणते भावे जाणइ पासइ, उक्कसेणवि अणते भावे जाणइ पासइ। सव्व भावाण मणत भाग भावे जाणइ पासइ ॥ १६ ॥ ओही भवपच्चइओ गुणपच्च-इओ य वण्णिओ दुविहो। तस्स य बहू विगप्पा दव्वे खित्ते य कालेय। नेरइयदेवतित्थकरा य ओहिस्सऽबाहिरा हुंति। पासति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासति। से त्त ओहिनाणपच्चक्ख से किं त मणपज्जवनाण ? मणपज्जवनाणे ण भते ! किं मणुस्साण उप्पज्जइ अमणुस्साण ? गोयमा ! मणुस्साण नो अमणुस्साण० ? जइमणुस्साण कि समुच्छिममणुस्साण गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ? नोसमुच्छिममणुस्साण उपज्जई गब्भवक्कतियमणुस्साणं। जइगब्भवक्कतियमणुस्साण किं कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं, अकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अन्तरदीवगगब्भव-क्कतिय मणुस्साण, गोयमा ? कम्मभूमिय गब्भक्कतियमणुस्साण नो अकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय-मणुस्साण, नो अन्तरदीवग गब्भ वक्कतियमणुस्साण जइ कम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, किं सखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतियमणुस्साण असखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणु-स्साण ? गोयमा ? सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं, नो असखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय मणुस्साण। जइ सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, कि पज्जत्तग सखे-ज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ! पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, नो अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण। जइ पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभू-मिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण० किं सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्क-तिय मणुस्साण, मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, स-म्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ! सम्म दिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण नो मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण०, नो सम्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण जइ सम्मदिट्ठिपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभू मिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण किं सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ-वक्कतिय मणुस्साण, असजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण। सजया सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणु-

मणिं वा पईवं वा जोइं वा मत्थए काउ समुव्वहं माणे २ गच्छिज्जा सेत मज्झगय । अतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो । पुरओ अतगएण ओहि नाणेणं पुरओ चेव सखिज्जाणि वा असखे-ज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ मग्गओ अवगएण ओहिनाणेण मग्गओ चेव सखिज्जाणि वा अस-खिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ । पासओ अतगएणं ओहिनाणेण पासओ चेव सखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ । मज्झगएण ओहिनाणेण सव्वओ समता संखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ । से त आणुगामिय ओहिनाण ॥ १० ॥ से किं तं अणा-णुगामिय ओहिनाण अणाणु गामियं ओहिनाण से जहानामए केइ पुरिसे एग महत जोइट्ठाण काउ तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेर तेहिं परिपेरतेहिं, परिघोले माणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाण पासइ, अन्नत्थगए न जाणइ न पासइ एवामेव अणाणुगामिय ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव सखे-ज्जाणि वा असखेज्जाणि वा सबद्धाणि वा असबद्धाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ, अन्नत्थगएण पासइ, से त्तं अणाणुगामिय ओहिनाणं ॥ ११ ॥ से किं त वड्ढमाणय ओहिनाण ? वड्ढमाणय ओहिनाण पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु वड्ढमाणस्स वड्ढमाण चरित्तस्स । विसुज्झमाणस्स विसुज्झ-माण चरित्तस्स । सव्वओ समता ओहि वड्ढइ—

जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ॥ ओगाहणा जहन्ना ओहीखित्त जहन्नं तु ॥ ५५ ॥ सव्व बहु अगणि जीवा निरतर अत्तिय भरिज्जसु ॥ खित्त सव्वदिसाग परमोही खेत्तनि-द्दिट्ठो ॥ ५६ ॥ अगुलमावलियाण भाग मसखिज्ज दोसु संखिज्जा ॥ अगुलमावलियतो आवलिया अगुल पुहुत्त ॥ ५७ ॥ हत्थम्मि मुहुत्ततो, दिवसतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ॥ जोयण दिवसपुहुत्त, पक्खतो पन्नवीसाओ ॥ ५८ ॥ भरहम्मि अद्धमासो, जम्बुद्दीवम्मि साहिओ मासो ॥ वास च मणुय लोए, वासपुहुत्त च रुयगम्मि ॥५९॥ सखिज्जम्मि उ काले, दीवसमुद्दावि हुति सखिज्जा॥ कालम्मि असखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥ ६० ॥ काले चउण्हवुड्ढी, कालो भइयव्वु खित्त वुड्ढीए ॥ वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥ ६१ ॥ सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुम-यर हवइ खित्त अंगुल सेढी मित्ते, ओसप्पिणिओ असखिज्जा ॥ ६२ ॥ से त्त वड्ढमाणय ओहिनाण म्रू ॥ १२ ॥ से किं तं हीयमाणय ओहिनाण ? हीयमाणय ओहिनाण अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठा णेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स सकिलिस्स माणस्स सकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समन्ता ओही परिहायइ से त्त हीयमाणय ओहिनाण ॥ १३ ॥ से किं त पडिवाइ ओहिनाण ? पडिवाइ ओहिनाण जहण्णेण अगुलस्स असखिज्जय भाग वा सखिज्जय भाग वा वालग्ग वा वालग्ग पुहुत्त वा लिक्ख वा लिक्खपुहुत्त वा, जूय वा जूयपुहुत्त वा, जव वा जव पुहुत्त वा । अगुल वा अगुल-पुहुत्त वा । पाय वा पायपुहुत्त वा । विहत्थि वा विहत्थि पुहुत्तं वा । रयणि वा रयणि पुहुत्तं वा। कुच्छि कुच्छिपुहुत्तं वा, धणु वा धणुपहुत वा । गाउअ वा गाउयपुहुत्त वा । जोयण वा जोयण पुहुत्त वा । जोअणसय वा जोयणसय पुहुत्त वा जोयण सहस्स वा जो यणसहस्स पुहुत्त वा । जो यणलक्खं वा जोयणलक्ख पुहुत्त वा । जोयणकोडिं वा जोयणकोडाकोडि पुहुत्त वा। जोयणकोडा-कोडिं वा जोयणकोडाकोडि पुहुत्त वा । [जो अणसखिज्ज वा जो अणसखिज्ज पुहुत्त वा जो अण

असंखेज्जना जो अणअसखेज्जपुहुत्तवा ।] उक्कोसेण लोगं ना पासि त्ताण पडिनइज्जा । से त पडिवाइ ओहिनाण ॥ १४ ॥ से किं त अपडिवाइ ओहिनाण । अपडिवाइ ओहिनाणजेण अलोगस्स एग-मवि आगासपएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइ ओहिनाण । से त्त अपडिवाइ ओहिनाण ॥१५॥ त समासओ चउविह पण्णत्त, तंजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ दव्व ओ ण ओहि-नाणी जहन्नेण अणताइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्वाइं रूविदव्वाइ जाणइ पासइ खित्त-ओण ओहिनाणी जहन्नेण अगुलस्स असंखिज्जय भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असंखि ज्जाइ अलोगे लोगप्पमाण मित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ, कालओ ण ओहिनाणी जहन्नेण आवलियाए असखिज्जय भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय मणागय च काले जाणइ, पासइ. भावओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेणवि अणते भावे जाणइ पासइ । सव्व भावाण मणत भाग भावे जाणइ पासइ ॥ १६ ॥ ओही भवपच्चइओ गुणपच्च-इओ य वण्णिओ दुविहो । तस्स य बहू विगप्पा दव्वे खित्ते य कालेय । नेरइयदेवतित्थकरा य ओहिस्सऽबाहिरा हुति । पासति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासति । से त्त ओहिनाणपच्चक्ख से कि त मणपज्जवनाण ? मणपज्जवनाणे ण भते ! किं मणुस्साण उप्पज्जइ अमणुस्साण ? गोयमा ! मणुस्साण नो अमणुस्साण० ? जइमणुस्साण कि समुच्छिममणुस्साण गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ? नोसमुच्छिममणुस्साण उपज्जइ गब्भवक्कतियमणुस्साणं । जइगब्भवक्कतियमणुस्साण कि कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अन्तरदीवगगब्भवक्कतिय मणुस्साण, गोयमा ? कम्मभूमिय गब्भवक्कतियमणुस्साण नो अकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय-मणुस्साण, नो अन्तरदीवग गब्भ वक्कतियमणुस्साण जइ कम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, कि सखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतियमणुस्साण असखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणु-स्साण ? गोयमा ? सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, नो असखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय मणुस्साण। जइ सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, कि पज्जत्तग सखे-ज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साणं,अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ! पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण,नो अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण । जइ पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभू-मिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण० किं सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्क तिय मणुस्साण, मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, स-म्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण ? गोयमा ! सम्म दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण नो मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण०, नो सम्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, जइ सम्मदिट्ठिपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभू मिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण किं सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ-वक्कतिय मणुस्साण, असजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण । सजया सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणु-

स्साण ? गोयमा ! संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, नो असंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण। नो संजयासंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण । जइ संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण किं पमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण ? गोयमा ! अपमत्तसंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, नो पमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण । जइ अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, किं इड्ढीपत्त अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण अणिड्ढीपत्त अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणँ ? गोयमा ! इड्ढीपत्तअपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो अणिड्ढीपत्त अपमत्तसंजयसम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय मणुस्साण । मणपज्जवनाण समुप्पज्जइ ॥ सू० ॥ १७ ॥ त च दुविह उप्पज्जइ तजहा उज्जुमई य विउलमई य त समासओ चउव्विह पन्नत्त तजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओण उज्जुमई अणंते अणत पएसिए खंधे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ । खित्तओणं उज्जुमई यजहन्नेण अगुलस्स असंखेज्जय भाग उक्कोसेण अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डग पयरे उड्ढ जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरिय जाव अन्तोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमिसु तीसाए अकम्मभूमिसु छप्पन्नाए अन्तरदीवगेसु सन्निपचेंदियाण पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पासइ त चेव विउलमई अड्ढाईज्जेहिंमंगुलेहिं अब्भहियतर विउलतर विसुद्धतर वितिमिरतराग खेत्त जाणइ पासइ । कालओ ण उज्जुमई जहन्नेण पलिओवमस्स असंखिज्जयभाग उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखिज्जयभाग अतीयमणागय वा कालं जाणइ पासइ । त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ । भावओ ण उज्जुमई अणत भाव जाणइ पासइ, सव्वभावाण अणतभाग जाणइ पासइ । त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ । मणपज्जवनाण पुण जणमणपरिचिंतियत्थपागडण। माणुसखित्तनिबद्ध गुणपच्चइय चरित्तवओ ॥ ६५ ॥ से त मणपज्जवनाण सू० ॥ १८ ॥ से किं त केवलनाण ? केवलनाण दुविह पन्नत्त, तजहा-भवत्थकेवलनाणं च सिद्धकेवलनाण च । से किं त भवत्थकेवलनाण ? भवत्थकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा-सजोगिभवत्थकेवलनाण च अजोगिभवत्थकेवलनाण च । से किं त सजोगिभवत्थकेवलनाण ? सजोगिभवत्थकेवलनाण दुविह पण्णत्तं, तजहा—पढमसमयसजोगिभवत्थ, केवलनाण च अपढम समय सजोगिभवत्थकेवलनाण च, अहवा, चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाण च अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च, से त्तं सजोगिभवत्थकेवलनाण । से किं त अजोगिभवत्थकेवलनाण? अजोगिभवत्थकेवलनाण दुविह पन्नत्त, तजहा-पढमसमयअजोगि-

भवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अहवा चरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च, से त्त अजोगिभवत्थकेवलनाणं, से त्त भवत्थकेवलनाणं ॥ सू० ॥ १९ ॥ से किं तं सिद्धकेवलनाणं? सिद्धकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—अणंतरसिद्धकेवलनाणं च परंपरसिद्धकेवलनाणं च ॥ सू० ॥ २० ॥ से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं? अणंतरसिद्धकेवलनाणं पन्नरसविहं पण्णत्तं, तंजहा—तित्थसिद्धा १, अतित्थसिद्धा २, तित्थयरसिद्धा ३, अतित्थयरसिद्धा ४, सयंबुद्धसिद्धा ५, पत्तेयबुद्धसिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा, ७ इत्थिलिंगसिद्धा ८, पुरिसलिंगसिद्धा ९, नपुंसगलिंगसिद्धा १०, सलिंगसिद्धा ११, अन्नलिंगसिद्धा १२, गिहिलिंगसिद्धा १३, एगसिद्धा १४, अणेगसिद्धा १५, से त्त अणंतरसिद्धकेवलनाणं ॥ सू० ॥ २१ ॥ से किं तं परंपरसिद्धकेवलनाणं? परंपरसिद्धकेवलनाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा-अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव दससमयसिद्धा, संखिज्जसमयसिद्धा, असंखिज्जसमयसिद्धा, अणंतसमयसिद्धा, से त्त परंपरसिद्धकेवलनाणं, से त्त सिद्धकेवलनाणं ॥ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ। कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ। अह सव्वदव्वपरिणाम, भावविण्णत्तिकारणमणंतं। सासयमप्पडिवाइ, एगविहं केवलं नाणं ॥ ६६ ॥ सू० ॥ २२ ॥ केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे। ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुयं हवइ सेसं ॥ ६७ ॥ से त्त केवलनाणं, से त्त नोइंदियपच्चक्खं से त्त पच्चक्खनाणं ॥ सू० ॥ २३ ॥ से किं तं परोक्खनाणं? परोक्खनाणं दुविहं पन्नत्तं, तंजहा—आभिणिबोहियनाणपरोक्खं च, सुयनाणपरोक्खं च, जत्थ आभिणिबोहियनाणं तत्थ सुयनाणं, जत्थ सुयनाणं तत्थाभिणिबोहियनाणं, दोऽवि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं, तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्तं पण्णवयंति-अभिनिबुज्झइति आभिणिबोहियनाणं, सुणेइत्ति सुयं, मइपुव्वं जेण सुयं, न मई सुयपुव्विया ॥ सू० ॥ २४ ॥ अविसेसिया मई, मइनाणं च मइअन्नाणं च। विसेसिया सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाणं मिच्छदिट्ठिस्स मई मइअन्नाणं। अविसेसियं सुयं सुयनाणं च सुयअन्नाणं च। विसेसियं सुयं सम्मदिट्ठिस्स सुयं सुयनाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सुयं सुयअन्नाणं ॥ सू० २५ ॥ से किं तं आभिणिबोहियनाणं? आभिणिबोहियनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-सुयनिस्सियं च, अस्सुयनिस्सियं च। से किं तं अस्सुयनिस्सियं? अस्सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—उप्पत्तिया १ वेणइया २, कम्मया ३, परिणामिया ४। बुद्धि चउव्विहा वुत्ता, पंचमा नोवलब्भइ ॥ ६८ ॥ सू० ॥ २६ ॥ पुव्वमदिट्ठमस्सुयमवेइय, तक्खणविसुद्धगहियत्था। अव्वाहयफलजोगा, बुद्धि उप्पत्तिया नाम ॥ ६९ ॥ भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुड्डग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८। गय ९ घयण १० गोल ११ खंभे १२, खुड्डग १३ मग्गि १४ त्थि १५ पइ १६ पुत्ते १७ ॥ ७० ॥ भरह १ सिल २ मिंढ ३ कुक्कुड ४, तिल ५ वालुय ६ हत्थि ७ अगड ८ वणसंडे ९। पायस १० अइया ११ पत्ते १२, खाडहिला १३ पंच पिअरो य १४ ॥ ७१ ॥ महुसित्थ १८ मुद्दि १९ अंके २०, य नाणए २१ भिक्खु २२ चेडगनिहाणे २३ सिक्खा २४ य अत्थसत्थे २५, इच्छा य महं २६ सयसहस्से २७ ॥ ७२ ॥

भरनित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला। उभओलोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ७३ ॥ निमित्ते १ अत्थसत्थे य २ लेहे ३ गणिए य कूव ५ अस्से ६ य। गद्दभ ७ लक्खण ८ गंठी ९, अगए १० रहिए ११ य गणिया १२ य ॥ ७४ ॥ सीया साडी दीहं, च तण अवस व्वय च कुंचस्स १३ निव्वोदए १४ य गोणे, घोडगपडणं च रुक्खाओ १५ ॥ ७५ ॥ उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला। साहुक्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ७६ ॥ हेरण्णिए १ करिसए २, कोलिय ३ डोवे ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ तुन्नाए ८ वड्ढइ य ९ पूयइ १० घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ७७ ॥ अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिया वयविवागपरिणामा। हियनिस्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥ ७८ ॥ अभए १ सिट्ठि कुमारे ३, देवी ४ उदिओदए हवइ राया ५ साहू य नंदिसेणे ६, धणदत्ते ७ सावग ८ अमच्चे ९ ॥ ७९ ॥ खमए १० अमच्चपुत्ते ११, चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे १३ य। नासिकसुंदरिनंदे १४ वइरे परिणामिया बुद्धी ॥८०॥ चलणाहण १६ आमंडे १७, मणी १८ य सप्पे १९ य खग्गि २० थूभिंदे २१। परिणामियबुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥ ८१ ॥ सेत्तं अस्सुयनिस्सियं। से किं तं सुयनिस्सियं? सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा–उग्गहे १ ईहा २ अवाओ ३ धारणा ४ ॥ सू० ॥ २६ ॥ से किं तं उग्गहे? दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य, ॥ सू० ॥ २७ ॥ से किं तं वंजणुग्गहे? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–सोइंदियवंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे जिब्भिंदियवंजणुग्गहे फासिंदियवंजणुग्गहे, से त्तं वंजणुग्गहे ॥ सू० ॥ ॥ २८ ॥ से किं तं अत्थुग्गहे? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअत्थुग्गहे, चक्खिंदियअत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे, जिब्भिंदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइंदियअत्थुग्गहे ॥ सू० ॥ ॥ २९ ॥ तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा–ओगेण्हणया, उवधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा, से त्तं उग्गहे ॥ सू० ॥ ३० ॥ से किं तं ईहा? छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा–सोइंदियईहा, चक्खिंदियईहा, घाणिंदियईहा, जिब्भिंदियईहा, फासिंदियईहा, नोइंदियईहा, तीसेणं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणा वंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा–आभोगणया, मग्गणया, गवेसणया, चिंता, वीमंसा, से त्तं ईहा ॥ सू० ॥ ३१ ॥ से किं तं अवाए? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–सोइंदियअवाए, चक्खिंदियअवाए, घाणिंदियअवाए जिब्भिंदियअवाए, फासिंदियअवाए, नोइंदियअवाए, तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवन्ति, तंजहा—आउट्टणया, पच्चाउट्टणया, अवाए, बुद्धी, विण्णाणे, से त्तं अवाए ॥ सू० ३२ ॥ से किं तं धारणा? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा–सोइंदियधारणा, चक्खिंदियधारणा, घाणिंदियधारणा, जिब्भिंदियधारणा, फासिंदियधारणा, नोइंदियधारणा, तीसे णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा धरणा, धारणा, ठवणा, पइट्ठा, कोट्ठे, से त्तं धारणा ॥ सू० ॥ ३३ ॥ उग्गहे इक्कसमइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ॥ सू० ॥ ३४ ॥ एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण। से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं? पडिबोहगदिट्ठंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहिज्जा,

अमुगा अमुगत्ति तत्थ चोयगे पन्नवयं एव वयासी–किं एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति? दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति? जाव दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति? संखिज्ज-समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति?, असंखिज्ज समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति?, एवं वयंत चोयगं पण्णवए एवं वयासी–नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, जाव नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो संखिज्जसमयप-विट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, से त्तं पडिबोहग-दिट्ठंतेणं। से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं? मल्लगदिट्ठंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदु पक्खेविज्जा, से नट्ठे, अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे, एवं पक्खि-प्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं रावेहिइत्ति, होही से उदगबिंदू, जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति, होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं भरिहिति, होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं पवाहेहिति, एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ, ताहेहुंति करेइ नो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ? तओ ईहं पविसइ, तओजाणइ अ-मुगे एस सद्दइ; तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओणं धारेइ संखिज्जं वा कालं, असंखिज्जं वा कालं, से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सद्दं सुणिज्जा, तेणं सद्दोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस सद्दे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं अ-संखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा तेणं रूवत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रूवत्ति, तओ ईहंपविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रूवे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइपुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा तेणं गंधत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गंधेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए–केइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा तेणं रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रसेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा तेणं फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस फासओत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा तेणं सुमिणेत्ति उग्गहिए नो चेव णं जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं, से त्तं मल्लगदिट्ठंतेणं ॥ सू० ३५ ॥ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं तंजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ णं आ-भिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ, न पासइ। खेत्तओणं आ...

आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ न पासइ। कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ न पासइ। भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ, न पासइ।

उग्गह ईहाऽवाओ, य धारणा एव हुंति चत्तारि। आभिणिबोहियनाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥८२॥ * अत्थाणं उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा। ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं बिंति ॥ ८३ ॥ उग्गह इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु। कालमसंखं संखं, च धारणा होई नायव्वा ॥ ८४ ॥ पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु। गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥ ८५ ॥ भासासमसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ। वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ८६ ॥ ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा। सन्ना सई मई पन्ना, सव्वं आभिणिबोहियं ॥ ८७ ॥

से त्तं आभिणिबोहियनाणपरोक्खं, से त्तं मइनाणं ॥ सू० ॥ ३६ ॥ से किं तं सुयनाणपरोक्खं? सुयनाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्तं तंजहा—अक्खरसुयं १ अणक्खरसुयं २ सण्णिसुयं ३ असण्णिसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ साइयं ७ अणाइयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अंगपविट्ठं १३ अणंगपविट्ठं १४ ॥सू०३७॥ से किं तं अक्खरसुयं? अक्खरसुयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा—सन्नक्खरं वंजणक्खरं, लद्धिअक्खरं। से किं तं सन्नक्खरं? सन्नक्खरं अक्खरस्स संठाणागिई, से त्तं सन्नक्खरं। से किं तं वंजणक्खरं? वंजणक्खरं अक्खरस्स वंजणाभिलावो, से त्तं वंजणक्खरं। से किं तं लद्धिअक्खरं? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुप्पज्जइ, तंजहा—सोइंदिय लद्धिअक्खरं, चक्खिंदिय लद्धिअक्खरं, घाणिंदिय लद्धिअक्खरं, रसणिंदिय लद्धिअक्खरं, फासिंदिय लद्धिअक्खरं, नोइंदिय लद्धिअक्खरं, से त्तं लद्धिअक्खरं, से त्तं अक्खरसुयं ॥ से किं तं अणक्खरसुयं? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—ऊससियं नीससियं, निच्छूढं खासियं च छीयं च। निस्सिंघियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं ॥ ८८ ॥

से त्तं अणक्खरसुयं ॥ सू० ३८ ॥ से किं तं सण्णिसुयं? सण्णिसुयं तिविहं पण्णत्तं, तंजहा—कालिओवएसेणं, हेऊवएसेणं, दिट्ठिवाओवएसेणं। से किं तं कालिओवएसेणं? कालिओवएसेणं जस्स णं अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं सण्णीति लब्भइ। जस्स णं नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं असण्णीति लब्भइ, से त्तं कालिओवएसेणं। से किं तं हेऊवएसेणं? हेऊवएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ। जस्स णं नत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णीति लब्भइ, से त्तं हेऊवएसेणं। से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भइ, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भइ, से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं, से त्तं सण्णिसुयं, से त्तं असण्णिसुयं ॥ सू० ॥ ३९ ॥ से किं तं सम्मसुयं? सम्मसुयं जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पण्णनाणदंसणधरेहिं तेलुक्कनिरिक्खियमहियपूइएहिं तीयपडुप्पन्नमणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं, तंजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ

* अत्थाणं उग्गहणं, च उग्गहं तह वियालणं ईहं। ववसायं च अवायं धरणं पुण धारणं बिंति ॥ १ ॥ इति पाठान्तरगाथा।

४ विवाहपण्णत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठिवाओ १२, इच्चेयं दुवालसंग गणिपिडगं चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुयं, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुयं, तेण परं भिण्णेसु भयणा, से त्तं सम्मसुयं ॥ सू० ॥ ४० ॥ से किं तं मिच्छासुयं ? मिच्छासुयं जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धिमइविगप्पियं, तंजहा—भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्खं, कोडिल्लयं, सगडभद्दियाओ, खोड (घोडग) मुहं, कप्पासियं, नागसुहुमं, कणगसत्तरी, वइसेसियं, बुद्धवयणं, तेरासियं, काविलियं, लोगाययं, सट्ठितंतं, माढरं, पुराणं, वागरणं, भागवयं, पायंजली पुस्सदेवयं, लेहं, गणियं, सउणरुयं नाडयाइं, अहवा बावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया संगोवंगा, एयाइं मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छासुयं एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुयं, अहवा मिच्छदिट्ठिस्सवि एयाइं चेव सम्मसुयं, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ चयंति,से त्तं मिच्छासुयं ॥ सू० ॥ ४१ ॥ से किं तं साइयं सपज्जवसियं, अणाइयं अपज्जवसियं च ? इच्चेयं दुवालसंगं गणि पिडगं वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइयं सपज्जवसियं अवुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसियं, तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंचेरवयाइं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, कालओ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, नो उस्सप्पिणिं नो ओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, भावओ णं जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, ते तया भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसियं खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, अहवा भवसिद्धियस्स सुयं साइयं सपज्जवसियं च, अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अपज्जवसियं च, सव्वागासपएसग्गं सव्वागासपएसेहिं अणंतगुणियं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ, सव्वजीवाणंपि य णं अक्खरस्स अणंतभागो,निच्चुग्घाडियो जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेण जीवो अजीवत्तं पाविज्जा,— "सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चंदसूराणं" से त्तं साइयं सपज्जवसियं, से त्तं अणाइयं अपज्जवसियं ॥ सू० ॥ ४२ ॥ से किं तं गमियं ? गमियं दिट्ठिवाओ, से किं तं अगमियं अगमियं कालियं सुयं, से त्तं गमियं, से त्तं अगमियं। अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—अंगपविट्ठं, अंग बाहिरं च। से किं तं अंगबाहिरं ? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—आवस्सयं च, आवस्सयवइरित्तं च। से किं तं आवस्सयं ? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—सामाइयं, चउवीसत्थओ, वंदणयं, पडिक्कमणं, काउस्सग्गो, पच्चक्खाणं, से त्तं आवस्सयं। से किं तं आवस्सयवइरित्तं ? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—कालियं च, उक्कालियं च। से किं तं उक्कालियं २ अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—दसवेयालियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं, उववाइयं, रायपसेणियं, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमायं, नंदी, अणुओगदाराइं, देविंदत्थओ, तंदुलवेयालियं, चंदाविज्झयं, सूरपण्णत्ती, पोरिसिमण्डलं, मण्डलपवेसो, विज्जाचरणविणिच्छओ, गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती, आयवि-

गोही, वीयरागसुयं, संलेहणासुयं, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाणं, महापच्चक्खाणं, एवमाइ, से त्तं उक्कालियं। से किं तं कालियं? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा-उत्तरज्झयणाइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहं, महानिसीहं, इसिभासियाइं, जम्बूदीवपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चंदपन्नत्ती, खुड्डिया विमाणपविभत्ती महल्लिया विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेसमणोववाए, वेलंधरोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, नागपरियावलियाओ, निरयावलियाओ कप्पियाओ, कप्पवडंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ, आसीविसभावणाणं, दिट्ठिविसभावणाणं, सुमिण भावणाणं महासुमिणभावणाणं, तेयग्गिनिसग्गाणं, एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साइं भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दस पइन्नगसहस्साइं भगवओ वद्धमाणसामिस्स अहवा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं, पत्तेयबुद्धावि तत्तिया चेव, से त्तं कालियं, से त्तं आवस्सयवइरित्तं, से त्तं अणंगपविट्ठं ॥ सू० ॥ ४३ ॥ से किं तं अंगपविट्ठं? अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं, तंजहा-आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठिवाओ १२ ॥ सू० ४४ ॥ से किं तं आयारे? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयारगोयरविणयवेणइयसिक्खाभासाअभासाचरणकरणजायामायावित्तीओ आघविज्जंति, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-नाणायारे दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा, अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा, पंचासीइं उद्देसणकाला, पंचासीइं समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं आयारे ? ॥ सू० ॥ ४५ ॥ से किं तं सूयगडे? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति, ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमयपरसमए सूइज्जइ, सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईणं, बत्तीसाए वेणइयवाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ, सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा, अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तित्तीसं उद्देसणकाला, तित्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा, अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निद-

सिज्जति, उवदंसिज्जति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं सूयगडे २ ॥ सू० ॥ ४६ ॥ से किं तं ठाणे? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमयपरसमए ठाविज्जइ, लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ। ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा, कुंडाइं, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आघविज्जंति। ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ। ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दसअज्झयणा एगवीसं उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरिं पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं ठाणे ३ ॥ सू० ॥ ४७ ॥ से किं तं समवाए? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवाजीवा समासिज्जंति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ लोयालोए समासिज्जइ। समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ, समवायस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ, निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले सयसहस्से पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से त्तं समवाए ४ सू० ।४८॥ से किं तं विवाहे? विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति, ससमए विआहिज्जंति, परसमए विआहिज्जंति, ससमए परसमए विआहिज्जंति, लोए विआहिज्जंति, अलोए विआहिज्जंति, लोयालोए विआहिज्जंति, विवाहस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए, दस उद्देसगसहस्साइं समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं विवाहे ५ ॥ सू० ॥ ४९ ॥ से किं तं नायाधम्मकहाओ? नायाधम्मकहासु णं नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया,

धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जाओ, परिआया, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइया सयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइं एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवंतित्ति समक्खायं। नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा, एगूणवीसं अज्झयणा, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं नायाधम्मकहाओ ६ ॥ सू० ॥ ५० ॥ से किं तं उवासगदसाओ? उवासगदसासु णं समणोवासयाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ आघविज्जंति, उवासगदसाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं उवासगदसाओ ७ ॥ सू० ॥ ५१ ॥ से किं तं अंतगडदसाओ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं नगराइं उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचागा, पव्वज्जाओ परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति; अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणी, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठ वग्गा अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति; से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं अंतगडदसाओ ८ ॥ सू० ॥ ५२ ॥ से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ?

अणुत्तरोववाइयदसासु ण अणुत्तरोववाइयाण नगराइ, उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, पडिमाओ, उवसग्गा, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ, अणुत्तरोववाइय त्ति उववत्ती, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जति, अणुत्तरोववाइयदसासु ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्ठयाए नवमे अगे, एगे सुयक्खधे, तिन्नि वग्गा, तिन्नि उद्देसणकाला, तिन्नि समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जंति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्त अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ ॥ सू० ॥ ५३ ॥ से किं तं पण्हावागरणाइ ? पण्हावागरणेसु ण अट्ठुत्तर पसिणसय, अट्ठुत्तर अपसिणसय अट्ठुत्तर पसिणापसिणसय, तजहा—अगुट्ठपसिणाइ, बाहुपसिणाइ, अद्दागपसिणाइ, अन्नेविविचित्ता विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धि दिव्वा सवाया आघविज्जति, पण्हावागरणाण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ संगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ; से ण अगट्ठयाए दसमे अगे एगे सुयक्खधे, पणयालीस अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीस समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पयसहस्साइं पयग्गेणं, सखेज्जा अक्खरा, अणतागमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्त पण्हावागरणाइं १० ॥ सू० ॥ ५४ ॥ से किं त विवागसुय ? विवागसुए ण सुकडदुक्कडाण कम्माण फलविवागे आघविज्जइ, तत्थ ण दस दुहविवागा दस सुहविवागा । से किं त दुहविवागा ? दुहविवागेसु ण दुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, वणसडाइ, चेइयाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेसा, निरयगमणाइ, ससारभवपवचा दुहपरपराओ, दुकुलपच्चायाइओ, दुलहबोहियत्त, आघविज्जइ, से त्त दुहविवागा । से किं त सुहविवागा ? सुहविवागेसु ण सुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, वणसडाइ चेइयाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुहपरपराओ, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अतकिरियाओ, आघविज्जति । विवागसुयस्स ण परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ संगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खधा, वीस अज्झयणा, वीस उद्देसणकाला, वीस समुद्देसणकाला, सखिज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयक-

आजीवियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि तेरासिय सुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए; एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीई सुत्ताइं भवंतित्ति मक्खायं, से त्तं सुत्ताइं २। से किं तं पुव्वगए? पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा— उप्पायपुव्वं १ अग्गाणीयं २ वीरियं ३ अत्थिनत्थिप्पवायं ४ नाणप्पवायं ५ सच्चप्पवायं ६ आयप्पवायं ७ कम्मप्पवायं ८ पच्चक्खाणप्पवायं (पच्चक्खाणं) ९ विज्जणुप्पवायं १० अवञ्झं ११ पाणाऊ १२ किरियाविसालं १३ लोकबिंदुसारं १४। उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता। अग्गाणीयपुव्वस्स णं चोद्दस वत्थू; दुवालस चूलियावत्थू पण्णत्ता। वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिनत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। नाणप्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दोण्णिवत्थूपण्णत्ता। आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाणपुव्वस्स णं वीसं वत्थू पण्णत्ता। विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स णं पन्नरस वत्थू पण्णत्ता अवञ्झपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरियाविसाल पुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। लोकबिंदुसारपुव्वस्स णं पणुवीसं वत्थू पण्णत्ता, गाहा—

दस १ चोद्दस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि। सोलस ७ तीसं ८ वीसा ९, पन्नरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ८९ ॥

बारस इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि। तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ ॥९०॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेवदस ४ चेव चुल्लवत्थूणि। आइल्लाण चउण्हं, चूलिया नत्थि ॥९१॥

से त्तं पुव्वगए। से किं तं अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—मूलपढमाणुओगे, गंडियाणुओगे य। से किं तं मूलपढमाणुओगे? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा, देवगमणाइं, आउं, चवणाइं, जम्मणाणि अभिसेया रायवरसिरीओ, पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि य, सीसा, गणहरा, अज्जपवत्तिणीओ संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं, जिणमणपज्जवओहिनाणी, सम्मत्तसुयनाणिणो य वाई अणुत्तरगईय, उत्तरवेउ, व्विणो य मुणिणो, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिरं च कालं, पोआवगया जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता अंतगडे मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघ विप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते, एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया, से त्तं मूलपढमाणुओगे से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ, चक्कवट्टिगंडियाओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ, गणधरगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडियाओ, चित्ततरगंडियाओ अमरनरतिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति, पण्णविज्जंति से त्तं गंडियाणुओगे, से त्तं अणुओगे ४। से किं तं चूलियाओ? आइल्लाण चउण्हं पुव्वाणं, चूलिया सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं, से त्तं चूलियाओ। दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा

सिलोगा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जापाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा. परित्ता तसा अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से एवं आया, एवं नाया एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जति, से त्तं दिट्ठिवाए १२ ॥ सू० ५६ ॥ इच्चेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा, अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता-

भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव । जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ९२ ॥

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्संति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे । से जहानामए पंचत्थिकाए न कयाइनासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ, य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे, एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे । से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ दव्वओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ, कालओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ पासइ, भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥ सू० ५७ ॥

अक्खर सन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च । गमियं अंगपविट्ठं, सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥ ९३ ॥ आगमसत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं । बिंति सुयनाणलंभं, तं पुव्वविसारया धीरा ॥ ९४ ॥

सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४ य ईहएयावि ५ । तत्तो अपोहए ६ वा, धारेइ ७ करेइ वा सम्मं ८ ॥ ९५ ॥

मूअं हुंकारं वा, बाढक्कार पडिपुच्छ वीमंसा । तत्तो पसंगपारायणं च परिणिट्ठ सत्तमए ॥ ९६ ॥

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ । तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ९७ ॥

से त्त अंगपविट्ठं, से त्तं सुयनाणं से त्तं परोक्खनाणं, से त्तं नंदी ॥ नंदी समत्ता ॥

उववाई सुत्तं

(बावीस गाथा)

कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया? । कहिं बोंदिं चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झई ॥ १ ॥
अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया । इहं बोंदिं चइत्ता णं, तत्थ गंतूण सिज्झई ॥ २ ॥
जं संठाणं तु इहं भवं चयंतस्स चरिमसमयंमि । आसी य पएसघणं तं संठाणं तहिं तस्स ॥ ३ ॥
दीहं वा हस्सं वा जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं । तत्तो तिभागहीणं सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥
तिण्णि सया तेत्तीसा धणुत्तिभागो य होइ बोधव्वा । एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥
चत्तारि य रयणीओ रयणितिभागूणिया य बोधव्वा । एसा खलु सिद्धाणं मज्झिमओगाहणा भणिया ॥६॥
एक्का य होइ रयणी साहीया अंगुलाइं अट्ठ भवे । एसा खलु सिद्धाणं जहण्णओगाहणा भणिया ॥ ७ ॥
ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होइ परिहीणा । संठाणमणित्थंथं जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥
जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का । अण्णोण्णसमोगाढा पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥ ९ ॥
फुसइ अणंते सिद्धे सव्वपएसेहिं णियमसो सिद्धो । ते वि असंखेज्जगुणा देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥१०॥
असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य णाणे य । सागारमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ ११ ॥
केवलणाणुवउत्ता जाणंति सव्वभावगुणभावे । पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीअणंताहिं ॥ १२ ॥
णवि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं णवि य सव्वदेवाणं । जं सिद्धाणं सोक्खं अव्वाबाहं उवगयाणं॥१३॥
जं देवाणं सोक्खं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं । ण य पावइ मुत्तिसुहं णंताहिं वग्गवग्गूहिं ॥ १४ ॥
सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा । सोणंतवग्गभइओ सव्वागासे ण माएज्जा ॥१५॥
जह णाम कोइ मिच्छो णगरगुणे बहुविहे वियाणंतो । ण चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए॥१६॥
इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं । किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ॥१७॥
जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो॥१८॥
इय सव्वकालतित्ता अतुलं निव्वाणमुवगया सिद्धा । सासयमव्वाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता॥१९॥
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगयत्ति य परंपरगयत्ति । उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य॥२०॥
णिच्छिण्णसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का । अव्वाबाहं सुक्खं अणुहोंती सासयं सिद्धा॥२१॥
अतुलसुहसागरगया अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता । सव्वमणागयमद्धं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ २२ ॥

॥ उववाइ उवंगं समत्त ॥

सं भवतु ।

॥ श्री सुखविपाक-सूत्रम् ॥

तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सोहम्मे समोसढे जबू जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी-जइ ण भते! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण दुहविवागाण अयमट्ठे पण्णत्ते सुहविवागाणं भते! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? तते ण से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगार एव वयासी-एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण दस अज्झयणा पण्णत्ता। तजहा-सुबाहू १ भद्दनदी य २, सुजाए य ३, सुवासवे ४। तहेव जिणदासे ५, धणपती य ६ महब्बले ७॥ १॥ भद्दनदी ८ महचदे ९ वरदत्ते १०॥

जइण भते! समणेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भते! अज्झयणस्स सुहविवागाण जाव के अट्ठे पण्णत्ते? तते ण से सुहम्मे अणगारे जबू अणगार एव वयासी-एवं खलु जंबू! तेण कालेण तेणं समएण हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था रिद्धित्थिमियसमिद्धे तस्स ण हत्थिसीसस्स णगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ ण पुप्फकरडए णाम उज्जाणे होत्था सव्वोउय० तत्थण कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था दिव्वे०, तत्थ ण हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू णामं राया होत्था महया० वण्णओ, तस्स ण अदीणसत्तस्स रण्णो धारिणीपामुख देवीसहस्स ओरोहे यावि होत्था। तते ण सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तसि तारिसगमि वासघरसि जाव सीह सुमिणे पासइ जहा मेहस्स जम्मण तहा भाणियव्व। सुबाहुकुमारे जाव अल भोगसमत्थे यावि जाणति, जाणित्ता अम्मापियरो पच पासायवडिंसगसयाइ करावेंति, अब्भुग्गय० भवण एव जहा महाबलस्स रण्णो, णवर पुप्फचूलापामोक्खाण पचण्ह रायवरकण्णय सयाण एगदिवसेण पाणिं गिण्हावेति तहेव पचसइओ दाओ जाव उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइगमत्थएहिं जाव विहरइ। तेण कालेणं तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसढे, परिसा निग्गया, अदीणसत्तू जहा कूणिओ तहेव निग्गओ सुबाहू विजहा जमाली तहा रहेण निग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिसा पडिगया। तए ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति जाव एव वयासी—सद्दहामि ण भते! णिग्गथ पावयण० जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया नो खलु अहण्ण तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए अहण्ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जिस्सामि, अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबध करेह। ततेण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जति पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरूहति जामेव दिस पाउब्भूए तामेवदिस पडिगए। तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई नाम अणगारे जाव एव वयासी—अहो णं भते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कते २ पिए २ मणुण्णे २ मणामे २ सोमे सुभगे पियदसणे

बहुजणस्सवि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ६ साहुजणस्सवि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ जाव सुरूवे । सुबाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमन्नागया ? के वा एस आसी पुव्वभवे ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णगरे होत्था रिद्ध० तत्थ णं हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे० तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा णामं थेरा जातिसंपन्ना जाव पञ्चहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहा पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अन्तेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव लेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरति तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (सुधम्म) थेरे आपुच्छति जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहं अणुपविट्ठे तए णं से सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेति २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति २ त्ता पाउयाओ ओमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति णमंसति २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयहत्थेणं विउलेणं असण पाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे पडिलाभेमाणेवि तुट्ठे पडिलाभिएवि तुट्ठे । तते णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे गेहंसि य से इमाइं पञ्च दिव्वाइं पाउब्भूयाइं तंजहा—

वसुहारा वुट्ठा १ दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए ३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४ अंतरावि य णं आगासंसि अहो दाणमहो दाणं घुट्ठे य ५ । हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४-धण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई सुकयपुण्णे कयलक्खणे सुलद्धे णं मणुस्सजम्मे सुकयरिद्धी य जाव तं धण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई । तते णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने । तते णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ सीहं पासति सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरति तं एवं खलु गोयमा ! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया पभू णं भंते ! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू । तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तते णं से समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ हत्थिसीसाओ णगराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता बहिया जणवय

विहार निहरति । तते ण से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाते अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरेति । तते ण से सुबाहुकुमारे अन्नया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति २ त्ता पोसहसाल पमज्जति २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहति २ त्ता दब्भ संथार संथरेइ २ त्ता दब्भसंथार दुरुहइ २ त्ता अट्ठमभत्त पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसह पडिजागरमाणे विहरति । तए ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पन्ने धण्णा ण ते गामागरणगर जाव सन्निवेसा जत्थ ण समणे भगव महावीरे जाव विहरति, धन्ना ण ते राईसरतलवर० जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडा जाव पव्वयति, धन्ना ण ते राईसरतलवर० जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जति, धन्ना ण ते राईसर जाव जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सुणेति, तं जति ण समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाण गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा जाव विहरज्जा तते ण अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा । ततें णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इम एयारूव अज्झत्थिय जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्वि जाव दूइज्जमाणे जेणेव हत्थि-सीसे णगरे जेणव पुप्फकरडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूव उग्गह उगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति परिसा राया निग्गया । तते ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स त महया जहा पढम तहा निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया । तते ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेहे तहा अम्मापियरो आपुच्छति, णिक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगार जाते ईरियासमिए जाव बभयारी, ततेण से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जति २ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम० तवोविहाणेहिं अप्पाण भावित्ता बहूइ वासाइ सामन्नपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाण झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, से ण ततो देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइ-क्खएण अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति २ त्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति २ त्ता तहारूवाण थेराण अतिए मुडे जाव पव्वइस्सति, से ण तत्थ बहूइ वासाइ सामण्ण परियाग पाउ-णिहिति आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते काल करिहिति सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति, से ण तओ देवलोगाओ माणुस्स पव्वज्जा बभलोए ततो माणुस्सं महासुक्के ततो माणुस्स आणते देवे ततो माणुस्स ततो आरणे देवे ततो माणुस्स सव्वट्ठसिद्धे, से ण ततो अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेह वासे जाव अड्ढाइ जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति ५ जाव एवं खलु जबू ! समणेण जाव संपत्तेण सुहविवागाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते अज्झयण समत्त ॥ १ ॥

बितियस्स ण उक्खेवो—एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण उसभपुरे णगरे थूभकरड

उज्जाणे धन्नो जक्खो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदंसण कहणा जम्मं बालत्तण कलाओ य जुव्वणे पाणिग्गहणं दाओ पासाद० भोगा य जहा सुबाहुस्स, नवरं भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा ण पंचसया सामी समोसरणं सावगधम्मं पुव्वभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुंडरीकिणी णयरी विजयए कुमारे जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने, सेस जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं काहिति ॥ बितिय अज्झयण समत्त ॥ २ ॥

तच्चस्स उक्खेवो—वीरपुर णयर मणोरमं उज्जाणं वीरकण्हे जक्खे मित्ते राया सिरि देवी सुजाए कुमारे बलसिरिपामोक्खा पंचसयकन्ना सामी समोसरणं पुव्वभवपुच्छा उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ॥ तइयं अज्झयण समत्तं ॥ ३ ॥

चोत्थस्स उक्खेवो—विजयपुर णयरं णंदणवण [मणोरम] उज्जाण असोगो जक्खो वासवदत्ते राया कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दापामोक्खा ण पंचसया जाव पुव्वभवे कोसंबी णयरी धणपाले राया वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे । चोत्थ अज्झयण समत्त ॥ ४ ॥

पंचमस्स उक्खेवओ—सोगंधिया णयरी नीलासोए उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ राया सुकण्हा देवी महचंदे कुमारे तस्स अरहदत्ता भारिया जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमणं जिणदासपुव्वभवो मज्झमिया णयरी मेहरहो राया सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥
॥ पंचम अज्झयण समत्त ॥ ५ ॥

छट्ठस्स उक्खेवओ—कणगपुर णयरं सेयासोयं उज्जाणं वीरभद्दो जक्खो पियचंदो राया सुभद्दा देवी वेसमणे कुमारे जुवराया सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं धनवती जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो मणिवया णयरी मित्तो राया संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ छट्ठ अज्झयण समत्त ॥ ६ ॥

सत्तमस्स उक्खेवो—महापुर णयरं रत्तासोग उज्जाण रत्तपाओ जक्खो बले राया सुभद्दा देवी महब्बले कुमारे रत्तवईपामोक्खाओ पंचसयकन्ना पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो मणिपुरं णयरं णागदत्ते गाहावती इन्ददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ सत्तमं अज्झयण समत्त ॥ ७ ॥

अट्ठमस्स उक्खेवो—सुघोस नगरं देवरमणं उज्जाणं वीरसेणो जक्खो अज्जुणो राया तत्तवती देवी भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया जाव पुव्वभवे महाघोसे णयरे धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ अट्ठम अज्झयण समत्त ॥ ८ ॥

णवमस्स उक्खेवो—चंपा णयरी पुण्णभद्दे उज्जाणे पुण्णभद्दो जक्खो दत्ते राया रत्तवई देवी महचंदे कुमारे जुवराया सिरिकन्तापामोक्खा णं पंचसया कन्ना जाव पुव्वभवो तिगिच्छी णयरी

जियमत्तू राया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ नवम अज्झयण समत्त ॥ ९ ॥

जति ण दसमस्स उक्खेवो— एव खलु जबू! तेण कालेण तेण समएण साएय नाम नयर होत्था उत्तरकुरुउज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनदी राया सिरिकता देवी वरदत्ते कुमारे वरसेणापामोक्खा ण पचदेवीसया तित्थयरागमण सावगधम्म पुव्वभवो पुच्छा सत्तदुवारे नगरे विमलवाहणे राया धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए ससारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने सेस जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पव्वज्जा कप्पतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परि निव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंत करेहिति ॥ एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, सेव भते! सेव भते! सुहविवागा ॥ दसम अज्झयण समत्त ॥ १० ॥

नमो सुयदेवाए-विवागसुयस्स दो सुयक्खधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे अज्झयणा दस एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति, एव सुहविवागो वि सेसं जहा आयारस्स ॥ इति एकारसम अंगं समत्त ॥

॥ इअ सुखविपाकसुत्त समत्तम् ॥

॥ सूत्रकृतांगसूत्रे वीरस्तुत्याख्य षष्ठमध्ययनं ॥

पुच्छिस्सु ण समणा माहणा य, अगारिणो या परतित्थिआ य।
से केइ णेगंतहिय धम्माहु, अणेलिस साहु समिक्खयाए ॥ १ ॥
कह च णाण कह दसण से, सील कह नायसुतस्स आसी?।
जाणासि ण भिक्खु जहातहेण, अहासुत बूहि जहा णिसत ॥ २ ॥
खेयन्नए से कुसलापन्ने (ले महेसी) अणतनाणीय अण तदसी।
जससिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्म च धिइ च पेहि ॥ ३ ॥
उड्ढ अहेय तिरिय दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्म समिय उदाहु ॥ ४ ॥
से सव्वदसी अभिभूयनाणी, णिरामगधे धिइम ठितप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगसि विज्ज, गथा अतीते अभए अणाऊ ॥ ५ ॥
से भूइपण्णे अणिएअचारी, ओहतर धीरे अणतचक्खू।
अणुत्तर तप्पति सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तम पगासे ॥ ६ ॥
अणुत्तर धम्ममिण जिणाण, णेया मुणी कासव आसुपन्ने।
इदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेता दिवि ण विसिट्ठे ॥ ७ ॥
से पन्नया अक्खयसागरे वा, महोदही वावि अणतपारे।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्केव देवाहिवई जुईम ॥ ८ ॥

से वीरिएण पडिपुण्णवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।
सुरालए वासिमुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥ ९ ॥
सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते ।
से जोयणे णवणवते सहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥ १० ॥
पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरियट्टयंति ।
से हेमवण्णे बहुनंदणे य, जंसी रतिं वेदयती महिंदा ॥ ११ ॥
से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायती कंचणमट्ठवण्णे ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिए व भोमे ॥ १२ ॥
महीइ मज्झम्मि ठिते णगिंदे, पण्णायते सूरियसुद्धलेसे ।
एवं सिरीए उ स भूरिवण्णे, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥ १३ ॥
सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई महतो पव्वयस्स ।
एतोवमे समणे नायपुत्ते, जातीजसोदंसणनाणसीले ॥ १४ ॥
गिरीवरे वा निसहाऽऽययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं ।
तओवमे से जगभूइपन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥ १५ ॥
अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाई ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएगंतवदातसुक्कं ॥ १६ ॥
अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिं गते साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥ १७ ॥
रुक्खेसु णाते जह सामली वा, जंसि रतिं वेययती सुवण्णा ।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥ १८ ॥
थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥ १९ ॥
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
खोओदए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ॥ २० ॥
हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे, निव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ॥ २१ ॥
जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥
दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥
ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।

निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥ २४ ॥
पुढोवमे धुणइ विगयगेहि, न सण्णिहिं कुव्वति आसुपन्ने ।
तरिउ समुद्दं व महाभवोघ, भयकरे वीर अणतचक्खू ॥ २५ ॥
कोह च माण च तहेव माय, लोभ चउत्थ अज्झत्थदोसा ।
एआणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वई पावण कारवेइ ॥ २६ ॥
किरियाकिरिय वेणइयाणु वाय, अण्णाणियाण पडियच्च ठाण ।
से सव्ववाय इति वेयइत्ता, उवट्ठिए सजमदीहराय ॥ २७ ॥
से वारिया इत्थी सराइभत्त, उवहाणव दुक्खखयट्ठयाए ।
लोग विदित्ता आर पर च, सव्व पभू वारिय सव्ववार ॥ २८ ॥
सोच्चा य धम्म अरहतभासिय, समाहित अट्ठपदोवसुद्ध ।
त सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इदा व देवाहिव आगमिस्सति ॥ २९ ॥

॥ इति श्रीवीरस्तुत्याख्य षष्टमध्ययनम् ॥

॥ मोक्षमार्गनामकं एकादशाध्ययनम् ॥

त मग्ग णुत्तर सुद्ध, सव्वदुक्खविमोक्खण । जाणासि ण जहा भिक्खु, त णो बूहि महामुणी ॥२॥
कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेण मईमता ! ज मग्ग उज्जु पाविता ओह तरति दुत्तर ॥ १ ॥
जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा । तेसिं तु कयर मग्ग, आइक्खेज्ज? कहाहि णो ॥ ३ ॥
जइ वो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा । तेसिम पडिसाहिज्जा, मग्गसार सुणेह मे ॥ ४ ॥
अणुपुव्वेण महाघोर कासवेण पवेइय, । जमादाय इओ पुव्व, समुद्द ववहारिणो ॥ ५ ॥
अतरिंसु तरतेगे, तरिस्सति अणागया । त सोच्चा पडिवक्खामि, जतवो त सुणेह मे ॥ ६ ॥
पुढवीजीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी । वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥ ७ ॥
अहावरा तसा पाणा, एव छकाय आहिया । एतावए जीवकाए, णावरे कोइ विज्जई ॥ ८ ॥
सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मतिम पडिलेहिया । सव्वे अक्कतदुक्खा य, अतो सव्वे न हिंसया ॥ ९ ॥
एय खु णाणिओ सार, ज न हिंसति कचण । अहिंसा समय चेव, एतावत विजाणिया ॥ १० ॥
उड्ढ अहे य तिरिय, जे केइ तसथावरा । सव्वत्थ विरतिं विज्जा, सति निव्वाणमाहिय ॥ ११ ॥
पभू दोसे निराकिच्चा, ण विरुज्झेज्ज केणई । मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अतसो ॥ १२ ॥
सवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसण चरे । एसणासमिए णिच्च, वज्जयते अणेसण ॥ १३ ॥
भूयाइ च समारभ, तमुद्दिसा य ज कड । तारिस तु ण गिण्हेज्जा, अन्नपाण सुसजए ॥ १४ ॥
पूईकम्म न सेविज्जा एस धम्मे वुसीमओ । ज किंचि अभिकखेज्जा, सव्वसो त न कप्पए ॥१५॥
हणत णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जीइदिए । ठाणाइ सति सड्ढीण, गामेसु नगरेसु वा ॥ १६ ॥
तहा गिर समारब्भ, अत्थि पुण्णति णो वए । अहवा णत्थि पुण्णति, एव मेय महब्भय ॥ १७ ॥

देवदाणवगंधब्ब, जक्खरक्खसकिन्नरा । बंभयारिं नमंसंति दुक्करं जे करंति तं ॥ ५ ॥
एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए । सिद्धा सिज्झंति चाणेण, सिज्झिस्संति तहावरे ॥ ६ ॥
(उत्तराध्ययन सूत्रे) षोडशाध्ययन

अरहंत सिद्ध पवयण गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसु । वच्छल्लया य तेसिं अभिक्खणाणणोवओगे य ॥ ७ ॥
दंसण विणए आवस्सए य, सीलव्वए निरइयारं । खणलव तव चियाए, वेयावच्चे समाही य ॥ ८ ॥
अपुव्वणाणगहणे सुयभत्ती, पवयणे पभावणया । एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीओ । ९ ॥
(ज्ञाताधर्मकथासूत्रे)

जिणवयणेअणुरत्ता जिणवयणं जे करंति भावेण । अमलाअसंकिलिट्ठा, तेऊतिंयपरित्तसंसारि ॥ १० ॥
एयखुनाणीणोसारं, जं न हिंसई किंचण । अहिंसमयं चेव, एतावन्त वियाणि य ॥ ११ ॥
जातिं च वुड्ढिं च इह दूपास, भूतेहिं जाणेहिं पडिलेहसायं ।
तम्हातिविज्झोपरमतिणच्चा, सम्मत्तदंसी न करेई पावं ॥ १२ ॥
उम्मुंचपासं इह मच्चिएहिं, आरंभजीवीऊज्झयपयाणुपस्सी ।
कामेसु गिद्धाणिचयंकरंति, संसिंचमाणापुणरेंतिगब्भं ॥ १३ ॥
सावणेनाणेविन्नाणे, पच्चमेक्खाणेयसंजमो । अणण्हएतवेचेव, वोदाणे अकिरियासिद्धि ॥ १४ ॥
एगोहं नत्थि मे कोइ, नाहं मन्नस्स कस्सइ । एवं अदीणमणस्सा, अप्पाणमणु सासइ ॥ १५ ॥
एगोमे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ । सेसामे बाहिरा भावा, सव्व संजोग लक्खणा ॥ १६ ॥
जीविओ नाभिगच्छेज्जा मरणं नो विपत्थए । दुहउ विनइउेज्जा, जीविओ मरणं तहा ॥ १७ ॥
सारं दमणं नाणं, सारं तवं नियमं संजमंसील । सारं जिण वर धम्मं, सारंसंलेहणापंडियमरणं ॥ १८ ॥
कल्लाणकोडिजणणी, दुगइदुहनिठवणी, संसारजलतारणी, एगंतहोइजीवदया ॥ १९ ॥
आरंभे नत्थि दया, महिलासंगेननासएबंभं । संकाएनासइसम्मत्तं, पव्वज्जाअत्थगहणं च ॥ २० ॥
मज्जविसयकसाय, निंद्दाविकहायपंचमाभणिया । ए ए पंचप्पमाया, जीवापडंतिसंसारे ॥ २१ ॥
लभंति विमलाभोए, लभंति सुरसंपया । लभंति पुत्तमित्तं च । एगोधम्मो न लब्भई ॥ २२ ॥
नविसुहीदेवतादेवलोए, नविसुहीपुढवीपइराया । नविसुहीसेठिसेणावइय, एगंतसुहीमुणीवीयरागी ॥ २३ ॥
नगरी सोहंति जलमूलवागे, नारीसोहंतिपरपुरुषत्यागे ।
राजसोहंत सभा पुराणी, साधुसोहंता अमृतवाणी ॥ २४ ॥
चलतिमेरुचलतिमंदिर, चलतितारारविचंद्रमंडल ।
कदापि काले पृथ्वी चलति, साहपुरुषवाक्यो न चलति धर्मे । २५ ॥
अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि-र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ।
भामंडलं दुंदुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणिजिनेश्वराणां ॥ २६ ॥
रूप अनोपम तुल्य न कोई, वाणीसुणताश्रवणसुखहोई ।
देहसुगंधी हरे पुष्पग्राम, चउमठइन्द्रकरे प्रभु प्रणाम ॥ २७ ॥
चउदपूरवधारकहियें, नानाभागरमाणीयें । जिननहि पण जिनसरिखा, श्रीसुधर्मस्वामी जाणीए ॥ २८ ॥
रूप अनोपम वखाणीए, देवताने वल्लभ लागे । एहवा श्रीजंबूस्वामी जाणीने, भावीए मन भावथी ॥ २९ ॥

अध्य	पृष्ट	गाथांक	अशुद्ध	शुद्ध
१४	६३	१७	अप्पस्थाण	अप्पमत्थाण
१४	६३	१६	लेलाण	लेमाण
१४	६४	४७	नायब्वाक	नायव्वामुक
१४	६४	४६	परिमण्डला	परिमडला
१४	६६	२२	भट्टण	मट्टण
१६	६७	३६	मसेवना	दुसचेरमा
१६	७१	१६५	निगवयण	निगन्थयणजे
६	८६	१६	मेभायग	मेभायमण
७	९०	७३	तहे	तहेव
८	९१	१७	अहेव	तहेव
८	९१	२७	महाकम	महानल
८	९२	३५	अमप्पणो	गमप्पणो
८	९२	४१	मजम्मि	मनमम्मि
८	९३	७	आयरिआया	आयरियपाया
८	९३	९	गुरहीलसाण	गुरहीगाण
९	९६	२२टीटी	सुभदाहिण	सुहमसाहिण
९	९६	३१	सुद्दानइ	सुगानइ

दशवैकालिक शुद्धिपत्रकम्

३	७६	८	सिघवे	सिंधवे
४	७६	८टीटी	धाऊ	तेऊ
४	७८	१ ,,	परिग्गह	परिगिण्हाविज्जा
४	७८	२३,,	वा,	वा,उद्दलनाकाय
४	७९	१९,,	समणुजामि	समणुजाणिज्जा
४	७९	२५,,	वा,	वा, सन्नमिया
४	७९	१९,,	हिंलइ	हिंसइ
५	८३	१२,,	कोलघुसाइ	कोलचुसाइ
५	८५	७ ,,	अपुगम्मि	अमुच्छिणो
६	८६	२	रायाओ	रायाणो

नन्दीसूत्र शुद्धिपत्रकम्

१०१	७	गुण	उत्तमगुण
१०२	३२	जेहिं	रक्खिओजेहिं
१०२	४०	नाज्जुण	नागज्जुण
१११	१ टीटी	अंगगइदसाओर	अणगइदसाओ
११२	२९ ,,	अणु ओगदारा	अणु ओगदारा
११४	७ ,	सग	सविज्जाओगग
११६	२ ,	से	उवइमसिज्जसिरे
११८	५७ गाथा	खत्त	खेत्ताग